महाविद्यालय के पांच वर्षों का अभिनन्दन, प्रथम वार्षिक पत्रिका संयुक्तांक 2021-2026

बनास

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय

बनास, पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल), उत्तराखण्ड-246123

पैठाणी के निकटवर्ती प्रसिद्ध मन्दिर

राहु मन्दिर

अर्धनारेश्वर मंदिर माजरा महादेव

भैरवखाल मन्दिर

बूंखाँल कालिंका माता मन्दिर

कुलगीत

हिमालय की गोद में बसा, जहाँ ज्ञान की ज्योति जलती है।
गूँजे वेदों की दिव्य ध्वनि, जहाँ छात्र आत्मसात करते है।
उस पुण्य भूमि में गर्व हमारा, शिक्षा का मंदिर पावन है।
व्यवसायिक शिक्षा का यह संस्थान, बनास पैठाणी का सावन है।

राष्ट्रकूट गिरि की छाया में, यह विद्याभूमि सुवासित।
ज्ञान-ज्योति से आलोकित, हर दिन नवस्वप्न प्रसारित ।
रथवाहिनी की हुँकार यहाँ, नवलिका की शांति समाई।
शीतल पवन और सुरम्य दृश्य, जैसे प्रकृति ने छवि बनाई।

इस विद्यावन में पल्लवित, ज्ञान-पुण्य सुगंधित है।
पंछियों की कलरव ध्वनि से, हर सुबह अभिसिंचित है।
संस्कृतियों का मेल यहाँ, एकता की है यह पहचान।
बनास की धरती पर रचता, नव भारत का यह अरमान।

गणित, विज्ञान और तकनीक, प्रशासन का गूढ़ प्रसार।
शिक्षा का विस्तृत पथ बना है, हर दिन होता नव संचार।
माँ सरस्वती की कृपा जहाँ, वहाँ ज्ञान वर्षा हर पल।
अनुशासन में जीवन ढलता, बनते हैं आभास सकल।

प्रेम, शांति, सद्भाव जहाँ, नीति नैतिकता की पहचान।
कर्तव्य, और समर्पण का पथ बने, यहाँ का प्रथम विधान।
संस्कारों की छाँव तले, यह गौरवशाली संस्थान।
करता है पूर्ण विद्यार्थियों को, यह है शिक्षा का महान स्थान।

डॉ० उर्वशी एवं डॉ० प्रकाश चन्द्र फोन्दणी

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय

बनास, पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल), उत्तराखण्ड

बनास

प्राचार्य एवं संरक्षक
प्रो० (डॉ०) विजय कुमार अग्रवाल

मुख्य सम्पादक
डॉ० प्रकाश चन्द्र फोन्दणी

कॉपी राइट नोट

"बनास" पत्रिका में प्रकाशित समस्त लेख इत्यादि लेखकों/रचनाकारों/संग्रहकर्ताओं के निजी विचार/आप्त वाक्य एवं बोधन हैं। इसमें किसी भी दावे के लिए महाविद्यालय प्राचार्य एवं पत्रिका सम्पादक मण्डल उत्तरदायी नहीं होगा। सम्बन्धित दावे के निवारणार्थ प्रकाशित लेखों इत्यादि के लेखक/रचनाकार एवं संग्रहकर्ता स्वयं उत्तरदायी होंगे। पत्रिका प्रकाशन में यथासंभव सावधानी के बावजूद यदि वर्तनी शुद्धिकरण में कोई त्रुटि रह गयी हो तो संपादक मण्डल हमेशा के लिए क्षमाप्रार्थी हैं।

सम्पादक मण्डल

प्राचार्य एवं संरक्षक
प्रो० (डॉ०) विजय कुमार अग्रवाल

मुख्य सम्पादक
डॉ० प्रकाश चन्द्र फोन्दणी

सह-सम्पादक
डॉ०उर्वशी

सदस्य

डॉ०कल्पना रावत

डॉ० आलोक सिंह कण्डारी

श्री अनूप सिंह

श्री राहुल रावत

मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

पुष्कर सिंह धामी
माननीय मुख्यमंत्री
उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड सचिवालय
देहरादून - 248001
फोन : 0135-2650433
फैक्स : 0135-2712827
कैम्प कार्यालय
फोन : 0135-2750033
0135-2750344
फैक्स : 0135-2752144

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी, जिला पौड़ी गढ़वाल द्वारा अपनी प्रथम वार्षिक पत्रिका 'बनास' का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय द्वारा छात्र-छात्राओं को उच्च शिक्षा का बेहतर वातावरण उपलब्ध कराने के साथ ही सामाजिक सरोकारों से भी जोड़ा जाना छात्रों के व्यापक हित में है। इस प्रकार की पत्रिकाओं के निरन्तर प्रकाशन से छात्र-छात्राओं को अपनी रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का भी एक मंच प्राप्त होता है। शिक्षा एक ऐसी अमूल्य निधि है जिसको प्राप्त किये बगैर मानव जीवन अपूर्ण है तथा इसका मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के व्यक्तित्व का विकास करना है।

मुझे आशा है कि महाविद्यालय की पत्रिका रचनाशील विद्यार्थियों तथा कर्मठ प्राध्यापकों की मौलिक प्रतिभा, उनके दृष्टिकोण, भावनाओं एवं विचारों से ओतप्रोत होगी। मुझे पूरा विश्वास है कि उक्त पत्रिका में प्रकाशित लेख छात्र-छात्राओं के साथ सभी पाठकों के लिए अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं प्रथम वार्षिक पत्रिका 'बनास' के सफल प्रकाशन हेतु राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी, जिला पौड़ी गढ़वाल के समस्त महाविद्यालय परिवार को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं देता हूँ।

पुष्कर सिंह धामी

योगी आदित्यनाथ
माननीय मुख्यमंत्री
उत्तर प्रदेश

मुख्य मंत्री
उत्तर प्रदेश

पत्र संख्या 218/पी.एस.-सी.एम./2025
लोक भवन,
लखनऊ - 226001
दिनांक : 31 जुलाई 2025

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है कि राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल) उत्तराखण्ड द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'बनास' का प्रकाशन किया जा रहा है।

शिक्षण संस्थाओं की पत्रिकाएं विद्यार्थियों को अपने विचार प्रस्तुत करने के लिए सार्थक मंच उपलब्ध कराती है। इन पत्रिकाओं में संस्थान की शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों के साथ-साथ संस्थान की उपलब्धियों का समावेश किया जाता है। इसके दृष्टिगत महाविद्यालय द्वारा पत्रिका का प्रकाशन सराहनीय है। मुझे आशा है कि यह पत्रिका विद्यार्थियों में सृजनशीलता तथा सुरूचिपूर्ण रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में उपयोगी सिद्ध होगी।

वार्षिक पत्रिका बनास के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

योगी आदित्यनाथ

उत्तराखण्ड सरकार

डॉ. धन सिंह रावत
मंत्री
चिकित्सा स्वास्थ्य, चिकित्सा शिक्षा
सहकारिता, उच्च शिक्षा, संस्कृत शिक्षा,
विद्यालयी शिक्षा

विधान सभा भवन
कक्ष सं. : 20
फोन : 0135-2666410(का.)
फैक्स : 0135-2666411

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय 'बनास', पैठाणी, जिला पौड़ी गढ़वाल द्वारा अपनी प्रथम वार्षिक पत्रिका बनास का प्रकाशन किया जा रहा है।

यह पत्रिका छात्र-छात्राओं की अभिव्यक्ति का न केवल माध्यम है, अपितु विचारों की दशा के साथ क्षेत्रीय संस्कृति, सांस्कृतिक व नैतिक मूल्य एवं प्राकृतिक सौन्दर्य तथा परोक्ष प्रतिबिम्ब भी है।

मुझे पूरा विश्वास है कि 'बनास' पत्रिका में ऐसी महत्वपूर्ण एवं रोचक पाठ्य-सामग्री का प्रकाशन किया जायेगा, जिससे छात्र-छात्राओं के जीवन दर्शन कार्य, संस्कृति, बौद्धिक विकास और अध्ययन में रूचि होगी।

अतः मैं महाविद्यालय की प्रथम वार्षिक पत्रिका 'बनास' के सफल प्रकाशन हेतु सम्पादक मण्डल को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ।

डॉ० धन सिंह रावत

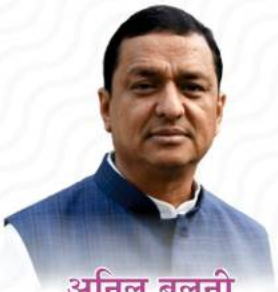

अनिल बलूनी
सदस्य संसद
गढ़वाल लोकसभा

7-सफदरगंज लेन नई दिल्ली
फोन : 011-23019557
Email : anil.baluni@sansad.nic.in

शुभ सन्देश

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय, बनास, (पैठाणी) द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'बनास' के विमोचन पर महाविद्यालय परिवार, सम्पादकीय परिवार, सम्पादकीय टीम एवं सभी छात्र-छात्राओं का हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

यह पत्रिका न केवल महाविद्यालय के शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं सृजनात्मक गतिविधियों का दर्पण है बल्कि यह विद्यार्थियों की प्रतिभा, परिश्रम और विचारों की अभिव्यक्ति का सशक्त मंच भी है।

मुझे विश्वास है कि 'बनास' पत्रिका शिक्षण जगत में अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित करेगी और छात्रों को ज्ञान, रचनात्मकता एवं नवाचार के प्रति प्रेरित करती रहेगी।

महाविद्यालय परिवार को इस सार्थक प्रयास के लिए शुभकामनाएं और उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएं।

अनिल बलूनी

ऋतु खण्डूडी भूषण
अध्यक्ष
विधान सभा, उत्तराखण्ड

सत्यमेव जयते

विधान सभा भवन, देहरादून
फोन : 0135-2665885 (का.)
फैक्स : 0135-2666788
फोन : 0135-2530907 (आ.)
फैक्स : 0135-2530908

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि 'राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय' बनास, पैठाणी, जिला पौड़ी गढ़वाल द्वारा वार्षिक पत्रिका के प्रथम संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुझे आशा है कि पत्रिका के माध्यम से एक ओर जहाँ विद्यार्थियों व पाठकों को विभिन्न विषयों के साथ-साथ महत्वपूर्ण, ज्ञानवर्धक जानकारियाँ प्राप्त होंगी, वहीं दूसरी ओर इस प्रथम अंक में व्यावसायिक गतिविधियों को लेकर आधुनिक उद्यमों से सम्बन्धित जानकारियों का भी समावेश होगा।

'राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय' के समस्त स्टाफ व विद्यार्थियों को बधाई देते हुए बनास पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिये अपनी शुभकामनाएं प्रेषित करती हूँ।

ऋतु खण्डूड़ी भूषण

उत्तराखण्ड शासन

डॉ० रंजीत कुमार सिन्हा
आई.ए.एस.
सचिव

तकनीकी शिक्षा एवं उच्च शिक्षा
उत्तराखण्ड शासन
04, सुभाष मार्ग, देहरादून
टेलीफोन : 0135-2659850
ईमेल-ranjitsinha@gmail.com

शुभ सन्देश

अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल) अपनी वार्षिक पत्रिका 'बनास' का प्रकाशन महाविद्यालय के अकादमिक और सृजनशील गौरव का प्रतीक है। यह केवल एक पत्रिका नहीं, अपितु विद्यार्थियों की बौद्धिक उड़ान और उनके विचारों की संजीवनी है, जो कल्पनाओं को शब्दों में ढालने का अनुपम अवसर प्रदान करेगी।

किसी भी शैक्षणिक संस्थान की पत्रिका उसकी आत्मा होती है, जहाँ उसकी शैक्षिक उत्कृष्टता, सांस्कृतिक गतिविधियों और बौद्धिक परम्पराएं उजागर होती है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि 'बनास' विद्यार्थियों के लिए एक ऐसा सशक्त माध्यम बनेगी जो उनके विचारों, अनुभवों एवं रचनात्मकता को उभारने का कार्य करेगी।

मैं 'बनास' पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु समस्त महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ और आशा करता हूँ कि यह पत्रिका ज्ञान, प्रेरणा एवं नवाचार का उज्ज्वल आलोक बनकर विद्यार्थियों के भविष्य को आलोकित करेगी।

डॉ० रंजीत कुमार सिन्हा

मंगेश घिल्डियाल
आई.ए.एस.

सत्यमेव जयते

जुलाई 29, 2025

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी, जिला पौड़ी गढ़वाल द्वारा प्रथम वार्षिक पत्रिका बनास का प्रकाशन किया जा रहा है, जो नवस्थापित महाविद्यालय के सम्पादन मण्डल का निःसन्देह सराहनीय प्रयास है।

आशा है कि यह पत्रिका महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं के शैक्षिक ज्ञानवर्धन हेतु सहायक सिद्ध होगी।

मैं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार को बनास पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई देता हूँ।

मंगेश घिल्डियाल

उत्तराखण्ड शासन

विनय शंकर पाण्डेय
आई.ए.एस.

आयुक्त
गढ़वाल मण्डल
अ० शा० पत्रांक 4671/मु० वै० अ०/2025
दिनांक : 24 जुलाई 2025

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि उत्तराखण्ड राज्य के दूरस्थ अंचल में स्थित प्रदेश के प्रथम नव स्थापित "राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी" जिला पौड़ी गढ़वाल द्वारा प्रथम वार्षिक पत्रिका "बनास" का प्रकाशन किया जा रहा है। इस पत्रिका में राजकीय व्यावसायिक संगठन द्वारा शिक्षित युवाओं एवं छात्रों को रोजगारपरक शिक्षा प्रदान करने तथा स्व-रोजगार हेतु प्रशिक्षण प्रदान किये जाने का प्रयास किया जा रहा है।

मैं आशा करता हूँ कि उक्त संगठन के माध्यम से जनपद के अधिक से अधिक शिक्षित युवाओं को स्व-रोजगार प्रदान किये जाने के दृष्टिगत विभिन्न व्यवसायों हेतु प्रशिक्षित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगा, जिससे बेरोजगार युवा स्वयं का रोजगार स्थापित कर अपनी आजीविका संवर्द्धन में वृद्धि कर स्वयं तथा देश के विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

अतः मैं 'राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी' की पत्रिका 'बनास' के सफल प्रकाशन हेतु महाविद्यालय संगठन को शुभकामनाएँ देता हूँ।

विनय शंकर पाण्डेय

उत्तराखण्ड शासन

स्वाति एस. भदौरिया
आई.ए.एस.
जिलाधिकारी, गढ़वाल

कार्यालय दूरभाष नं०-01368-222250
आवास दूरभाष नं०- 01368-222202
फैक्स नं०-01368-222811
ईमेल-dmgarhwal@gmail.com
आ०शा० पत्र संख्या - दि० 04/09/2025

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है कि राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी जिला-पौड़ी गढ़वाल द्वारा प्रथम वार्षिक पत्रिका "बनास" का प्रकाशन किया जा रहा है, जो नवस्थापित महाविद्यालय के सम्पादक मण्डल का निःसन्देह सराहनीय प्रयास है।

आशा करती हूँ कि उक्त पत्रिका में संस्थान की शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों के साथ-साथ संस्थान की उपलब्धियों एवं स्वरोजगार से सम्बन्धित महत्वपूर्ण जानकारियों का समावेश होगा व छात्र-छात्राओं में सृजनशीलता तथा सुरूचिपूर्ण रचनात्मक प्रतिभा को विकसित करने में उपयोगी सिद्ध होगी।

अतः मैं सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार विशेषकर सम्पादक मण्डल को 'बनास' पत्रिका के उद्देश्यपरक प्रकाशन हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देती हूँ।

स्वाति एस. भदौरिया

उत्तराखण्ड शासन

प्रो०वी०एन० खाली
निदेशक (उच्च शिक्षा)

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड
हल्द्वानी -263139 (नैनीताल)
ईमेल-highereducation.director@gmail.com

शुभ सन्देश

महोदय, अत्यन्त हर्ष का विषय है कि राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी, जिला-पौड़ी गढ़वाल द्वारा अपनी प्रथम वार्षिक पत्रिका 'बनास' का प्रकाशन करने जा रहा है।

मुझे आशा है कि वार्षिक पत्रिका में ऐसे महत्वपूर्ण ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित पाठ्य सामग्री प्रकाशित की जाएगी जिससे छात्रों का सही मार्गदर्शन होगा और उनके जीवन-दर्शन, कार्य संस्कृति और अध्ययन रूचि में आवश्यक रचनात्मक बदलाव आएगा। छात्र-छात्राओं को अपने विचारों की अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त होगा एवं उनके व्यक्तित्व विकास में सहायता मिलेगी।

'बनास' पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, सम्पादक मण्डल, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं को हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूँ।

प्रो० वी०एन० खाली

उत्तराखण्ड शासन

डॉ० आनन्द सिंह उनियाल
संयुक्त निदेशक (उच्च शिक्षा)

उच्च शिक्षा निदेशालय, उत्तराखण्ड
क्षेत्रीय कार्यालय, दून विश्वविद्यालय परिसर,
फैकल्टी लॉज, देहरादून - 248001
संयुक्त निदेशक, उच्च शिक्षा
ईमेल-jdhedehradun@gmail.com

शुभ सन्देश

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल अपनी प्रथम वार्षिक पत्रिका 'बनास' को प्रकाशित करने जा रहा है।

पत्रिका महाविद्यालय में संचालित विभिन्न शैक्षणिक एवं शिक्षणेत्तर गतिविधियों का एक महत्वपूर्ण दर्पण होती है, जो अध्ययनरत विद्यार्थियों को उनमें अन्तर्निहित मौलिक सृजनात्मक प्रतिभा के विकास एवं अभिव्यक्ति कर सुलभ अवसर प्रदान करती है। रचनाशीलता का विकास उच्च शिक्षण संस्थान का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य होता है। 'बनास' इस लक्ष्य की प्राप्ति का सशक्त माध्यम होगी। शिक्षकों के आलेख एवं रचनाएं सृजनात्मक प्रतिभागिता को प्रतिबिम्बित करती है, जो उच्च शिक्षण संस्थानों को ज्ञान, समाज के निर्माण के गन्तव्य की ओर अभिमुखीकृत करती है। वस्तुतः वार्षिक पत्रिकाओं के माध्यम से चिन्तन, मनन, सृजन एवं नवाचार की श्रृंखला उदित अभिपुष्ट एवं परिवर्तित होती है।

इस पत्रिका के प्रकाशन हेतु राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल को शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ तथा भविष्य में भी इस प्रकार के कार्यों के लिए आशीर्वचन प्रदान करता हूँ।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित।

डॉ० आनन्द सिंह उनियाल

श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय बादशाहीथौल
टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

प्रो० एन.के. जोशी
कुलपति

मो० 9520871191
वेबसाइट-vww.sdsuv.ac.in
ईमेल-vc@sdsuv.ac.in

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल) द्वारा अपने महाविद्यालय की प्रथम वार्षिक पत्रिका "बनास" का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका निश्चित रूप से महाविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों की रचनात्मक, अकादमिक उपलब्धियों और विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने का एक उत्कृष्ट मंच बनेगी। ऐसी पत्रिकाएँ न केवल हमारे विद्यार्थियों की लेखन क्षमता और उसकी गौरवशाली परम्परा का भी दर्पण होती है। मुझे विश्वास है कि इस अंक में संकलित सामग्री ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक होगी, जो पाठकों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन उच्च शिक्षा की विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने, छात्र-छात्राओं तथा शिक्षा जगत के क्षेत्र में बेहतर संवाद कायम करने में महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं, राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल) द्वारा प्रकाशित की जाने वाली प्रथम वार्षिक पत्रिका 'बनास' की भव्यता एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ज्ञापित करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित!

प्रो० एन०के० जोशी

श्री देव सुमन उत्तराखण्ड विश्वविद्यालय बादशाहीथौल
टिहरी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

प्रो० (डॉ०) दिनेश चन्द्रा
कुलसचिव

वेबसाइट-vww.sdsuv.ac.in
ईमेल-registrar@sdsuv.ac.in

शुभ सन्देश

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल) द्वारा अपने महार्विद्यालय की प्रथम वार्षिक पत्रिका "बनास" का प्रकाशन किया जा रहा है।

महाविद्यालय द्वारा प्रकाशित की जाने वाली पत्रिका निश्चित रूप से महाविद्यालय के छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों की रचनात्मक, अकादमिक उपलब्धियों और विभिन्न गतिविधियों को प्रदर्शित करने का एक उत्कृष्ट मंच बनेगी। ऐसी पत्रिकाएँ न केवल हमारे विद्यार्थियों की लेखन क्षमता और उसकी गौरवशाली परम्परा का भी दर्पण होती है। मुझे विश्वास है कि इस अंक में संकलित सामग्री ज्ञानवर्धक एवं प्रेरणादायक होगी, जो पाठकों को सकारात्मक रूप से प्रभावित करेगी। मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन उच्च शिक्षा की विभिन्न गतिविधियों को प्रर्दशित करने, छात्र-छात्राओं तथा शिक्षा जगत के क्षेत्र में बेहतर संवाद कायम करने में महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सिद्ध होगी।

मैं, राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल) द्वारा प्रकाशित की जाने वाली प्रथम वार्षिक पत्रिका 'बनास' की भव्यता एवं सफल प्रकाशन हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ ज्ञापित करता हूँ।

मंगलकामनाओं सहित!

प्रो० (डॉ०) दिनेश चन्द्रा

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय, बनास, पैठाणी
जिला-पौड़ी गढ़वाल

प्रो० (डॉ०) विजय कुमार अग्रवाल
प्राचार्य

शुभाशय

समस्त महाविद्यालय परिवार के लिए यह अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हमारे नवस्थापित महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका 'बनास' का प्रथम अंक प्रकाशित किया जा रहा है। हम कह सकते है कि किसी भी संस्था की पत्रिका उसका दर्पण होती है। इसलिए यह पत्रिका इस महाविद्यालय की बौद्धिक प्रगति की दिशा एवं दशा को प्रतिबिम्बित करते हुए उच्चशिक्षा को स्थापित करने तथा विद्यार्थियों में सृजनशीलता के विकास एवं अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करेगी।

मैं इस पत्रिका के माध्यम से यह भी संदेश देना चाहता हूँ कि महाविद्यालयों को मात्र डिग्री देने वाली संस्था न होकर सुयोग्य एवं सद्चरित्र नागरिकों की पौधशाला होना चाहिए। शिक्षा केवल नौकरी देने के लिए ही नहीं अपितु सामाजिक उत्थान के लिए भी परम आवश्यक है। शिक्षा का तात्पर्य उस ज्ञान से है जो व्यक्ति की संकल्प शक्ति को विकसित कर उसमें अन्तर्निहित शक्तियों से उसका परिचय कराती है।

माँ सरस्वती के इस पावन मन्दिर की 'बनास पत्रिका' के प्रथम अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं अपने महाविद्यालय के विद्वान संपादक मण्डल, समस्त प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं के सत्प्रयासों की हृदय से प्रशंसा करता हूँ।

नवीन कलेवर से युक्त इस 'बनास पत्रिका' को प्रकाशन के सोपान तक पहुँचाकर मुझे एक आत्मिक प्रसन्नता की अनुभूति महसूस हो रही है।मैं महाविद्यालय के चतुर्दिक् विकास की कामना करता हूँ।

सम्पूर्ण महाविद्यालय परिवार को हार्दिक शुभकामनाएँ।

Vk Agrawal

प्रो० (डॉ०) विजय कुमार अग्रवाल

मुख्य सम्पादक
की कलम से ....

हिमालय की सुरम्य गोद में अवस्थित प्रदेश का पहला राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास-पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल की प्रथम साहित्यिक पत्रिका 'बनास' की प्रकाशित नवीनतम प्रति विद्वान पाठकों को सप्रेम भेट करते हुए मुझे अपार प्रसन्नता महसूस हो रही है। आशा है कि हमारे भगीरथ प्रयास से प्रकाशित यह पत्रिका सभी पाठको विशेषकर छात्र-छात्राओं एवं समाज के लिए उचित प्रेरणास्रोत बन पाएगी। मुझे अत्यन्त हर्ष है कि हमारे विद्यार्थी पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त शिक्षणेत्तर क्रिया कलापों में भी अपनी भागीदारी सुनिश्चित कर रहे है।

पत्रिका का नामकरण करते समय मन में यह विचार आ रहा था कि बनास गांव के जिन दानवीरों ने अपनी पैतृक जमीन दान देकर महाविद्यालय की स्थापना में अपना बहुमूल्य योगदान दिया है। समाज बनास पत्रिका के माध्यम से हमेशा उनका स्मरण करता रहेगा, तथा दूसरी तरफ यह महाविद्यालय चीड़ के वनों के मध्य में बनास नामक स्थान पर स्थित है, जिसका शाब्दिक अर्थ होता है वन की आशा, यह दो शब्दों से मिलकर बना है बन का अर्थ वन और आस का अर्थ आशा अर्थात बनास पत्रिका वन की आस का, उमंग का, उत्साह का, हर्ष और उल्लास का तथा ऊर्जा के उन्नयन का प्रतीक है। महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका के लिए 'बनास' एक उत्कृष्ट, सांस्कृतिक और साहित्यिक नाम है, जो सरस्वती की धारा, ज्ञान के प्रवाह और स्थानीय पहचान को दर्शाता है।

मुझे विश्वास है 'बनास पत्रिका' का यह प्रथम संस्करण छात्र-छात्राओं को रचनात्मकता की और प्रेरित करेगा क्योंकि महाविद्यालय की पत्रिका विद्यार्थियों के लिए अभिव्यक्ति का एक ऐसा माध्यम है जो उनकी सृजनशीलता के अंकुर का पल्लवन करती है। इसलिए इस पत्रिका में स्वरचित कविता, लेख अथवा अन्य विधाओं के रूप में अपने विचारो को प्रेषित करने वाले सम्मानित प्राध्यापकों, शिक्षणेत्तर कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं का मैं हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ। यह पत्रिका न केवल साहित्य और संस्कृति को नयी उर्जा देगी, बल्कि यह युवा लेखकों को अपनी रचनाओं के माध्यम से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का अवसर भी प्रदान करेगी। पत्रिका के प्रथम प्रकाशन में महाविद्यालय के विद्वान, ऊर्जावान एवं लगनशील सम्मानित प्राचार्य एवं संरक्षक प्रो0 (डॉ0) विजय कुमार अग्रवाल जी के मार्गदर्शन, प्रेरणा एवं प्रोत्साहन का सम्पादक मण्डल हमेशा के लिए हृदय से आभारी है। मैं सम्पादक मण्डल के सदस्यों का भी आभार व्यक्त करता हूँ, जिनके सहयोग से पत्रिका का सफल प्रकाशन हुआ है। बनास पत्रिका समस्त जनप्रतिनिधियों, नीति निर्माताओं एवं स्थानीय जन समुदाय को समर्पित है जो इस नवोदित महाविद्यालय की विकास प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भागीदार है। अन्त में मैं अपने हृदय की गहराइयों से धन्यवाद करना चाहूँगा अत्रिज ऑफसेट प्रेस श्रीनगर गढ़वाल के प्रबंधक श्री धनेश उनियाल जी एवं रूचि कोटियाल का, जिन्होने पत्रिका को आकर्षक रूप में प्रस्तुत करने का कार्य किया।

महाविद्यालय निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, इस शुभकामना के साथ आपके स्नेहिल प्रोत्साहन का अभिलाषी।

साहित्य साधनम् एकमेव ध्येयम्
(साहित्य का साधन ही एकमात्र लक्ष्य है)

डॉ० प्रकाश चन्द्र फोन्दणी
मुख्य सम्पादक

महाविद्यालय का प्राध्यापक वर्ग प्राचार्य के साथ

बाऐं से दायें

डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोन्दणी, डॉ0 सतवीर, डॉ0 खिलाप सिंह, डॉ0 कुमार गौरव जैन, प्रो0 (डॉ0) विजय कुमार अग्रवाल (प्राचार्य), डॉ0 पुनीत चन्द्र वर्मा, डॉ0 दिनेश रावत, डॉ0 कल्पना रावत, डॉ0 उर्वशी, डॉ0 आलोक सिंह कण्डारी

महाविद्यालय के शिक्षणेत्तर कर्मचारी वर्ग प्राचार्य के साथ

प्रथम पंक्ति (बाऐं से दायें) बैठे हुए

श्री सतीश सिंह, श्री गांधी सिंह, श्री प्रवीन सिंह, श्री अनूप सिंह, श्री पल्लव नैथानी, प्रो0 (डॉ0) विजय कुमार अग्रवाल (प्राचार्य), श्री राहुल रावत, श्री आशीष कश्यप, श्री नीरज कुमार, श्री भाष्करानन्द मिश्रा, श्री भूपेन्द्र कुमार

द्वितीय पंक्ति (बाऐं से दायें)

श्री प्रदीप सिंह, अर्चना, श्रीमती सीमा, श्रीमती ट्विंकल, श्रीमती मीना, श्री मनवर सिंह, श्री जसपाल, श्री विरेन्द्र, श्री भोपाल सिंह

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक/रचयिता	पृष्ठ सं.
1.	राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास - एक परिचय	डॉ० प्रकाश चन्द्र फोन्दणी	1-5
2.	रिजल्ट	खुशबू भट्ट	6
3.	सैनिक	अंजली भट्ट	6
4.	राहु मन्दिर पैठाणी	नैना	6
5.	इंसान	नैना	7
6.	हमारा पहाड़ों मा आपदा की पीड़ा	निकिता राणा	7
7.	आवाज हर बेटी की	संजना कण्डारी	8
8.	पहाड़ ह्वेगे वीरान	रितिका	8
9.	9 नई टेक्नोलॉजी जो दुनिया बदल देगी	डॉ0 पुनीत चन्द्र वर्मा	9-10
10.	महामारी या महासन्देश	डॉ0 आलोक सिंह कण्डारी	11
11.	डिजिटल युग में सोशल मीडिया : अवसरों का सेतु या चुनौतियों का जाल?	डॉ० सतवीर	11-12
12.	स्वस्थ एवं निरोगी जीवन जीने की कला का नाम है योग	श्री भाष्करानन्द मिश्रा	13-15
13.	प्रबंधन शिक्षा का बढ़ता महत्व	डॉ० दिनेश रावत	15
14.	गणित : जीवन का मौन संगीत	डॉ० खिलाप सिंह	16
15.	आयुर्वेद की पारम्परिक चिकित्सा पद्धति	डॉ० प्रकाश चन्द्र फोन्दणी	16-18
16.	मैं कौन हूँ-एक तर्क	डॉ० आलोक सिंह कण्डारी	18-19
17.	मैं पुस्तकालय हूँ	अनूप सिंह	20
18.	उत्तराखण्ड में बंजर होती कृषि भूमि एक विकराल समस्या	साहिल गोदियाल	21-22
19.	उत्तर भारत का प्रसिद्ध राहु इंद्रेश्वर मन्दिर	अंजली भट्ट	22
20.	मेरा उत्तराखण्ड	कंचन	23
21.	दूधातोली पर्वत	खुशबू भट्ट	24
22.	आज भी कल सा ही है	देवेश पंत	24
23.	माँ बूंखाँल कालिंका मन्दिर	अनूप रावत	25
24.	नशा	देवेश पंत	26
25.	उत्तराखण्ड की संस्कृति का केन्द्र है राठ क्षेत्र	रितिका	26-27
26.	हिमालय की सुरम्य गोद में बसा एक सुन्दर शहर पौड़ी	सागर सिंह	27-28
27.	जिन्दगी : एक अनमोल यात्रा	मनीषा नौटियाल	29
28.	आदर्श शिक्षक	सुमित नेगी	30
29.	पौष्टिक अनाज : मिलेट्स	तनीषा	31
30.	मेरा पहाड़:संघर्ष की धरती और सुकून की वादियाँ	तनीषा	32
31.	Say no to Alcohol	Sumit Negi	33
32.	Drugs and Medicine	Dr. Kumar Gaurav Jain	33

VISION

Our vision is to emerge as a leading government institution of higher education in Uttarakhand, providing inclusive, affordable, and quality professional and scientific education. We aim to empower students from rural and economically weaker backgrounds with knowledge, skills, and values to become competent professionals, innovators, and responsible citizens contributing to sustainable national development.

MISSION

- Our mission is to provide accessible and affordable higher education in professional and traditional disciplines to students from government schools and low-income families in remote areas.
- We aim to offer industry-relevant professional programs, such as BCA, BBA, Food Technology, Computer Science and Non-Conventional Energy, along with a strong foundation in science education through traditional courses.
- We strive to create a technology-enabled learning environment with well-equipped computer laboratories, modern science laboratories, smart classrooms, library resources, and a conducive examination system.
- Our goal is to enable outreach activities for socio-economic development in the region and foster skill development, entrepreneurship, and innovation through a dedicated Startup and Innovation Cell.

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी

एक परिचय

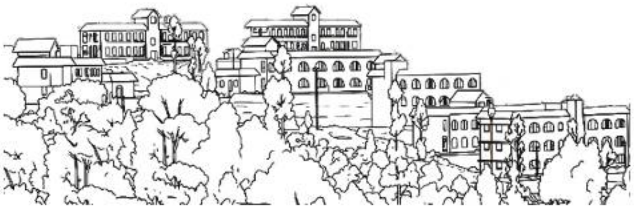

उत्तराखण्ड राज्य के दूरस्थ अंचल में स्थित प्रदेश का प्रथम नवस्थापित राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी, जनपद पौड़ी गढ़वाल के थलीसैंण ब्लॉक की राठ घाटी में विश्व प्रसिद्ध राहु इन्द्रेश्वर की तपस्थली एवं माँ बूखाँल कालिंका की धरती पर तथा कल-कल करती पश्चिमी नयार नदी (नवालिका) एवं स्योलीगाड़ (रथवाहिनी) के संगम के सुरम्य तट पर चीड़-पाइन के वनों के मध्य स्थित है। पैठाणी में व्यावसायिक महाविद्यालय की स्थापना के लिये क्षेत्र की जनता वर्षों से संघर्षरत थी। यहां के शिक्षाविदों की दूरदर्शिता तथा क्षेत्रीय सुधी नागरिकों के अथक प्रयासों के परिणाम स्वरूप उच्च शिक्षा के क्षेत्र में एक अभूतपूर्व ऐतिहासिक निर्णय लिया गया, तदोपरान्त 3 फरवरी 2019 को भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री माननीय श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी, तत्कालीन गढ़वाल सांसद माननीय श्री भुवन चन्द्र खण्डूडी जी, उत्तराखण्ड के तत्कालीन मुख्यमंत्री माननीय श्री त्रिवेन्द्र सिंह रावत जी, उच्च शिक्षामंत्री माननीय डॉ0 धन सिंह रावत जी के करकमलों द्वारा इस महाविद्यालय का शिलान्यास किया गया। तत्पश्चात् 19 अगस्त 2021 को महामहिम राज्यपाल श्रीमती बेबी रानी मौर्य महोदया की सहर्ष स्वीकृति शासनादेश संख्या 717/2/2021/0(6) 2020 दिनांक 19/08/2021 को विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में उल्लेखनीय शैक्षणिक वातावरण तैयार करने के लिए इस महाविद्यालय की विधिवत शुरूआत हुई।

जनपद का यह भू-भाग पहले विकास से कोसो दूर अशिक्षा एवं पिछड़ेपन से पीड़ित रहा है। आजादी के बाद भी यह क्षेत्र शिक्षा के अभाव में अनेक तरह की विषमताओं से घिरा रहा। यद्यपि शुरूआती दौर में प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा के क्षेत्र में प्रारम्भिक गति ने जरूर कुछ विसंगतियों को परास्त किया, परन्तु उच्च शिक्षा विशेषकर विज्ञान एवं तकनीकी शिक्षा प्राप्त करना यहाँ के युवाओं का सपना ही था। इस अभाव और वेदना को महसूस करते हुए क्षेत्र के शिक्षाविदों एवं जनप्रतिनिधियों ने राज्य सरकार से सम्पर्क एवं सहयोग स्थापित कर ग्राम-सभा बनास के दानवीरों द्वारा दान की गयी भूमि (1.627 हे0) पर प्रदेश के इस प्रथम व्यावसायिक महाविद्यालय की स्थापना हुई।

नूतन शैक्षणिक सत्र 2021-22 में गणित संवर्ग (गणित, भौतिक विज्ञान, रसायन विज्ञान एवं कम्प्यूटर विज्ञान) में 60-60 सीटों के साथ अस्तित्व में आया यह महाविद्यालय जिसके शुरूआत में महज 10 छात्र-छात्राओं, 02 शिक्षणेत्तर कर्मचारियों, 03 प्राध्यापको एवं प्रभारी प्राचार्य के साथ महाविद्यालय का मिशन उच्च शिक्षा प्रारम्भ हुआ। तदनंतर क्षेत्र में छात्र-छात्राओं की आवश्यकताओं को देखते हुए सत्र 2022-23 में गणित संवर्ग के साथ जीव विज्ञान संवर्ग (वनस्पति विज्ञान, जन्तु-विज्ञान) में 60-60 सीटों के साथ स्वीकृति मिली, और इस सत्र में लगभग 27 छात्र-छात्राओं के प्रवेश लेने के साथ शिक्षण कार्य शुरू हुआ।

शिक्षा के क्षेत्र में महाविद्यालय नित-प्रतिदिन उल्लेखनीय कार्य करता रहा और परिणाम स्वरूप सत्र 2024-25 में विज्ञान वर्ग के साथ पांच और व्यावसायिक विषयों (बी0सी0ए0, बी0बी0ए0, बी0एस-सी0 कम्प्यूटर सांइस, बी0एस-सी0 फूड सांइस, बी0एस-सी0 नॉन कन्वेंशनल एनर्जी) की मान्यता मिलते ही छात्र संख्या 92 पहुँच गयी।वर्तमान में महाविद्यालय में विज्ञान संकाय (60-60 सीटें प्रत्येक विषय में) तथा व्यावसायिक संकाय (40-40 सीटें प्रत्येक विषय में) स्वीकृत है।

वर्तमान शैक्षणिक सत्र 2025-26 में सभी संकायों में अध्ययनरत कुल छात्र संख्या लगभग 134 के साथ स्थायी प्राचार्य, 09 प्राध्यापक, 01 योग प्रशिक्षक, 08 शिक्षेणत्तर कर्मचारी एवं 09 आउटसोर्स कर्मचारी कार्यरत है। यह महाविद्यालय नित-प्रतिदिन न केवल संख्यात्मक रूप से विद्यार्थियों की अपार संख्या जुटाने में कामयाब हो रहा है अपितु समस्त छात्र-छात्राओं के बौद्धिक, रचनात्मक एवं सर्वांगीण विकास का भी साक्षी बन रहा हैं। निश्चित रूप में यह महाविद्यालय विज्ञान एवं व्यावसायिक शिक्षा लेने वाले अल्प आय परिवार वालों के बच्चों के लिए वरदान सिद्ध हो रहा हैं। वर्तमान में बढ़ती छात्र-छात्राओं की आवश्यकताओं को मध्यनजर रखते हुए महाविद्यालय प्रशासन स्नातकोत्तर कक्षाओं के सफल संचालन के लिए शासकीय स्वीकृति हेतु निरन्तर प्रयासरत है।

प्राचार्य सूची

(स्थापना से अद्यतन)

क्र.स.	प्राचार्य	प्रभार	कार्यकाल
1.	डॉ० कुलदीप सिंह रावत	ओ.एस.डी.	10/08/2021 से 30/06/2022 तक
2.	प्रो० आर० के० उभान	प्रभारी प्राचार्य	25/09/2021 से 23/08/2022 तक
3.	प्रो० के० सी० दुदपुड़ी	प्रभारी प्राचार्य	24/08/2022 से 03/01/2023 तक
4.	प्रो० (डॉ०) डी० एस० नेगी	प्रभारी प्राचार्य	04/01/2023 से 02/08/2023 तक
5.	प्रो० (डॉ०) डी० एस० नेगी	प्राचार्य	03/08/2023 से 25/07/2024 तक
6.	डॉ० पुनीत चन्द्र वर्मा	प्रभारी प्राचार्य	26/07/2024 से 06/08/2024 तक
7.	डॉ० कुमार गौरव जैन	प्रभारी प्राचार्य	07/08/2024 से 29/11/2024 तक
8.	प्रो० (डॉ०) विजय कुमार अग्रवाल	प्राचार्य	30/11/2024 से अद्यतन

महाविद्यालय परिवार

प्रो० (डॉ०) विजय कुमार अग्रवाल, प्राचार्य

विज्ञान संकाय

1.	डॉ० कुमार गौरव जैन	:	असि० प्रो० एवं विभाग प्रभारी, **रसायन विज्ञान**
2.	डॉ० खिलाप सिंह	:	असि० प्रो० एवं विभाग प्रभारी, **गणित**
3-	डॉ० उर्वशी	:	असि० प्रो० एवं विभाग प्रभारी, **जंतु विज्ञान**
4.	डॉ० आलोक सिंह कण्डारी	:	असि० प्रो० एवं विभाग प्रभारी, **भौतिक विज्ञान** (संविदा)
5.	डॉ० प्रकाश चन्द्र फोंदणी	:	असि० प्रो० एवं विभाग प्रभारी, **वनस्पति विज्ञान** (संविदा)
6.	कम्प्यूटर साइंस	:	रिक्त

व्यावसायिक संकाय

1.	डॉ० दिनेश रावत	:	असि० प्रो० एवं विभाग प्रभारी, **बी.बी.ए.**
2.	डॉ० कल्पना रावत	:	असि० प्रो०, **बी.बी.ए.**
3-	डॉ० पुनीत चन्द्र वर्मा	:	असि० प्रो० एवं विभाग प्रभारी, **बी.सी.ए.**
4.	डॉ० सतवीर	:	असि० प्रो०, **बी.सी.ए.**
5.	बी.एस-सी. कम्प्यूटर साइंस	:	रिक्त
6.	बी.एस-सी. फूड साइंस	:	रिक्त
7.	बी.एस-सी.नॉन-कन्वेन्शनल एनर्जी	:	रिक्त

शिक्षणेत्तर कर्मचारी

1.	श्री सतीश सिंह	:	मुख्य प्रशासनिक अधिकारी
2.	श्री आशीष कश्यप	:	सहायक लेखाकार
3.	श्री अनूप सिंह	:	पुस्तकालय लिपिक
3.	श्री पल्लव नैथानी	:	कनिष्ठ सहायक
4.	श्री राहुल रावत	:	कनिष्ठ सहायक

प्रयोगशाला सहायक

1.	श्री नीरज कुमार	:	प्रयोगशाला सहायक - रसायन विज्ञान
2.	श्री भूपेन्द्र कुमार	:	प्रयोगशाला सहायक - भौतिक विज्ञान
3.	श्री प्रवीन सिंह	:	प्रयोगशाला सहायक - वनस्पति विज्ञान

आउट-सोर्स कर्मचारी

1.	श्री भाष्करानन्द मिश्रा	:	योग प्रशिक्षक
2.	श्री गांधी सिंह	:	उपनल (सम्बद्ध)
3.	श्री विरेन्द्र सिंह	:	स्वच्छक
4.	श्रीमती सीमा देवी	:	माली
5.	श्री प्रदीप सिंह	:	बुक लिफ्टर
6.	श्री भोपाल सिंह	:	कार्यालय परिचर
7.	श्रीमती ट्विंकल	:	कार्यालय परिचर
8.	श्री मनवर सिंह	:	गार्ड
9.	अर्चना	:	प्रयोगशाला परिचर
10.	श्री जसपाल सिंह	:	प्रयोगशाला परिचर
11.	श्रीमती मीना कण्डारी	:	डाटा एंट्री ऑपरेटर

मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना के अन्तर्गत सर्वोच्च अंक प्राप्त छात्र-छात्राओं की वर्षवार सूची

क्र.स.	वर्ष	नाम	कक्षा	संयोजक
1.	2023-24	निकिता	बी.एस-सी. 6th सेम०	डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोंदणी
2.	2023-24	सूरज सिंह चौहान	बी.एस-सी. 4th सेम०	डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोंदणी
1.	2024-25	साहिल सिंह	बी.एस-सी. 1st सेम०	डॉ0 सतवीर
2.	2024-25	मोहित सिंह	बी.एस-सी. 1st सेम०	डॉ0 सतवीर
3.	2024-25	अंजलि	बी.एस-सी. 3rd सेम०	डॉ0 सतवीर
4.	2024-25	तनीषा	बी.एस-सी. 3rd सेम०	डॉ0 सतवीर
5.	2024-25	रजनीश भट्ट	बी.एस-सी. 3rd सेम०	डॉ0 सतवीर
6.	2024-25	दिव्या रतूड़ी	बी.एस-सी. 5th सेम०	डॉ0 सतवीर
7.	2024-25	साक्षी	बी.एस-सी. 5th सेम०	डॉ0 सतवीर
8.	2024-25	ऋषभ भण्डारी	बी.एस-सी. 5th सेम०	डॉ0 सतवीर
1.	2025-26	अंकित सिंह	बी.बी.ए. (प्रथम वर्ष)	डॉ0 खिलाप सिंह
2.	2025-26	देवेन्द्र सिंह	बी.एस-सी. सी.एस. (द्वितीय वर्ष)	डॉ0 खिलाप सिंह
3.	2025-26	अनुज नेगी	बी.एस-सी. सी.एस. (द्वितीय वर्ष)	डॉ0 खिलाप सिंह
4.	2025-26	मानसी	बी.एस-सी. सी.एस. (तृतीय वर्ष)	डॉ0 खिलाप सिंह
5.	2025-26	अंजली	बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	डॉ0 खिलाप सिंह
6.	2025-26	नेहा गोदियाल	बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	डॉ0 खिलाप सिंह
7.	2025-26	तनीषा	बी.एस-सी. (तृतीय वर्ष)	डॉ0 खिलाप सिंह
8.	2025-26	दिव्या रतूड़ी	बी.एस-सी. (पास आउट)	डॉ0 खिलाप सिंह
9.	2025-26	साक्षी	बी.एस-सी. (पास आउट)	डॉ0 खिलाप सिंह
10.	2025-26	ऋषभ	बी.एस-सी. (पास आउट)	डॉ0 खिलाप सिंह

महाविद्यालय में अध्ययनरत छात्र-छात्राओं का विगत वर्षों का परीक्षा परिणाम

शैक्षणिक सत्र	कुल पंजीकृत विद्यार्थी	उत्तीर्ण विद्यार्थी संख्या	उत्तीर्ण प्रतिशत
2021-2022	08	08	100%
2022-2023	45	37	82.22%
2023-2024	76	72	94.25%
2024-2025	102	89	87.25%

वार्षिक उत्सव कार्यक्रम 2024-25
पुरस्कार वितरण

प्रतियोगिता	नाम	कक्षा	स्थान
(1) मतदाता जागरूकता अभियान (स्वीप)			
भाषण प्रतियोगिता	दिव्या रतूड़ी	बी.एस-सी. 4th सेम०	प्रथम स्थान
	शशांक शेखर भट्ट	बी.एस-सी. 4th सेम०	द्वितीय स्थान
	संजय मुण्डेपी	बी.एस-सी. 4th सेम०	तृतीय स्थान
पोस्टर प्रतियोगिता	साक्षी नेगी	बी.एस-सी. 4th सेम०	प्रथम स्थान
	खुशबू	बी.एस-सी. 4th सेम०	द्वितीय स्थान
	नैना	बी.एस-सी. 2nd सेम०	तृतीय स्थान
निबन्ध प्रतियोगिता	कु० खुशबू भट्ट	बी.एस-सी. 4th सेम०	प्रथम स्थान
	रितिका	बी.एस-सी. 2nd सेम०	द्वितीय स्थान
	निकिता	बी.एस-सी. 2nd सेम०	तृतीय स्थान
(2) युवा संसद (Tarun Sabha) प्रतियोगिता (महाविद्यालय स्तरीय)			
	खुशबू	बी.एस-सी. 5th सेम०	प्रथम स्थान
	शशांक भट्ट	बी.एस-सी. 5th सेम०	द्वितीय स्थान
	ऋषभ भण्डारी	बी.एस-सी. 5th सेम०	तृतीय स्थान
(3) गढ़भोज दिवस प्रतियोगिता (महाविद्यालय स्तरीय)			
	अरविंद	बी.एस-सी. 5th सेम०	प्रथम स्थान
	अंबिका	बी.एस-सी. 1st सेम०	द्वितीय स्थान
	ईशा	बी.एस-सी. 1st सेम०	तृतीय स्थान
(4) क्रीड़ा प्रतियोगिता			
बालिका वर्ग	रेशमा	बी.एस-सी. 2nd सेम०	प्रथम स्थान
	पूनम	बी.एस-सी. 2nd सेम०	द्वितीय स्थान
	कीर्तिका	बी.एस-सी. 2nd सेम०	तृतीय स्थान
बालक वर्ग	ललित रौथाण	बी.बी.ए. 2nd सेम०	प्रथम स्थान
	प्रियांशु कण्डारी	बी.सी.ए. 2nd सेम०	द्वितीय स्थान
	गौरव	बी.सी.ए. 2nd सेम०	तृतीय स्थान

मुख्यमंत्री-विद्यार्थी शैक्षिक भ्रमण भारत दर्शन योजना के तहत चयनित मेधावी छात्र-छात्राओं की सूची

क्र.स.	वर्ष	नाम	कक्षा	संयोजक
1.	2024-25	दिव्या रतूड़ी	बी.एस-सी. 6th सेम०	डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोंदणी
2.	2024-25	साक्षी नेगी	बी.एस-सी. 6th सेम०	डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोंदणी
3.	2024-25	ऋषभ भण्डारी	बी.एस-सी. 6th सेम०	डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोंदणी
4.	2024-25	रजनीश भट्ट	बी.एस-सी. 4th सेम०	डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोंदणी
5.	2024-25	अंजली भट्ट	बी.एस-सी. 4th सेम०	डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोंदणी

रिजल्ट

सुना है आज रिजल्ट आएगा,,,
फिर किसी के ज्ञान को अंको में तौला जाएगा।
किसी के हाथों से इतिहास लिखा जाएगा,,,
तो किसी मासूम का इतिहास बिगड़ जाएगा।
प्रशंसाओं के साथ किसी का दिन शुरू होगा,,,
तो तानों के साथ किसी की शाम ढलेगी।
भले ही बात सही से करे या ना करे,,,
पर अच्छे अंक लाकर वो परिवार का गौरव बन जाएगा।
और किसी मासूम के छलकते आंसुओं से,,,
उसके असफल होने का कारण भी नहीं पूछा जाएगा।
सुना है आज रिजल्ट आएगा,,,
सुना है आज रिजल्ट आएगा।

खुशबू भट्ट
बी.एस-सी. 6th सेम

सैनिक

सैनिक वह है,
जिसके लिए देश की रक्षा ही धर्म है,
जिसके लिए मातृभूमि की सेवा ही कर्म है।
जिसके कारण हम घरों में सुरक्षित रहते हैं,
जिसके कारण हम खुलकर जीवन जी पाते हैं।
जिसका देश के लिए प्रेम निस्वार्थ होता हैं,
कड़कड़ाती ठंड, तपती धूप में भी बस देश की रक्षा ही उद्देश्य होता हैं।
जो देश के लिए घर-परिवार, सुख-सुविधा छोड़ आता हैं,
जो त्याग और बलिदान को अपनी मंजिल बना लेता हैं।
जो अपना कर्तव्य निभाते-निभाते शहीद हो जाता हैं,
और देश की मिट्टी में मिलकर भी अमर हो जाता हैं।

अंजली भट्ट
बी.एस-सी. 5th सेम

राहु मन्दिर पैठाणी

सतयुग में जब हुआ समुद्र मन्थन तो,
देवताओं और दानवो में हुआ भारी भयंकर था।

अमृत ना पी पाये दानव कोई,
ऐसा स्वांग भगवान ने रचाया था।

वेश बदलकर राहु ने अपना,
अमृत की घूंट पी डाली थी।

विष्णु भगवान के क्रोध के कारण फिर,
राहु ने अपनी जान गवाई थी।

सिर गिरा जिस शिला के नीचे,
राहु शिला वह कहलायी थी।

अमृत की घूंट पी जब राहु ने तो,
दर्जा मिला राहु को भगवान का था।

दोष लगा जब पांडवो पर राहु का तो,
गुरू शंकराचार्य ने किया मन्दिर निर्माण था।

गोत्र राहु का पैठनी होने के कारण,
राहु स्थली का नाम पड़ा पैठाणी गांव था।

पांडवो ने की यहां शिव और राहु की पूजा तो,
इन्द्रेश्वर महादेव नाम मन्दिर का कहलाया था।

पौड़ी जनपद के पैठाणी गांव में नावालिक और सियोलीगाढ़,
नदियों के संगम स्थल में हुआ इस मन्दिर का निर्माण था।

और एकमात्र प्रसिद्ध मन्दिर भारत में राहु का,
उत्तराखण्ड में स्थापित करवाया था।

नैना
बी.एस-सी. 5th सेम

इंसान

अत्यधिक मिठास में पड़ जाते हैं कीड़े,
और कड़वाहट चुभ जाती हैं,
इंसान को।

अत्यधिक विनम्रता पर लगता है दोष,
और अहम पतन की ओर ले जाता हैं,
इंसान को।

अत्यधिक सुन्दरता होती होगी आकर्षक लेकिन
सुन्दर चरित्र और अच्छे संस्कार बना देती है महान,
इंसान को।

अत्यधिक क्रोध की बातो में छलकता है सत्य,
और करवा देती है इसकी पहचान,
इंसान को।

क्या अमीरी और क्या गरीबी,
किस्मत का रूख बदलने पर ये बदल देता है,
इंसान को।

और अत्यधिक अहम और घमंड का होना भी सही नहीं है,
क्योंकि काल का चक्र चलने पर ये,
दो गज कफन में लपेट लेता है,
इंसान को।

नैना
बी.एस-सी. 5th सेम

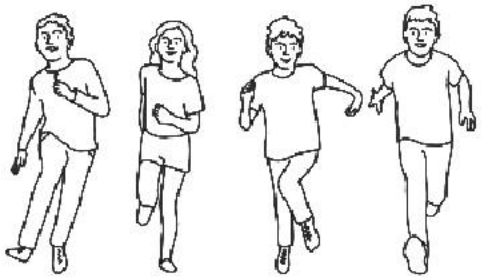

हमारा पहाड़ों मा आपदा की पीड़ा

हे विधाता यन बताऊ किले तू रूठीगे,
हंसता खेलदा पहाड़ों मा यन क्या करीगे।

हे विधाता यन बताऊ यन किले करीगे,
हंसता खेलदा पहाड़ों मा पाणी सामेगे।

हे विधाता यन बताऊ किले तू रूठीगे,
हंसता खेलदा पहाड़ों मा तबाही मचीगे।

हमारा पहाड़ों पर कैकी नजर लगीगे,
दिन रात हर वक्त तबाही मची चा।

हे गंगा मयां त्वे ते दया भी नी आई,
दिन रात उत्तराखण्ड मा तबाही मचाई।

हे पापी विधाता त्वेन इन क्याजी करी,
हमारा कुड़ी छन्नी त्वेन पाणी मा समाई।

हे विधाता यन बताऊ यनु किले करी,
पुरखो कू सौन्तियो कमाई कुछ भी नी बचाई।

हे गंगा मयां त्वे ते दया भी नी आई,
पुराणों कू सौन्तियो कमाई कुछ भी नी बचाई।

हे पापी विधाता त्वेन कु भी नी चिताई,
हमारो उत्तराखण्ड त्वेन पाणी-माटा मा बगाई।

निकिता राणा
बी.एस-सी. 5th सेम

आवाज हर बेटी की

We Should raise our voice against injustice

उसकी चीख को रात ने निगल लिया,
सपनों का आँगन राख में बदल गया।
जिस्म तो घायल था ही,
पर रूह भी सन्नाटे में कैद हो गई।

दुनिया ने पूछा ''कपड़े कैसे थे''?
पर किसी ने यह न सोचा ''अपराधी वैसे थे''।
लड़की नहीं गुनाहगार,
उसकी आंखों में छुपा संसार।

अब वक्त है, खामोशी तोड़ने का,
न्याय के लिए आवाज उठाने का।
हर बेटी को यह हक मिले,
कि वे डर के साए में न जिए।

''रेप सिर्फ एक लड़की का दर्द नहीं,
ये पूरे समाज की शर्म है।''

संजना कण्डारी
बी.एस-सी. 5th सेम

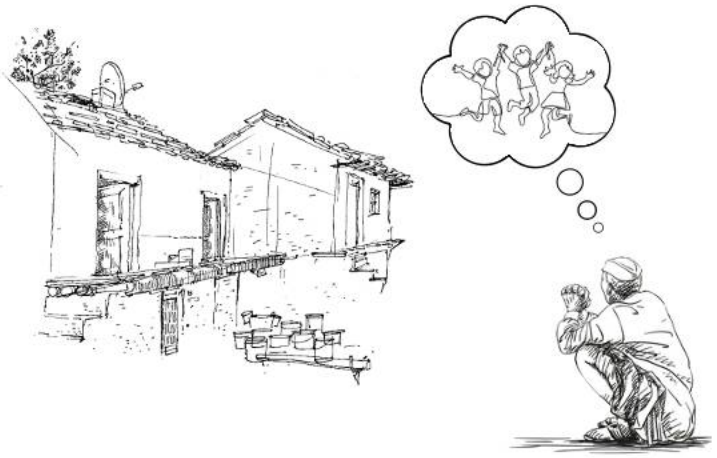

पहाड़ ह्वेगे वीरान

यू पहाड़ आज किलैं ह्वेगे हुला वीरान।
गौं-गुठ्यारों मा किलैं ढूंडना अपड़ी पहचान।।
ना यख डाला-बोटा ना यख हरियाली ।
कभी यख हवा मा छई खूशबू अपडो की पहचान।।
यू पहाड़ आज किलैं ह्वेगे हुला वीरान।
ना मेहनत की खूशबू न रयू खेती कू मान।।
बस बिखरी पड़था यू सूखी पत्ता पुरणों का नाम।
आज यू पहाड़ ढुंढणू चा अपड़ी पहचान।।
सोचणू चा किलैं ल्वेगें होलु मी वीरान।
पहाड़ रोना, जमीन सुकीना, गाढ-गदरों को थम गे पाणी।।
जो बागों मा फूल खिलदा छा आज हुया छन ऊजाड़।
आज सबून छोड़ी यू पहाड़ करी गेन वीरान।।
आज यू पहाड़ ढुंढणू चा अपड़ी पहचान।
कोदो झंगोरा की गीत गथा, अब चा बस यादों मा।।
छोडी के चली गिना सब, कन फूटी ये पहाड़ों को भाग।
कभी लोग छा पहाडों की पहचान, और पहाड़ छा लोगों की सान।
आज यू पहाड़ ह्वेगे वीरान, ह्वेगे वीरान....।।

रितिका
बी.एस-सी. 5th सेम

9 नई टेक्नोलॉजी जो दुनिया बदल देगी

दुनिया तेजी से बदल रही है! इंसान की जितने बदलाव 100 वर्षों में नहीं हुए होंगे, उससे अधिक बदलाव पिछले 20 वर्षों में हो गए और जितने बदलाव पिछले 20 वर्षों में नहीं हुए उससे अधिक बदलाव आने वाले 7-8 वर्षों में हो जाएंगे, और इसका एक ही कारण है **"तकनीक"**

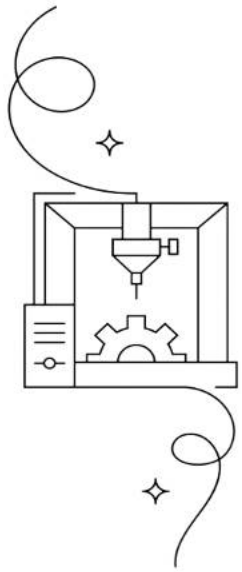

आज के समय में जितनी तेजी से बदलाव आ रहा है, ऐसा पहले कभी नहीं हुआ। हम ऐसी ही कुछ नयी तकनीको के बारे में बताने जा रहे है, जो हमारी जिंदगी को पूरी तरह से बदल सकती है। आइये कुछ इसी तरह के अकल्पनीय टेक्नोलॉजी के बारे में जानते है-

1. **3D प्रिंटिग** : 3D Printing, वर्तमान समय की सबसे शानदार नई टेक्नोलॉजी में से एक है। 3D प्रिंटर, हमारे डिजिटल डिजाइन को ठोस वास्तविक प्रोडक्ट में प्रिंट कर देता है - एकदम शाका लाका बूम बूम की पेन्सिल की तरह ! 3D Printing आने वाले समय में दुनिया में अकल्पनीय बदलाव लाएगा क्योंकि इसका उपयोग हमारे जीवन के लगभग हर क्षेत्र में होगा। अभी तक 3D Printing का उपयोग साईकिल से लेकर हवाई जहाज के पार्ट्स, खिलौने, मेटल की वस्तुएं, खाद्य उत्पाद, मानव अंग, मकान और कई तरह की वस्तुएं बनाने में हुआ हैं।
2. **ड्राईवरलेस कार** : गूगल और फोर्ड सहित कई कंपनियां Artificial Intelligence के माध्यम से स्वचलित (Auto Driving Car) कार को विकसित कर रही है। सेल्फ ड्राइविंग कारों से सड़क दुर्घटनाओं में कमी आएगी क्योंकि इन कारों में लगे सेंसर और अन्य टेक्नोलॉजी इतनी शानदार है कि दुर्घटनाओं की सम्भावना न के बराबर हो जाती हैं। कई कंपनियों ने सेल्फ ड्राइविंग कार विकसित कर ली है, लेकिन अभी इस टेक्नोलॉजी का व्यावहारिक रूप से उपयोग होने में कुछ वर्ष और लग जायेंगें।
3. **रोबोटिक्स एवं आर्टिफीसियल इंटेलिजेंस** : ऐसे रोबोट्स जो अब तक हमने सिर्फ फिल्मों में देखे है, वो अब वास्तविक रूप लेने लगे हैं। वैज्ञानिक निरंतर रूप से Robots में Artificial Intelligence को विकसित करने में लगे हुए हैं। हालाँकि विज्ञान अभी तक इंसानों जैसी समझ वाले रोबोट्स विकसित करने के आस-पास भी नहीं हैं। लेकिन कई काम रोबोट्स इंसान से बेहतर और जल्दी करते है। इनका उपयोग चिकित्सा ऑपरेशन, हानिकारक पदाथों वाली जगह तथा दोहराने वाले काम में अब भी हो रहा है। आने वाले समय में रोबोट का उपयोग दिन प्रतिदिन के कार्यों में होने लगेगा जैसे खाना बनाना, गंदे बर्तन साफ करना, घर की सफाई करना, भारी वस्तुएं उठाकर एक जगह से दूसरी जगह ले जाना। जिस तरह कुछ वर्षों पहले कंप्यूटर ने हमारे कार्य करने के तरीके को बदल दिया था वैसे ही रोबोट्स भी हमारे कार्य करने के तरीके को बदल देंगें।
4. **सब सोनिक ट्रांसपोर्टेशन हाइपरलूप** : वैज्ञानिक यातायात के क्षेत्र में एक खास तरह की टेक्नोलॉजी "Subsonic Transportation Hyper loop" विकसित कर रहे हैं। रॉकेट जैसी दिखने वाली ये ट्रेन वैक्यूम सिस्टम से गुजर कर बुलेट ट्रेन से तीन गुना (1224 कि0मी0) तेजी से दौड़ेगी। अचानक बिजली से संपर्क टूटने, खराब मौसम और भूकंप का इस पर कोई असर नहीं होगा। 2025 तक पहली Subsonic Train दौड़ाने की आशंका है, जिससे परिवहन क्षेत्र में बहुत

बड़ा बदलाव आएगा।

5. **इन्टरनेट ऑफ थिंग्स :** हमारे रोजमर्रा के जीवन में काम आने वाली वस्तुओं जैसे मोबाइल, म्यूजिक सिस्टम, व्हीकल्स, इलेक्ट्रॉनिक, सेंसर्स और अन्य Smart Devices को एक नेटवर्क में कनेक्ट करने की तकनीक है जो आपस में डाटा एक्सचेंज कर सकते है इसका इस्तेमाल हॉस्पिटल्स में मरीज की हेल्थ को चेक करने, घर और अन्य जगह पर मोबाइल के जरिये सिक्योरिटी रखने, गाड़ी को क्रैश से बचाने में होता है। इस टेक्नोलॉजी की मदद से आने वाले समय में कई काम असान हो जाएंगे जैसे केक बनने पर आपका ओवन खुद बंद हो जाएगा, कमरे में आने पे लाइट खुद जल जाएगी।
6. **ब्रेन संचालित संगणक :** इसका उद्देश्य इंसान के दिमाग के द्वारा कंप्यूटर और अन्य डिवासेज को काम करवाना है। हलाँकि अभी सिर्फ कुछ ही काम इस पर हुआ है लेकिन भविष्य में आप दिमाग की तेजी से कंप्यूटर पर काम कर पाएंगे। कुछ कंपनियां ने इंसान के दिमाग को पढ़कर कार्य करने वाली कुछ डिवाइसेज बनाई हैं।
7. **आर्टिफिशीयल पिंक लाइट फार्म्स :** बढ़ती जनसंख्या की वजह से खेती योग्य जमीन कम होने लगी हैं। पिंक लाइट फार्म्स की मदद से घर के अन्दर ऑर्गनिक और कीटनाशक मुक्त खेती कर पाना संभव हैं। इस तकनीक में विशेष प्रकार की LED Lights का उपयोग करके आंतरिक वातावरण में खेती की जाती हैं। इतना ही नहीं, इस तकनीक में पानी भी कम खर्च होता है और खेती वर्ष में कभी भी की जा सकती हैं। इसका उपयोग तम्बाकू, ड्रग्स और वेक्सीन की खेती में हो चुका है।
8. **वर्चुअल रियलिटी :** एक विशेष तरह की कंप्यूटर जनित इलेक्ट्रानिक डिवाइस जिसमे स्क्रीन और सेंसर्स फिट हैं। उसे आँखों पर पहन कर हम 3-D Image और Environment के द्वारा हमें बिल्कुल रियल गेम जैसा आनंद ले सकते हैं इतना रियल हैं, भविष्य में शायद रियलिटी और वर्चुअल रियलिटी में फर्क करना भी मुश्किल हो जाए। गेम्स के अलावा भविष्य में इसका उपयोग हेरिटेज, शिक्षा, मनोरंजन बिजनेस आदि कई क्षेत्रें में हो सकेगा।
9. **स्पेस ट्रिप :** अभी तक विश्व भर में करीब 550 लोग ही अंतरिक्ष की यात्र कर पाए हैं। लेकिन Virgin Galactic कंपनी आम लोगों को अंतरिक्ष की यात्रा करवाने के मिशन पर कार्य कर रही हैं, और इसके लिए विशेष प्रकार का स्पेस ट्रिप डिजाईन किया जा रहा हैं। अगले 4-5 वर्षों में पहली कमर्शियल स्पेस फ्लाइट भेजी जाएगी। इसके साथ साथ अभी हाल ही में अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी नासा ने भी अंतरिक्ष में जाने के इच्छुक व्यक्तियों से आवेदन मंगवाए थे। विशेष प्रकार प्रशिक्षण के बाद कुछ चुने हुए व्यक्तियों को अंतरिक्ष की यात्रा करवाई जाएगी। कुछ कंपनियों ने 2030 तक अंतरिक्ष में होटल और मानव बस्तियां बनाने की दिशा में कार्य कर रही हैं।

डॉ0 पुनीत चन्द्र वर्मा
असि0 प्रो0
(बी0सी0ए0)

महामारी या महासन्देश

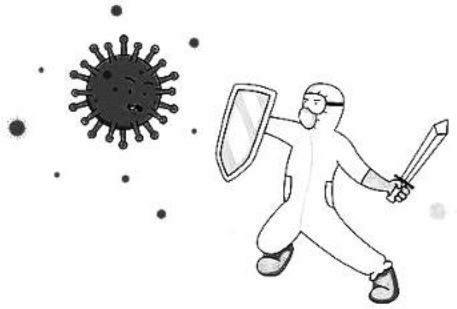

"The planet does not need money,
it need behavioural change"

- Sonam Wangchuk"

पूरे विश्व को एक बाजार बनाने की ऊहापोह में इंसान के व्यवहार में प्रकृति के प्रति जो आक्रामकता दिख रही है, उससे लगता है कि यह महीना प्रकृति का मानव जाति के सन्दर्भ में मार्च फाइनल चल रहा हो। पृथ्वी में जीवन का सृजन और विनाश क्रम पर वैज्ञानिक तथ्यों की बात करें तो विनाश चक्र में अधिकांश वही जीव जीवित रह पाए जिनका आकार लगभग 30 सेंटीमीटर से कम था, और बड़े आकार के जीव ही इस सृजन और विनाश के क्रम में विलुप्त या पुनर्जीवित होते रहे। इसलिए ये वर्तमान ने चिह्नित किये गए सभी प्रकार के घातक विषाणु का नैसर्गिक घर इन छोटे आकार के जीवो में रहा है। वैसे तो विषाणुओं का वजूद तो मानव जाति से पहले से भी रहा है, और मानव जाति के विनाश के बाद भी रहेगा, क्योंकि मानव को छोड़ए इस पृथ्वी में उत्पन्न बाकी सभी जीव अपनी हदें और नैसर्गिक उत्तरजीविता के नियम को जानते है। यदि इन परजीवी विषाणुओं की नैसर्गिक प्रतिरोधक क्षमता को समझने का प्रयास करें तो ये एक जीव से दूसरे जीव के शरीर में तत्काल ही अपने को अनुकूलित करने की क्षमता रखते हैं जबकि मानव की नैसर्गिक प्रतिरोधक क्षमता इस कड़ी में सबसे कमजोर है और विभिन्न प्रकार की वैक्सीन की खोज कर इस अघोषित युद्ध में हर बार अपनी भ्रमित जीत का जश्न मनाता रहा है।

मानव को ऐसा लगने लगा है कि वही इस पृथ्वी का मालिक है, और असीमित दोहन करना उसका अधिकार है। हम भूल रहे हैं कि ये दोहन के लिए नहीं बल्कि इस पूरे ब्रह्मांड में मानव जाति के लिए सबसे उपयुक्त और सुरक्षित स्थान रहा है। अभी भी हमने अपने व्यवहार में परिवर्तन नहीं किया तो वो दिन दूर नहीं जब हम ही इस पृथ्वी के जीव और वनस्पतियों के किये विषाणु बन कर रह जांएगे। आज के परिपेक्ष में ये कहना गलत नहीं होगा कि ये तथाकथित घातक से लगने वाले विषाणुओं इन मूकबधिर जीवों के लिए वरदान सा हैं।

डॉ0 आलोक सिंह कण्डारी
असि0 प्रो0, भौतिक विभाग

डिजिटल युग में सोशल मीडिया :अवसरों का सेतु या चुनौतियों का जाल?

रील्स से रियल लाइफ तकः संतुलन का सफर–एक समकालीन दृष्टिकोण

आज के डिजिटल युग में सोशल मीडिया हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका हैं। प्रत्येक दिन की शुरूआत से लेकर रात के विश्राम तक, युवा वर्ग का एक बड़ा हिस्सा इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप, यूट्यूब और फेसबुक जैसे प्लेटफॉर्म्स पर सक्रिय रहता है। 2021 जनगणना के अनुसार भारत में लगभग 60 करोड़ युवा (18-24 वर्ष आयु वर्ग) डिजिटल नेटवर्किंग से जुड़े हुए हैं।

सोशल मीडिया एक सशक्त माध्यम है, जो न केवल सूचना और मनोरंजन प्रदान करता है, बल्कि वैश्विक संवाद और सामाजिक चेतना के विस्तार में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरणस्वरूप, 2019 में ग्रेटा थनबर्ग द्वारा जलवायु परिवर्तन के खिलाफ उठाई गई आवाज ने विश्व भर के युवाओं को प्रभावित किया। इसी प्रकार, #MeToo और #BlackLivesMatter जैसे आंदोलनों ने सामाजिक न्याय और लैंगिक समानता जैसे संवेदशील मुद्दों पर वैश्विक स्तर पर जागरूकता उत्पन्न की। यूनिसेफ (2023) की रिपोर्ट के अनुसार, जो युवा सोशल मीडिया का सकारात्मक रूप में उपयोग करते हैं, वे अधिक सामाजिक रूप से संवेदशील, जागरूक तथा सक्रिय नागरिक बनते हैं।

शैक्षणिक और करियर निर्माण के क्षेत्र में भी सोशल मीडिया एक अत्यंत उपयोगी साधन बन चुका हैं। यूट्यूब पर उपलब्ध निःशुल्क शैक्षणिक ट्यूटोरियल्स, लिंक्डइन पर करियर मार्गदर्शन, तथा ट्विटर/लीनकेडइन/ऐक्स इत्यादि पर विशेषज्ञों की राय

ने विद्यार्थियों के लिए ज्ञान अर्जन के नए अवसर प्रदान किए हैं। स्टेटिस्टा (2023) के अनुसार, 72% भारतीय युवा सोशल मीडिया मे माध्यम से नए कौशल सीखते हैं। इसके अतिरिक्त, अनेक विद्यार्थी सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से हैंडमेड ज्वेलरी, डिजिटल आर्ट, ऑनलाइन कोचिंग आदि जैसे छोटे व्यवसाय संचालित कर रहे हैं, जिससे उनकी रचनात्मकता, उद्यमिता और आत्मनिर्भरता को बढ़ावा मिल रहा है।

हालांकि, सोशल मीडिया के सकारात्मक पहलुओं के समानांतर इसके दुष्प्रभावों को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता। नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ मेंटल हेल्थ एंड न्यूरो साइंसेज (NIMHANS, 2023) के अनुसार, वर्तमान युवा प्रतिदिन औसतन 4-6 घंटे सोशल मीडिया पर व्यतीत करते हैं, जिसमें अधिकांश समय रील्स, मीम्स और अनौपचारिक संवाद में खर्च होता है। Journal of Applied Cognitive Psychology (2022) के अध्ययन के अनुसार, अध्ययन के दौरान सोशल मीडिया का अत्यधिक उपयोग विद्यार्थियों की एकाग्रता और शैक्षणिक प्रदर्शन में लगभग 20% तक गिरावट का कारण बनता है।

Pew Research Center (2023) की रिपोर्ट इंगित करती है कि लगभग 60% युवा सोशल मीडिया पर मिलने वाली प्रतिक्रियाओं के आधार पर अपनी आत्म-छवि का मूल्यांकन करते हैं, जिससे आत्मसम्माान में कमी आती है। Common Sense Media (2022) की रिपोर्ट के अनुसार, अत्यधिक सोशल मीडिया उपयोग से तनाव, अवसाद और नींद संबंधी विकारों की संभावना 40% तक बढ़ जाती है। इस प्रकार WHO (2023) के अनुसार, अनियंत्रित सोशल मीडिया उपयोग से 'डिजिटल थकान' और 'सोशल एंग्जायटी' जैसी मानसिक स्वास्थ्य समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं। एक अन्य गंभीर चुनौती गलत सूचनाओं का तेजी से प्रसार है। Digital India Foundation (2024) के अनुसार, 55% युवा बिना सत्यापन के सोशल मीडिया पर प्रसारित खबरों को सच मान लेते हैं, जो उनकी सोचने-समझने की क्षमता तथा निर्णय शक्ति को प्रभावित कर सकता है।

इस परिप्रेक्ष्य में, सोशल मीडिया का संपूर्ण त्याग व्यावहारिक समाधान नहीं हैं, बल्कि उसका संतुलित, विवेकपूर्ण और सकारात्मक उपयोग समय की मांग है। इसके लिए कुछ महत्वपूर्ण सुझाव अपनाए जा सकते हैंः

- सोशल मीडिया उपयोग के लिए प्रतिदिन एक निर्धारित समय सीमा तय करें और अनावश्यक नोटिफिकेशन बंद करें।
- सकारात्मक एवं शैक्षणिक सामग्री का अनुसरण करें जो आपके करियर, रूचियों और आत्मविकास से जुड़ी हो।
- डिजिटल डिटॉक्स का अभ्यास करें, सप्ताह में कम से कम एक दिन सोशल मीडिया से दूरी बनाकर पुस्तक पठन, पारिवारिक संवाद अथवा नए शौकों को समय दें।
- किसी भी वायरल खबर पर विश्वास करने से पूर्व उसके स्रोत की पुष्टि करें।
- यदि सोशल मीडिया तनाव का कारण बन रहा हो, तो परिवार, मित्रों या परामर्शदाता से संवाद करें, ध्यान साधना करें अथवा मनोवैज्ञानिक सहायता लें।

कॉलेज जीवन व्यक्ति से सर्वांगीण विकास का स्वर्णिम काल होता है। यदि इस अवधि में सोशल मीडिया का नियंत्रित एवं रचनात्मक उपयोग किया जाए, तो यह न केवल ज्ञान और अवसरों का अद्भुत माध्यम बन सकता है, बल्कि आत्मविकास, सामाजिक चेतना और वैश्विक दृष्टिकोण के निर्माण में भी सहायक सिद्ध हो सकता है।

जैसा कि स्वामी विवेकानंद ने कहा था, ''उठो, जागो और तब तक मत रूको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए।''

अतः इस डिजिटल युग में सोशल मीडिया को साधन बनाइए, बाधा नहीं। अपनी ऊर्जा और समय का विवेकपूर्ण निवेश करें और सोशल मीडिया को अपने सपनों की पूर्ति का सेतु बनाइए।

डॉ0 सतवीर
असि0 प्रो0 (बीसीए)

स्वस्थ एवं निरोगी जीवन जीने की कला का नाम है योग

मन, इन्द्रियां और मनोविज्ञान -

इन्द्रियां क्या हैं - इन्द्रियां हमारे शरीर के वे अंग हैं जिनके माध्यम से हम अपने निजी कार्यों व इच्छाओं को पूरा करते हैं। हमारे मन मस्तिष्क को प्रत्येक सूचना हमारी इन्द्रियों के माध्यम से ही प्राप्त होती है, जिसका उपयोग हमारा मस्तिष्क अपनी प्राथमिकता व आवश्यकता अनुसार करता है। मन भी एक इंद्री है इसे चित्त भी कहते हैं।

इन्द्रियां वाह्य वातावरण से संवेदनायें ग्रहण करती हैं व उनकी सूचना मस्तिष्क तक पहुँचाती हैं उसके बाद मस्तिष्क इन्द्रियों को प्रतिक्रिया के लिये आदेश देता हैं।

इन्द्रियां कितनी हैं - हमारी कुल 11 इन्द्रियां हैं। पांच ज्ञानेंन्द्रियां, पांच कर्मेन्द्रियां और मन।

पांच ज्ञानेन्द्रियां -

- **त्वचा :** त्वचा से हमें स्पर्श का ज्ञान होता है।
- **जीभ :** जीभ से हमें स्वाद का ज्ञान होता है।
- **कान :** कानों से हम सुनने का ज्ञान होता है।
- **नाक :** नाक से हमे गंध का ज्ञान होता है।
- **आँखें :** आँखों से हमे दृश्य का ज्ञान होता है।

पांच कर्मेन्द्रियां -

- **हाथ :** हाथों से हम विभिन्न कार्यों को पूरा करते हैं।
- **पैर :** पैर हमें चलने में मदद करते हैं।
- **मुंह :** भोजन का कार्य हम मुंह द्वारा संपादित करते हैं।
- **जननेन्द्रिय :** यह इंद्री प्रजनन के माध्यम से संतानोत्पत्ति का कार्य संपादित करती है।
- **गुदा :** शरीर के अंदर के मल को इस इंद्री के माध्यम से बाहर किया जाता है।

मन - यह सबसे महत्वपूर्ण और ताकतवर इंद्री है, यह सभी इन्द्रियों के द्वारा किये कार्यों का उपभोग करता है, कभी आनंद उठाता है और कभी दुःख भी। यूँ कह सकते हैं कि यह इन्द्रियों के माध्यम से विषय भोगों में लिप्त रहता है।

मन का निर्माण कैसे होता है -

मस्तिष्क +विचार +चेतन +अर्द्ध चेतन +अचेतन + बुद्धि +तर्क-वितर्क + हृदय + भावना +संवेदना + विवेक + निर्णय = मन।

मन का मनोविज्ञान - यदि मन है तो मनोविज्ञान है। असल में मनोविज्ञान मन के अध्ययन का ही विज्ञान है। कभी मन स्वार्थी हो जाता है, कभी वह भावुक हो जाता है, कभी वह दयालु हो जाता है, कभी वह क्रूर हो जाता है। हमारे मन पर त्रिगुणों का प्रभाव भी रहता है, जब जो गुण प्रधान होता है उस समय व्यक्ति उसी तरह के कार्य करता है उस समय बाकी दो गुणों का प्रभाव या तो बहुत कम रहता है या पूरा दब जाता है।

तीन गुण कौन से हैं - • सतगुण • रजगुण • तमोगुण

अनियंत्रित मन के दुष्परिणाम -

- रोगों की उत्पत्ति • अप्रमाणिकता • अकर्मण्यता • आलस • नुकसान
- विभिन्न मनोरोगों का कारण मन की दुविधापूर्ण स्थिति है। • समाज में अपकीर्ति, अपयश

मन को कैसे वश में करें -

- शुभ संकल्प करें • अनुशासित दिनचर्या • योग आसन नित्य करें।
- आसनों के बाद प्राणायाम का अभ्यास जरूर करें। • नित्य ध्यान का अभ्यास करने की आदत होनी चाहिए।

योगाभ्यास से मन नियंत्रित करें -

- जब हम नित्य योगाभ्यास करते हैं तो पहली बात कि हम बुरे संकल्प लेने से बचते हैं।
- बुरी संगति में जाने से बचते हैं।
- दूसरों की बुराई व आलोचना करने से बचाव हो जाता है।
- बुरे कार्यों को करने के लिये समय नहीं होता।
- नित्य योग करने से तन तो स्वस्थ रहता ही है हमारा मन भी स्वस्थ हो जाता है।
- जब मन स्वस्थ हो तो वह स्वयं का भला बुरा तो सोचता ही है तो वह स्वयं को नियंत्रित रखता है।

मन को नियंत्रित करने के लाभ -

- स्वस्थ शरीर प्राप्त होता है। • हम स्वस्थ मस्तिष्क के मालिक बन जाते हैं।
- शारीरिक व मानसिक सक्षमता आती है। • धन व विद्या निरंतर बढ़ती है। • समाज में मान-प्रतिष्ठा बढ़ती है।

अनियंत्रित इन्द्रियों के दुष्परिणाम -

- विषय भोगों की लिप्सा • शरीर का नाश • बुद्धि - विवेक में कमी • समाज में मान प्रतिष्ठा में कमी

इन्द्रियों को अपने वश में कैसे करें -

- मन में शुभ संकल्प रखें। • भावनाओं को नियंत्रित रखें। • इन्द्रियों को भोगों में ही न उलझाये रखें।
- दिनचर्या अनुशासित रखें। • नित्य योगाभ्यास की आदत डालें। • नित्य मॉर्निंग वाक करने की आदत डालें ।

इन्द्रियों को नियंत्रित करने के लाभ -

- स्वस्थ शरीर • स्वस्थ मस्तिष्क • इन्द्रियों की क्षमता में बढ़ोत्तरी • स्वस्थ इन्द्रियां • आयु और बल बढ़ता है।

मन की अवस्थाएं -

मूढ़ अवस्था - इस अवस्था में व्यक्ति में काम, क्रोध, लोभ, मोह, और अभिमान कूट कूट कर रहता है। मूढ़ अवस्था में सत गुण और रजो गुण दबे हुए रहते हैं और मनुष्य इस समय अधर्म और बुरे कार्यों में ही लिप्त रहता है। राग - द्वेष और अज्ञान इस अवस्था में प्रबल रहता है।

क्षिप्त अवस्था - यह अवस्था साधारण मनुष्यों में पाई जाती है। यह रजोगुण प्रधान अवस्था है इसमें सत गुण और तमोगुण दब जाते हैं। यहां व्यक्ति कभी धर्म - कर्म के कार्य करता है कभी राग द्वेष से भर जाता है। इस अवस्था में ज्ञान, अज्ञान, मान, अपमान, यश, अपयश आदि का भान रहता है।

विक्षिप्त अवस्था - इस अवस्था में सत गुण की प्रधानता होती है, रज और तम गुण दबे हुए रहते हैं। इसमें व्यक्ति में धर्म की प्रवृति होती है, सेवा भाव होता है।कभी कभी राजोगुण चित्त को विक्षिप्त कर देता है।

एकाग्र अवस्था -जब हमारे चित्त की वृतियाँ एक ही विषय पर निरंतर बनी रहें तो यह अवस्था एकाग्र अवस्था कहलाती है।

यह मन की स्वाभाविक अवस्था है, इसी अवस्था को संप्रज्ञात समाधि भी कहते हैं। इस अवस्था में सत गुण की प्रधानता रहती है।

निरुद्ध अवस्था -जब हमारे चित्त में ज्ञान का उदय हो जाता है तब वह सांसारिक विषयों से विरक्त हो जाता है, कुछ और जानने की आकांक्षा नहीं रहती। सभी संस्कार समाप्त हो जाते हैं। इस अवस्था को असंप्रज्ञात समाधि भी कहते हैं।

इस प्रकार से प्रत्येक महाविद्यालयों में अध्यनरत छात्र-छात्राओं के मन का शुद्धिकरण महर्षि पतंजलि द्वारा बताए गए अष्टांग योग के माध्यम से कराया जा सकता है जिसके परिणाम स्वरूप महाविद्यालय में अध्यनरत समस्त छात्र छात्राओं को नशे की प्रवृत्ति से दूर रखा जा सकता है, हिंसक प्रवृत्तियों से बचाया जा सकता है तथा विद्यालयों, महाविद्यालय में अध्यनरत छात्र-छात्राओं को सात्विक जीवन जीने के लिए प्रेरित किया जा सकता है जिसके परिणाम स्वरूप समस्त युवा पीढ़ी संस्कारवान एवं चरित्रवान बन सकती है!

श्री भाष्करानन्द मिश्रा
योग प्रशिक्षक

प्रबंधन शिक्षा का बढ़ता महत्वः
क्यों जरुरी हैं BBA आज की व्यावसायिक दुनिया में

वर्तमान समय में दुनिया तेजी से बदल रही हैं। तकनीक, वैश्वीकरण और प्रतिस्पर्धा के इस युग में अब केवल किताबी ज्ञान पर्याप्त नहीं रह गया है। अब आवश्यकता है व्यावहारिक सोच, नेतृत्व क्षमता और रणनीतिक निर्णयों की और यही सब कुछ हमें **प्रबंधन शिक्षा (Management Education)** के माध्यम से प्राप्त होता है।

आज **BBA (Bachelor of Business Administration)** जैसे पाठयक्रम न केवल कैरियर के बेहतरीन विकल्प बनकर उभरे हैं, बल्कि युवाओं को भविष्य की कॉरपोरेट और उद्यमशील दुनिया के लिए तैयार भी कर रहे हैं।

BBA नेतृत्व और प्रबंधन की पहली सीढ़ी BBA एक तीन वर्षीय स्नातक पाठयक्रम है, जो व्यावसायिक प्रशासन, विपणन, वित्त, मानव संसाधन और संचार जैसे विषयों की पढ़ाई कराता है। यह कोर्स विद्यार्थियों में निर्णय लेने की क्षमता, टीमवर्क, नेतृत्व और समस्या समाधान जैसे गुण विकसित करता है।

कॉलेज के दिनों में ही BBA के माध्यम से छात्रों को केस स्टडी, प्रेजेंटेशन, इंटर्नशिप और इंडस्ट्री विजिट जैसी गतिविधियों से व्यावसायिक दुनिया की वास्तविक तस्वीर देखने का अवसर मिलता है।

क्यों बढ़ रही है BBA की लोकप्रियता?

• **वैश्विक कंपनियों की माँगः** बड़ी कंपनियों ऐसे युवाओं को प्राथमिकता देती हैं जो प्रबंधन के साथ-साथ व्यावहारिक ज्ञान भी रखते हो।

• **उद्यमिता को बढ़ावाः** Start-up इंडिया जैसे अभियानों ने युवाओं को खुद का व्यवसाय शुरू करने के लिए प्रेरित किया है, जिसमें BBA का ज्ञान अत्यंत सहायक है।

• **पारंपरिक डिग्रियों से आगे का विकल्पः** जहाँ पारंपरिक डिग्रियाँ केवल विषय ज्ञान तक सीमित हैं, वहीं BBA/MBA विद्यार्थियों को निर्णय लेने और नेतृत्व करने की कला सिखाते हैं।

• **इंटरनेशनल एक्सपोजरः** आजकल कई संस्थान ग्लोबल स्टडी प्रोग्राम और मल्टीनेशनल कंपनियों के साथ इंटर्नशिप ऑफर करते हैं।

BBA केवल डिग्री नहीं, बल्कि आज के समय की जरूरत हैं। ये पाठयक्रम युवाओं को ऐसा प्लेटफॉर्म प्रदान करते हैं जिससे वे न केवल एक बेहतर प्रोफेशनल बन सकते हैं, बल्कि एक अच्छे नेता, विचारक और उद्यमी भी। यदि कोई छात्र अपने करियर को व्यावसायिक दिशा में मोड़ना चाहता है, तो प्रबंधन शिक्षा निश्चित रूप से एक प्रभावशाली और सार्थक विकल्प है।

डॉ0 दिनेश रावत
असि. प्रोफेसर, मैनेजमेंट

गणित: जीवन का मौन संगीत

गणित केवल संख्याओं और सूत्रों का खेल नहीं है – यह तर्क, सौंदर्य और अनंत संभावनाओं की वह भाषा है, जिसमें ब्रह्मांड अपने रहस्य कहता है। हमारे कॉलेज के गणित विभाग में हम इसी मौन संगीत को सुनने, समझने और सिखाने का प्रयास करते हैं।

गणित न केवल विज्ञान की नींव है, बल्कि यह तकनीक, अर्थशास्त्र, कंप्यूटर साइंस, और यहाँ तक कि संगीत और कला की गहराइयों में भी समाहित है। एक समीकरण हल करना केवल उत्तर पाना नहीं होता – यह समस्या को समझने, सोचने, और धैर्यपूर्वक समाधान खोजने की यात्रा होती है।

भारतीय संस्कृति और ज्ञान परंपरा ने विश्व को अनेक अद्वितीय उपहार दिए हैं, जिनमें वैदिक गणित (Vedic Mathematics) एक विलक्षण रत्न है। यह गणना की वह कला है जो न केवल सरलता और तीव्रता प्रदान करती है, बल्कि मानसिक शक्ति, स्मरण शक्ति और तार्किक क्षमता का भी विकास करती है।

गणित विभाग में हमारा उद्देश्य केवल पाठ्यक्रम को पूरा करना नहीं, बल्कि विद्यार्थियों में तार्किक सोच, समस्या सुलझाने की क्षमता और विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण को विकसित करना है। हम उन्हें यह सिखाते हैं कि गणित डरने की नहीं, समझने की कला है।

हम चाहते हैं कि गणित को एक जीवंत विषय के रूप में देखा जाए तो नीरस और कठिन नहीं, बल्कि चमत्कारिक और उपयोगी है। इसके लिए हम आने वाले सत्रों में और अधिक नवाचारपूर्ण शिक्षण पद्धतियों को अपनाने की योजना बना रहे हैं।

गणित वह प्रकाश है जो अनिश्चिताओं के अंधेरे में भी दिशा दिखाता है। आइए, इस प्रकाश को मिलकर फैलाएँ।

डॉ0 खिलाप सिंह
असि0 प्रो0, गणित

आयुर्वेद की पारम्परिक चिकित्सा पद्धति

औषधीय एवं सुगन्धीय पौधों से सम्पन्न भारत देश में आयुर्वेद का प्राचीन काल से ही चिकित्सा जगत में एक अद्वितीय स्थान रहा है। औद्योगिकीकरण के फलस्वरूप चिकित्सा जगत में अवयवों को खोज तथा तत्काल निदान प्रक्रिया ने आयुर्वेद की परम्परागत चिकित्सा पद्धति को गम्भीर रूप से आहत किया है। आधुनिक चिकित्सा पद्धति रोगों के न केवल स्थाई निदान में अक्षम साबित हुई है वरन् इसके समान्तर दुष्प्रभावों के परिणाम भी लोगों को भुगतने पड़ते है। इसलिए आज आयुर्वेद का सम्मान हो हा है तो अपने गुणों के कारण जिससे जनसाधारण का ध्यान प्राकृतिक चिकित्सा पद्धति की ओर आकृष्ट हो रहा है और जड़ी बूटियों की महत्ता को पुनर्प्रतिष्ठा प्राप्त हो रही है। यही कारण है कि वर्तमान समय में राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर हर्बल उत्पादों एवं जड़ी बूटियां न केवल अपर्याप्त साबित हो रही है, बल्कि उनका अत्यधिक दोहन होने के कारण कई बहुमूल्य वनौषधि प्रजातियां (ब्रह्मकमल, चिरायता, कुटकी, अतीश, वनककड़ी आदि) विलुप्त होने के कगार पर खड़ी है।

भारत का उत्तराखण्ड राज्य प्राचीन काल से ही जैवविविधता एवं अनेकानेक प्राणदायिनी औषधि के लिए विश्व विख्यात रहा है तथा महत्वपूर्ण संजीवनी बूटी भी इस राज्य की ही देन थी। वेदों तथा आयुर्वेद मे वर्णित सोमलता, संजीवनी, कल्पवृक्ष, रूद्राक्ष, मांस रोहण आदि ऐसी वनस्पतियां है जो मनुष्य का कायाकल्प रखने की शक्ति रखते हैं। मानव मात्र में अभ्युदय के लिए हमारे ऋषि मुनियों ने उत्तराखण्ड को कार्यस्थली बनाया और हिमालय से निकली ज्ञान की किरणों ने समस्त विश्व को प्रकाशित किया है। प्राचीन काल में औषधि निर्माण एक व्यवसाय के रूप में नहीं था अपितु वैद्य स्वयं अपने रोगियों की

आवश्यकता के अनुसार औषधि निर्माण करते थे और आज समय के अन्तराल से व्यस्तता बढी और औषधि निर्माण एक व्यवसाय के रूप में विकसित हो चुका है। समय बीतने के साथ यह क्षेत्र मैदानी क्षेत्रों के सम्पर्क में आया तो यहां के अमूल्य प्राकृतिक सम्पदा का दोहन होना शुरू हुआ। फलतः यहां के अनुभवी व जागरूक लोगों ने प्रकृति के इस विनाशकारी दोहन को देखते हुए यह चिन्ता व्यक्त की कि इस प्रकार के बर्बरतापूर्ण दोहन से हमारी भावी पीढियां इस अनमोल धरोहर का सदुपयोग और उपयोग कदापि नहीं कर पायेगी। उन्होनें इस प्रकार के विनाश को रोकने के लिए परम्परागत ज्ञान के द्वारा प्रकृति का संरक्षण जगह-जगह पर उसे देव वन घोषित कर दिया। देव वनों से किसी प्रकार के दोहन पर सख्त मनाही होती थी यह उनकी एक विशिष्ट प्रकार की संरक्षण की पद्धति थी। हमारे पूर्वजों ने अपने पर्यावरण में उपस्थित उन असंख्य जड़ी बूटियों के गुणों को पहचानने की क्या प्रक्रिया अपनायी होगी यह अपने आप में एक शोध का विषय है बहुत सी जड़ी बूटियों का व्रत व पूजा-पाठ से जोड़ने का एक स्पष्ट कारण यह प्रतीत होता है कि जिससे इनका संरक्षण हेाता रहे साथ ही उनसे विभिन्न रूपों से लाभान्वित हो। इन जड़ी-बूटियां को आहार तथा औषध द्रव्य के रूप में विभाजित करके एक परम्परा स्थापित की गयी है। जिसका उपयोग हम चिकित्सा, सौन्दर्य प्रशाधन, पेय पदार्थो, खाद्य पदार्थो, धूप-अगरबत्ती, कीटनाशी पदार्थो इत्यादि के रूप में करते आ रहे हैं।

जब से संसार के अन्दर मानव की उत्पत्ति हुई, तब से ही रोग की भी उत्पत्ति हुई है। ऋग्वेद औषधीय पौधों के विषय में जानकारी प्रदान करने वाला प्रथम प्रमाणिक ग्रन्थ है। रामायण काल में मेघनाद द्वारा इन्द्रवज्र में प्रहार करने के कारण, लक्ष्मण को मूर्छा अवस्था से वापस चिर अवस्था में लाने के लिए ही हनुमान को हिमालय पर्वत से संजीवनी बूटी लानी पड़ी थी जो आज लगभग विलुप्त हो चुकी है। इसलिए यह जड़ी-बूटी विज्ञान आज पूरे विश्व में रोगों के निवारण के लिए सबसे आगे है। अथर्ववेद, जिसकी रचना ऋग्वेद के पश्चात् हुई है उसमें औषधीय पौधों का और भी अधिक विस्तृत वर्णन पाया जाता है। मगर उस समय इन वनस्पतियों का उपयोग जादू टोने में किया गया है। ज्यों-ज्यों औषधि विज्ञान के ज्ञान का विस्तार होता गया त्यों-त्यों इस विषय की महत्ता बढ़ती गयी और क्रमशः इस विज्ञान ने एक स्वतन्त्र शास्त्र का रूप धारण कर लिया जिसका नाम आयुर्वेद हुआ। आर्युवेद के इतिहास में महर्षि आजेय और धन्वन्तरि का नाम आता है जो क्रमशः सम्प्रदाय महर्षि सुश्रुत के गुरू थे। महर्षि चरक और सुश्रुत आयुर्वेद के स्तम्भ में प्रसिद्ध हुए। महर्षि चरक की चरक संहिता को औषधीय गुणों के आधार पर 45 भागों में विभाजित किया गया जिसमें काढा, चूर्ण, गोली, अर्क, तेल, भस्म, रसायन आदि का उपयोग करने का उल्लेख किया गया है। जबकि सुश्रुत-संहिता के अन्दर हमको 700 वनस्पतियों का उल्लेख मिलता है।

- **नो साइड इफैक्टः-** आयुर्वेदिक दवाइयों के बारे में अक्सर कहा जाता है कि इनका शरीर पर कोई बुरा प्रभाव नहीं होता है। लेकिन आज बढ रहे मृदा और जल प्रदूषण से औषधीय पौधों पर भी बुरा प्रभाव पड़ता है जिसका बुरा प्रभाव आयुर्वेदिक उत्पादों पर भी हो सकता है तथा दूसरी तरफ अगर इलाज किसी अनुभवी पारम्परिक वैद्य द्वारा नहीं किया गया तो हो सकता है कि रोगी पर इसका बुरा प्रभाव भी पड़ सकता है। आयुर्वेदिक पद्धति कोई जादुई करिश्मा नहीं है बल्कि जीवन की गुणवत्ता सुधारने के साथ-साथ पुरानी बीमारी का इलाज करने में भी सक्षम है।
- **रोग को दबाते नहीं जड़ से उखाड़ते हैंः-** एलोपैथिक चिकित्सा पद्धति के तहत बीमारी को नहीं देखा जाता है बल्कि बीमारी का पता लगाकर उसे दबाने की कोशिश की जाती है। जबकि महत्वपूर्ण जड़ी बूटियों से बनी हुई आयुर्वेदिक दवाओं का जोर बीमारी को बढ़ाकार बीमारी को जड़ से खत्म करने पर रहता है। प्राचीन चिकित्सा पद्धति के प्रति लोगों की बढ़ती दिलचस्पी से न केवल झोलाछाप डाक्टरों की करतूते आडे बनकर आती है, बल्कि ऐलोपैथिक की मुश्किलें भी बढ़ जाती है। चिकित्सा की दोनों पद्धतियों के दर्शन और देखने के अन्दाज मे अन्तर की वजह से समस्या और अधिक गम्भीर हो जाती है। एलोपैथिक और सिंथेटिक दवाओं के मानक आयुर्वेद के लिए मान्य नहीं हो सकते हैं। एलोपैथिक के तहत डायबिटीज की दवा शुगर स्तर में कमी लाती है। वहीं आयुर्वेदिक दवा इससे सम्बन्धित बिमारियों जैसे - जोड़ो का दर्द, ग्लूकोमा, कमजोर रोग प्रतिरोधक शक्ति और कमजोरी का भी ख्याल रखती है। यही कारण है कि आज भी उत्तराखण्ड के पर्वतीय क्षेत्रों में 80-82 प्रतिशत जनसंख्या अपने इलाज के लिए आयुर्वेद पर ही निर्भर है।
- **खास जड़ी बूटियांः-** मध्य हिमालय का यह भू-भाग वनौषधियों का अपार भण्डार है। तथा उत्तराखण्ड का हिमालयी क्षेत्र प्राचीन काल से ही बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के लिए प्रसिद्ध रहा है। यहां की वनस्पतिक प्रजातियों के औषधीय गुणों से प्रभावित होकर ही महर्षि चरक ने लिखा था''हिमनौषधि भूमीनाय श्रेष्ठय'' दूरस्थ अनाधिगम्य स्थानों में रहने के कारण यहां के जन समुदाय मुख्यतः परम्परागत उपचारों पर निर्भर रहते हैं। ये स्वयं उगाये गये और प्रकृति से संग्रहित की गयी

जड़ी बूटियों का प्रयोग करते रहते हैं। कूट, कुटकी, अतीश, चिरायता, सत्तावर, हत्थाजड़ी, चौरू, ब्रह्मी, पाषाणभेद, चन्द्रा, बज्रदंती, डोलू/आर्चा आदि।

आज भारत वर्ष में लगभग 4500 (साढे चार हजार) प्रजातियां औषधीय श्रेणी में आती है और 9 हजार से भी अधिक औषधीय निर्माण शालायें है जिसमें 80% भारतीय तथा 20% बहुराष्ट्रीय है। पूरे विष्व में आज 3 लाख करोड रूपये की जड़ी बूटी से बनी औषधियों की बिक्री हो रही है। लगभग 400 औषधीय पादप भारतीय चिकित्सा पद्धति में प्रयोग किये जाते हैं। उनमें से लगभग 122 जातियों की जड़, राइजोम तथा ट्यूबर, 55 जातियों के फल, 47 जातियों के बीज, 42 जातियों की छाल, 24 जातियों की पत्तियां, 21 जातियों के फूल, 55 जातियों के पंचाग, 10 जातियों के तने, 15 जातियों की भीतरी लकड़ी 09 जातियों के दूधिया इस इत्यादि प्रयोग किये जाते हैं।

औषधीय पौधों को इकट्ठा करने का एक निश्चित समय होता है। उपयोग समय - सितम्बर से मार्च के बीच होता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन की नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार आने वाले 20 सालों मे एलोपैथिक एंटीबायटिक दवा मनुष्य के शरीर पर असर करना बन्द कर देगी, यानी शरीर एंटीबायटिक के प्रति इम्यून हो जायेगा। इसलिए आज इस वैज्ञानिक युग मे आवश्यकता है कि इन बहुमूल्य वनौषधियों की खेती करके इनका संरक्षण किया जाये, तथा साथ ही मांग के अनुसार गुणवत्तापूर्णक उत्पाद तैयार किया जाये ताकि रोजगार के अवसर भी सुनिश्चित हो सके और उत्तराखण्ड को आयुष प्रदेश बनाने का सपना भी आसान हो सके।

''जल जीर्णमग्नि कवलितमकालजातं कृमिक्षतषरिरमए न्यूनंतथाधिकं वा द्रव्य मद्रन्यं जनुः भिषज

(अर्थात उचित मात्रा से कम अथवा अधिक मात्रा में ली हुई औषधि बेकार/फलरहित होती है।)

डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोन्दणी
असि0 प्रो0, वनस्पति विज्ञान

मैं कौन हूँ –एक तर्क

''तर्क आपको A से B तक ले जाएगा, कल्पना आपको हर जगह ले जाएगी'' - अल्बर्ट आइंस्टीन

कल्पना कीजिए कि कुछ बच्चे हैं जिन्हें जंगली जानवरों ने पाला है। वे उस माहौल में, जानवरों के बीच में पले-बढ़े हैं और उनके जैसे ही हो गए हैं। उनके पास भाषा भी नहीं है, वे जानवरों की तरह ही आवाज निकालते हैं और उन्हीं की तरह चलते हैं। जब इनको मानव समाज में वापस लाया गया तब भी यह सामान्य नहीं हो पाए। क्या ? यह सवाल करते होंगे कि 'मैं कौन हूं'?

यह सवाल कहां से आता है? यह सवाल आता है 'समझ'से। हम जिस परिवेश में पले-बढ़े हैं, हम सवाल करते हैं। हमारी 'समझ' सवाल करती है और 'समझ' बहुत सारी चीजों से मिलकर पैदा होती है।

माहौल सबसे बड़ी बात है, भाषा भी एक कारक है। हम पढ़ते हैं, सोचते हैं। हमारी सांस्कृतिक, पारिवारिक, सामाजिक ताना-बाना और धार्मिक अवधारणाएं, ये सभी मिलकर हममें एक 'समझ' पैदा करती हैं।

मुझे लगता है कि 'समझ' सापेक्ष है उन सभी कारणों के सापेक्ष जो मेरे जन्म के बाद मुझे मिले, जिनमें चयन करने की कोई स्वतंत्रता नहीं थी। शायद धार्मिक एवं सामाजिक ढांचे की प्रथम खुराक ही मनुष्य की नैसर्गिक चेतना की स्वतंत्रता को खा जाना हो। इस पृथ्वी में मनुष्य ही एक ऐसा प्राणी है जो कई हद तक शारीरिक रूप से अविकसित जबकि पूर्ण रूप से मानसिक अविकसित पैदा होता है, और यही मौका है जिसमें सामाजिक और धार्मिक परिवेश उस अविकसित मस्तिष्क को अपने ही रंग में रंगकर, अपने वजूद की अमिट परत चढ़ाकर, शरीर को पोषित कर मानव के रूप में गढ़ता है। इस परत को खुरचने में मेरी कोई दिलचस्पी नहीं है, तो फिर लौट चलते हैं इस प्रश्न पर कि 'मैं कौन हूं'? मुझे लगा कि मैं एक छात्र हूं - विज्ञान का। मैं भौतिक विज्ञान का वही छात्र हूं जो प्रकृति की सभी घटनाओं को अचंभित होते हुए देखता है, जबकि मेरी समझ जो कभी इस सामाजिक-धार्मिक ताने-बाने में तथाकथित मूकदर्शक बनी रहती थी।

खैर, अब तर्क से कल्पना (imagination) के इस सफर में मैं एक छात्र हूं, और मेरे लिए प्रकृति एक प्रयोगशाला है जिसमें तथ्य एवं परिणामों के आधार पर तर्कसंगत 'समझ' पैदा होती है, और इस तर्कसंगत समझ के चयन का अधिकार मेरे पास सदा

सुरक्षित रहा है।

सदियों से प्रकृति के रहस्यों को धार्मिक आधार पर संदर्भित किया गया, जिसमें अनसुलझे प्रश्नों को भगवान की रचना में मनुष्य के लिए गैर-जरूरी बताकर किनारे कर लिया गया। उदाहरण के लिए, मकड़ी इतनी सटीकता से जाला कैसे बुनती है कि इसका जवाब यह देकर टाल दिया गया कि मकड़ी का जाला और उसकी कला मनुष्य के लिए गैर-जरूरी हैं, इसलिए धर्मग्रंथों में इसका उल्लेख नहीं होना स्वाभाविक है।

यूं ही मान जाने की अवधारणा के विपरीत, एक छात्र के रूप में मैंने (थेल्स ऑफ मिलेट्स) 7वीं और 6वीं शताब्दी ईसा पूर्व यह घोषणा की कि प्रत्येक घटना का एक प्राकृतिक कारण होता है, और मुझे एक छात्र के रूप में विज्ञान का जनक कहा जाने लगा।

प्राचीन भारत में न्याय-वैशेषिक दर्शन के महर्षि कणाद के रूप में मैंने 600 ईसा पूर्व परमाणु सिद्धांत से पदार्थ (Matter) को अविभाज्य कणों के रूप में समझा। 384-322 ईसा पूर्व में, मैंने (अरस्तु - प्लेटो का एक छात्र) इस अवधारणा को बढ़ावा दिया कि भौतिक घटनाओं का अवलोकन अंततः उन्हें नियंत्रित करने वाले प्राकृतिक नियमों की खोज की ओर ले जा सकता है। मैंने चार तत्वों (पृथ्वी, जल, वायु और अग्नि) के सिद्धांत के साथ गति (Motion) जैसे विचारों को भौतिकी का रूप देकर समझने का प्रयास किया। मेरी तार्किक समझ में ये चार स्थलीय तत्व अंतर-परिवर्तन करने में सक्षम हैं और अपने प्राकृतिक स्थान की ओर बढ़ते हैं - इसलिए एक पत्थर ब्रह्मांड के केंद्र की ओर नीचे गिरता है, लेकिन लपटें अपनी परिधि की ओर ऊपर उठती हैं।

मैं (Sir Isaac Newton) सन् 1687 ईस्वी में 'प्रिंसिपिया' ग्रंथ के माध्यम से आधुनिक भौतिकी की नींव रखी, जिसमें गति के तीन नियम और सार्वभौमिक गुरुत्वाकर्षण को दुनिया के समक्ष रखा। मैंने गैलीलियो की नजर से चंद्रमा की खुरदरी सतह, बृहस्पति के चार उपग्रह (गैलिलियन चंद्रमा), शुक्र के चरण और शनि के वलयों को देखा, जिससे मानव जाति इस नीले ग्रह से बाहर के ब्रह्मांड को जानने को उत्सुक हुई।

मैंने (Christiaan Huygens) सदियों से अचंभित करने वाली घटना 'प्रकाश' (Light) को तरंग (Wave) के रूप में पहचाना, लेकिन रूढ़िवादियों को अपने अस्तित्व पर खतरे के कारण मुझे कारागार में डाल दिया गया। फिर 200 वर्षों बाद, 1801 में मैंने थॉमस यंग के नाम से अपने ही सिद्धांत को प्रयोगात्मक तरीके से सिद्ध किया — Young Double Slit Experiment — और दुनिया ने 'प्रकाश' को पुनः मेरी नजर से देखना शुरू किया।

19वीं सदी में मैंने (Volta) पहली बैटरी बनाई और मैंने (Michael Faraday) विद्युतचुंबकीय प्रेरण (Electromagnetic Induction) की खोज की। मैंने ही क्लासिक भौतिकी (Classical Physics) से प्रकृति को समझने में एक कदम बढ़ाया, जबकि 20वीं सदी में मैंने (Albert Einstein) सापेक्षता के सिद्धांत से समय और स्थान (Space and Time) की हमारी समझ को ही बदल दिया और गैलीलियो के ब्रह्मांड की क्रियाविधि को नजदीकी से समझा।

मैंने (Albert Einstein) 1891 के हर्ट्ज के Photoelectric Experiment को 1905 में समझाया और आधुनिक युग की ग्रीन एनर्जी का बीज बोया। मैंने (Max Plank) ही Classical Theory के अनसुलझे सिद्धांतों को Quantum Physics से समझने का प्रयास किया और महर्षि कणाद के परमाणु के उप-परमाणु स्तर पर व्यवहार का वर्णन किया। मैंने ही इलेक्ट्रॉन, प्रोटॉन और न्यूट्रॉन की खोज की, और मैंने (J- Robert Oppenheimer) ही दुर्भाग्य से अपने विनाश पर तुले इस मानवजाति को पहला परमाणु बम दिया। मैं कभी भी इस सृष्टि का रचनाकार नहीं रहा, पर विनाशक तो बन ही गया हूं। मैं ही हूं जो विज्ञान को अपनी विलासिता के लिए प्रयोग कर रहा हूं, जबकि मैं इस सत्य से कभी भी अनजान नहीं रहा हूं कि इस ब्रह्मांड में केवल यही मेरा और मेरी आने वाली पीढ़ी का घर है।

तो फिर सवाल आता है कि एक छोटे से जंगल में शिकार-संग्रह जीवन से आज मैं एक वैश्विक स्तर पर भोजन से इतर वर्चस्वमय जीवनशैली जीने की मेरी नैसर्गिक अभिलाषा है या भ्रम? यदि ऐसा नहीं है तो 'मैं कौन हूं'? यदि भ्रम है, तो क्या मैं भी किसी की AI संरचना हूं - पता नहीं।

इस लेख में मैंने बहुत ही संक्षिप्त में मानव (मैं) को एक उत्सुक, तर्कशील परंतु भ्रमित छात्र के रूप में परिभाषित किया है, जो मेरे व्यक्तिगत विचारों का एक छोटा सा अध्याय है। इसमें मैं अपने आपको इस पृथ्वी के उस प्राणी के रूप में पाता हूं जो हर कालखंड में अपने अस्तित्व की साख को अलग-अलग रूप से इस प्रकृति की समझ परिभाषित कर, 'केवल जीने की इच्छा' से लेकर 'अपने मन मुताबिक जीने' तक का सफर तय करता चला जा रहा है। और जब भी थकता हूं, तो ऊपर आसमान में सूर्य को देखकर सोचता हूं कि बस स्वच्छंद रूप से चलता ही जाऊं - बस इस अनंत क्षितिज पर चलता ही जाऊं - जब तक यह सूर्य मुझे निगल न ले।

डॉ0 आलोक सिंह कण्डारी
असि0 प्रो0 भौतिक विज्ञान

मैं पुस्तकालय हूँ

परिचय - पुस्तकालय एक ऐसा स्थान है जहाँ विभिन्न प्रकार की जानकारी, ज्ञान और सूचना स्त्रोतों को व्यवस्थित रूप से संग्रहित किया जाता है, ताकि उन्हें सरलता से उपयोग के लिए उपलब्ध कराया जा सकें। पुस्तकालय शब्द का अर्थ पुस्तक+आलय अर्थात् पुस्तकों का घर। पुस्तकालय शब्द अंग्रेजी भाषा के शब्द लाइब्रेरी (Library) का हिन्दी रूपान्तरण है।

लाइब्रेरी शब्द की उत्पति लैटिन भाषा के शब्द लिबर (Liber) से हुयी है जिसक अर्थ है पुस्तक। हमारे देश में पुस्तकालय के जनक डॉ0 शयाली राममृत रंगनाथन (1892-1972) को कहा जाता है। जो एक आविष्कारक, शिक्षक, दार्शनिक, गणितज्ञ और सार्वभौम ग्रंथालयी थे। उन्होनें पुस्तकालय क्षेत्र में कई महत्वपूर्ण योगदान दिए है। उनके द्वारा किया गया एक मौलिक योगदान पुस्तकालय विज्ञान के पांच सूत्र है। जो निम्नलिखित हैः-

1. पुस्तकें उपयोग के लिये है। (Books are for use.)
2. प्रत्येक पाठक को उसकी पुस्तक मिले। (Every reader has his/her book.)
3. प्रत्येक पुस्तक को उसका पाठक मिले। (Every book has its reader.)
4. पाठक के समय की बचत हो। (Save the time of the reader.)
5. पुस्तकालय एक वर्धनशील संस्था है। (Library is a growing organism.)

इन सूत्रों की मदद से किसी भी पुस्तकालय को समृद्धशाली बनाया जा सकता है।

हमारे महाविद्यालय का पुस्तकालय रा0 व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल) को वर्ष 2021 में स्थापित किया गया, तभी से यहाँ पुस्तकालय की भी शुरूआत हुई थी। पुस्तकालय हमारे शैक्षणिक जीवन में शिक्षा और ज्ञान का महत्वपूर्ण स्थान है और इसके लिये एक समृद्ध और सुव्यवस्थित पुस्तकालय का होना अत्यंत आवश्यक है। एक पुस्तकालय कर्मचारी के रूप में मुझे गर्व है कि हमारे महाविद्यालय का पुस्तकालय ज्ञान के एक महत्वपूर्ण स्रोत के रूप में स्थापित है।

हमारे महाविद्यालय के पुस्तकालय में वर्तमान में 11 विषयों के पाठ्यक्रमों की 2436 पुस्तकें एवं बैठ कर पठन-पाठन कार्य के लिये अध्ययन कक्ष की सुविधा उपलब्ध है। इसके अलावा हमारे पुस्तकालय में न्यूज पेपर, सामान्य ज्ञान व अन्य पुस्तकें भी उपलब्ध है, जो छात्र-छात्राओं के शैक्षणिक और व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

निष्कर्ष - प्रिय छात्र-छात्राओं हमारे महाविद्यालय का पुस्तकालय आपके शैक्षणिक जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। इसका सही और नियमित उपयोग करें, ताकि आप अपने शैक्षणिक व व्यक्तिगत क्षेत्र में नई ऊँचाई प्राप्त कर सकें।

मै आप से आग्रह करता हूँ कि आप लाइब्रेरी की सुविधाओं का अधिकतम लाभ उठाएँ और अपने ज्ञान का निरंतर विस्तार करें।

हमारे महाविद्यालय के पुस्तकालय पर कुछ पंक्तियां निम्नलिखित है-

मैं हूँ राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय का पुस्तकालय,
करता हूँ मैं ज्ञानजगत और समृद्धशाली की बातें।
मेरे भण्डार में है विभिन्न पाठ्यक्रम की पुस्तकें
जिन्हे पढ़ने आते है, महाविद्यालय के छात्र-छात्राएं।
जिनमें है कुछ बी०ए०सी० और फूड सांइस के विद्यार्थी
तो कुछ है बी०बी०ए० और बी०सी०ए० के विद्यार्थी।
इनमें कुछ विद्यार्थी पढ़ते है मेरे अध्ययन कक्ष में
तो कुछ विद्यार्थी ले जाते है पुस्तकें अपने घर में।
महाविद्यालय के प्राध्यापक भी आते है मेरे पास
जिससे होते है उनके पठन-पाठन कार्य आसान।
मेरे पास है न्यूजपेपर व सामान्य ज्ञान की पुस्तकें
जिनसे मिलती है सबको देश-दुनिया की खबरें।
सभी छात्रों और प्राध्यापकों को मिलती है यहाँ पुस्तकें
जिनसे सबको मिलती है अपने जीवन में सफलताएं।
मैं हूँ राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय का पुस्तकालय,
करता हूँ मैं ज्ञानजगत और समृद्धशाली की बातें।

अनूप सिंह
पुस्तकालय लिपिक

उत्तराखंड में बंजर होती कृषि भूमि एक विकराल समस्या

हमारे देश में वक्त के साथ-साथ तकनीकी विकास में ग्रामीण क्षेत्र की संस्कृति, आर्थिक स्थिति,स्वरोजगार एवं लोगों की जनसंख्या कम होती जा रही है। जिसके कारण शहरों की तरफ लोगों का पलायन बढ़ता जा रहा है।

उत्तराखंड राज्य अपने आप में एक सर्वोपरि राज्य है जो सदियों से अपने इतिहास, संस्कृति, धार्मिक स्थलों एवं क्रियाकलापों के कारण प्रसिद्ध है। उत्तराखंड राज्य के अधिकतम क्षेत्र में पहाडी इलाके हैं जिसमें लोगों का रहन-सहन ग्राम वासियों के रूप में। पहाडी जीवन ने उत्तराखंड को उसके अस्तित्व एवं संस्कृति से जोड़ा है । परंतु बीते कुछ दशकों से लोग अपनी भूमि को छोड़कर शहरीकरण कर रहे हैं जिसे हम पलायन के नाम से जानते हैं और इसका दुष्परिणाम हमारी देवभूमि को झेलना पड रहा है ।

समस्याएं-

- उत्तराखंड से पलायन करने के दो बहुत मुख्य कारण है पहले तो लोगों का शहरी रोजगारों की तरफ रुचि बढ़ना तथा स्वरोजगारों में रुचि कम होते जाना, जिसके कारण उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में लगातार तेज गति से लोगों की जनसंख्या कम होती जा रही है। जनसंख्या कम होने के कारण ग्रामीण क्षेत्रों में घर एवं जमीनें लगातार बंजर होती जा रही है और यह सिलसिला हमारी देवभूमि की शान पर एक बड़ा खतरा बन चुका है।
- हमारा देश भले ही तरक्की के साथ आगे बढ़ रहा हो परंतु अभी भी हमारे उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों की जागरूकता, सोच एवं साक्षरता दर न्यूनतम है, इसीलिए हमारे उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को इस विषय का एहसास नहीं है कि पलायन होने से भविष्य में उन्हीं के लिए यह सर्वनाश का कारण बन रहा है। जमीनों को बंजर छोड़ने से लोग अपनी खेतीबाड़ी का काम भी कम करते जा रहे हैं, इसके कारण उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को बाजारी सामानों पर निर्भर होना पड रहा है जो कि अपने आप में ही देवभूमि के वासियों के लिए एक बहुत ही शर्मनाक बात है।
- हाल ही की खबरों से यह जानने को मिल रहा है कि उत्तराखंड सरकार अगले साल 2026 में उत्तराखंड के ग्रामीण क्षेत्र की बंजर जमीनों पर कार्यवाही करना चाहती है तथा उन्होंने यह निर्णय लिया है कि ग्रामीण क्षेत्रों में जो जमीन बंजर है और भविष्य में उन पर अगर उनके मालिकों द्वारा कोई कार्य नहीं किया जा रहा है तो उन जमीनों पर सरकार का हक हो जाएगा । दूसरी ओर भले ही भू कानून के लिए उत्तराखंड की सरकार ने पार्लियामेंट हाउस में अपनी मांग रखी है परंतु अभी यह नियम लागू नहीं हुआ है तो अभी भी वर्तमान समय में विदेशी लोग यहां आकर जमीनों का सौदा कर सकते हैं।
- अगर उत्तराखंड की जमीनों पर विदेशी लोगों का एवं सरकार का अधिकार रह जाएगा तो यह उत्तराखंड की संस्कृति एवं धरोहर के नाश का बहुत बडा कारण बन जाएगा ।

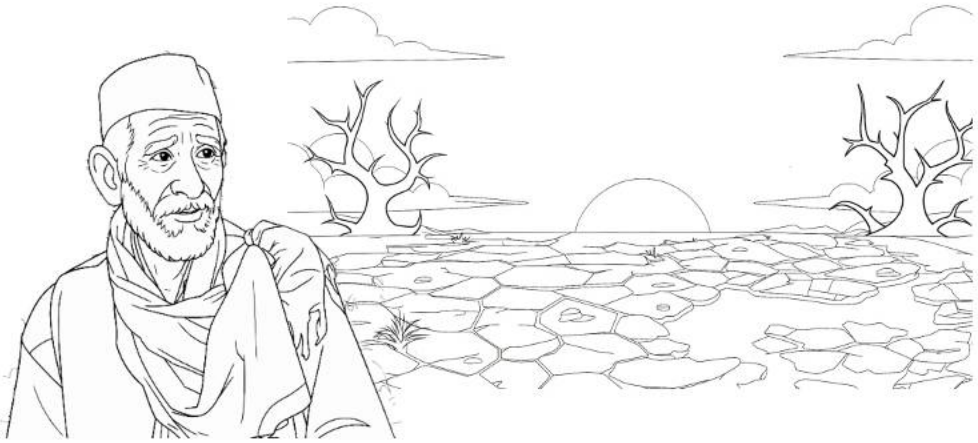

समाधान-

- अगर हमें इस समस्या का समाधान करना है तो अपनी बंजर जमीनों में पुनः जान डालनी होगी ताकि उसी जमीन पर सिर्फ हमारा एवं हमारी आने वाली पीढ़ियों का अधिकार रहे ना कि सरकार और विदेशी सौदागरों का।
- 1973 से चले चिपको आंदोलन, तिलाड़ी, डुंडी पैतोली, खिराकोट, मैती, पाणी राखो, रक्षासूत्र, छीनो झपटो तथा आजकल चल रहे समलौण इस समस्या को कम करने के लिए अपना सहयोग देने को पूर्ण रूप से तैयार है। जो व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से अपने बंजर जमीनों का पुन निर्माण करने में सक्षम नहीं है वह व्यक्ति इन आंदोलन द्वारा अपनी बंजर जमीनों में पौधे लगा सकते हैं ताकि उन पौधों के कारण उसे जमीन पर उस व्यक्ति का अधिकार बना रहेगा और पौधे लगाने से हमारा पर्यावरण संतुलन भी बना रहेगा जो कि हमारे भविष्य के लिए सर्वोपरि होगा।
- हमारे उत्तराखंड के इतिहास में एवं संस्कृति में न जाने कितने ऐसे तरीके हैं ऐसे क्रियाकलाप है जो की हमको हमारे अस्तित्व से जोडने के लिए सहयोग करता है। आज हमारी देवभूमि और जन्मभूमि का भविष्य सिर्फ हमारी सोच एवं हमारे स्वदेशी से जुडे प्रेम पर निर्भर है अगर हमें हमारी भूमि उत्तराखंड की शान को बनाए रखना है तो हमें उस पर आने वाली समस्या का लगातार समाधान करते रहना होगा।

साहिल गोदियाल
बी.एस-सी. 5th सेम

उत्तर भारत का प्रसिद्ध राहु इंद्रेश्वर मंदिर

उत्तराखण्ड को यूं ही देव भूमि नहीं कहा जाता है, यहाँ एक से बढ़कर एक मंदिर मौजूद है साथ ही इन मंदिरो के रहस्य और पौराणिक कथाएं काफी प्रचलित है। देवों की इस भूमि में देवताओं के साथ-साथ असुर भी पूजे जाते हैं, साथ ही यहाँ शुभ ग्रह भी पूजे जाते हैं और अशुभ ग्रह भी। इस देव भूमि में स्थित एक ऐसा मंदिर जहाँ राहु और शिवजी की पूजा की जाती है। सबसे पहले बता दें कि मंदिर पौड़ी जिले में पैठाणी नामक गांव में स्योलीगाढ़ नदी (रथवाहिनी नदी) और नवालिका (पश्चिमी नयार नदी) के संगम पर स्थित है।

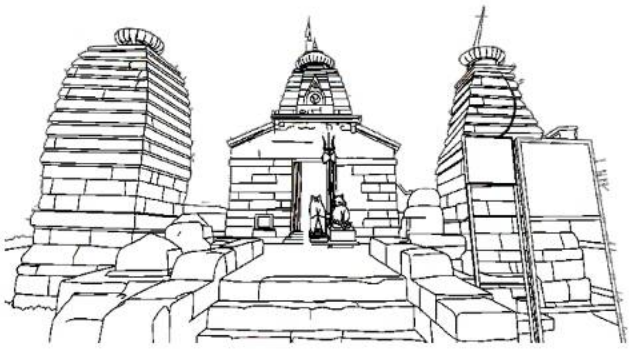

ऐसा कहा जाता है कि शायद ये मंदिर पूरे उत्तर भारत में एकलौता राहु का मंदिर है, हालांकि दक्षिण भारत में भी एक ऐसा मंदिर है, लेकिन वहाँ केतु के साथ राहु की पूजा की जाती है, मान्यता है कि इस मंदिर का निर्माण आदि शंकराचार्य जी ने करवाया था। इस मंदिर को लेकर एक यह मान्यता यह भी है कि इसका निर्माण पांडवों ने किया, जब पाण्डव स्वर्गारोहिणी यात्रा पर थे तब राहु दोष से बचने के लिए पाडवों ने भगवान शिव और राहु की पूजा की थी और उन्होनें इस मंदिर को स्थापित किया होगा।

इस मंदिर में राहु के साथ शिवजी की पूजा भी की जाती है, दरअसल इस मंदिर के गर्भगृह में शिवलिंग स्थापित है, मंदिरों की दीवारों पर राहु के कटे-सिर के साथ-साथ भगवान विष्णु के सुदर्शन की कारीगरी भी की गई थी। लोगों का मानना है कि यहाँ पूजा करने से राहु दोष से मुक्ति मिलती है।

अंजली भट्ट
बी.एस-सी. 5th सेम

मेरा उत्तराखण्ड

उत्तराखण्ड अपनी खूबसूरत गढ़वाली और कुमाऊंनी संस्कृति के लिए जाना जाता है। विभिन्न परंपराएं, धर्म, मेले, त्यौहार लोकनृत्य, संगीत उन्हें अलग-अलग पहचान देते हैं।

गढ़वाली संस्कृति-गढ़वाली यहाँ बोली जाने वाली मुख्य भाषा है जिसमें जौनसारी, मरंची, जाधी और सैलानी सहित कई बोलियाँ भी है। गढ़वाल में कई जातीय समूहों और जातियों के लोग रहते हैं इनमें राजपूत शामिल हैं जिसके बारे में माना जाता हैं, कि वे आर्य मूल के हैं। ब्राह्मण, जो राजपूतों के बाद यहाँ आए, गढ़वाल के आदिवासी जो उत्तरी इलाकों में रहते हैं। जिनमें जौनसारी, जान्ध, मरचा और वन गूजर शामिल हैं।

कुमाऊंनी संस्कृति - कुमाऊँ के लोग 13 बोलियाँ बोलते हैं, जिनमें कुमैया, गंगोला, सोरयाली, सिराली, अस्कोटी, दानपुरिया, जोहारी, चौगढर्याली, माझ कुमैया, खसपर्जिया, पछाई और रौचौभासी शमिल हैं, कुमाऊँ अपने लोक साहित्य में भी समृद्ध हैं, कुमाऊँ का सबसे लोकप्रिय नृत्य "छोलिया" हैं, सभी त्यौहार बहुत उत्साह के साथ मनाए जाते है।

उत्तराखण्ड के लोक नृत्य- उत्तराखण्ड के लोगों का जीवन संगीत और नृत्य से भरपूर है कुछ लोक नृत्य इस प्रकार है-

- बरदा नाटी देहरादून जिले के जौनसार भावर क्षेत्र का लोकप्रिय नृत्य हैं।
- लंगवीर नृत्य पुरूषों द्वारा किया जाने वाला एक कलाबाजी नृत्य हैं।
- पांडव नृत्य संगीत और नृत्य के रूप में महाभारत का वर्णन हैं।
- धुरंग और धुरिंग भोटिया आदिवासियों के लोकप्रिय लोक नृत्य हैं।

उत्तराखण्ड का भोजन-उत्तराखंड के भोजन में गढवाली और कुमाऊंनी व्यंजन हैं, जो इसके दो मुख्य क्षेत्र हैं। व्यंजन सरल और स्थानीय रूप से उगाए जाते हैं, जिसमें जटिल मसालों का इस्तेमाल नहीं होता हैं, कुछ व्यंजन इस प्रकार हैं- उड़द दाल के पकौड़े, झंगोरे की खीर, दाल से बना फाणू, चैंसू (काले चने की दाल), भांग की चटनी।

उत्तराखण्ड के त्यौहार-उत्तराखण्ड में कई तरह के त्यौहार और मेले मनाए जाते हैं जिनमें से कुछ निम्न है, हरेला, फूलदेई, नंदा देवी मेला, कुंभ मेला, गंगा दशहरा, बसंत पंचमी, होली, नवरात्री, दीपावली आदि।

कंचन
बी.एस-सी. 6th सेम

दूधातोली पर्वत

दूधातोली उत्तराखण्ड की एक प्रमुख पर्वत श्रृंखला है, जिसे उत्तराखण्ड का पामीर भी कहा जाता है। यह उत्तराखण्ड में पौड़ी जिले के थलीसैंण ब्लॉक के पास से शुरू होती है, फिर गैरसैंण पश्चिमी सीमा और पौड़ी में स्योली खण्ड इसका सबसे उत्तरी भाग हैं। इसकी ऊँचाई लगभग 2000 से 2400 फीट के बीच है।

भौगोलिक और पर्यावरणीय महत्वः- यह पर्वत अनेक जलधाराओं और पाँच बारहमासी नदियों का स्रोत है जो कि इसका आकर्षण है। यहाँ से निकलने वाली प्रमुख नदियाँ जैसे - पूर्वी नयार, पश्चिमी नयार, रामगंगा आदि है। इस पर्वत श्रृंखला में घने जंगलो के कारण यह क्षेत्र जैव विविधता से समृद्ध है। जहाँ पर बाघ, गुलदार, भालू और अन्य वन्य जीवों की प्रजाति पाई जाती है। यह क्षेत्र अनेक प्रकार के पेड़-पौधों, वनों का घर है, जिनमें औषधीय पौधे, उष्ण कटिबन्धीय चीड़, हिमालयी नम शीतोष्ण और शंकुधारी वन शामिल है।

सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व :- दूधातोली पर्वत का इतिहास भी बड़ा रोचक है, ब्रिटिश काल के दौरान इस क्षेत्र के चरगाहों का स्थानीय समुदायों के लिए बड़ा महत्व था। यहाँ के लोग पशुपालन करते थे और इन चारागाहों पर उनका अधिकार था। अगर देखा जाए तो दूधातोली क्षेत्र ने कई स्वतन्त्रता सेनानियों ने भी अपनी इस मातृभूमि में जन्म लिया है। जिनमें वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली का नाम सबसे प्रमुख है, कोढिया-बगड़ में उनकी समाधि भी है, जहाँ हर साल 12 जून को विशाल मेला आयोजित किया जाता है और आज भी वीर चन्द्र सिंह गढ़वाली को और उनके योगदानों को याद किया जाता है।

पर्यावरणीय चुनौतियाँ :- हालाँकि दूधातोली पर्वत की प्राकृतिक सुन्दरता और जैव विविधता अद्वितीय है, परन्तु यहाँ पर्यावरणीय चुनौतियां भी बड़ी गम्भीर है। वनस्पतियों की अंधाधुंध कटाई और चारागाहों का अत्यधिक उपयोग इस क्षेत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डाल रहे हैं, जलवायु परिवर्तन और मानव हस्तक्षेप के कारण इन नदियों और जंगलो के प्राकृतिक प्रवाह में परिवर्तन देखा जा रहा है जो पूरे क्षेत्र के पर्यावरणीय सन्तुलन को प्रभावित कर रहा है।

निष्कर्ष :- दूधातोली पर्वत न केवल उत्तराखण्ड की प्राकृतिक सुन्दरता का प्रतीक है, बल्कि यह भारतीय संस्कृति और इतिहास से भी गहरे तौर पर जुड़ा हुआ है। इस क्षेत्र के संरक्षण के लिए हमें पर्यावरणीय चेतना और सतत् विकास की दिशा में कदम बढ़ाने की आवश्यकता है। यह पर्वत हमारे लिए ही नहीं बल्कि हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए भी अमूल्य धरोहर बनेगा।

खुशबू भट्ट
बी.एस.सी. 5th सेम

आज भी कल सा ही है

राज एक छोटे से शहर में रहने वाला 20 वर्षीय युवक था। वह एक साधारण परिवार में जन्मा था। उसके पिताजी स्कूल में अध्यापक थे। बचपन से ही राज पढ़ाई में ठीक-ठाक था, उसका ज्यादातर समय दोस्तो के साथ, मोबाइल और सोशल मीडिया स्क्रॉल करने में कटता था। उसके माँ-पिता उसे हमेशा ही मेहनत करने के लिए कहते थे, मगर वह हर बार यह सोच कर टाल देता कि मैं कल से शुरू करूँगा। एक दिन उसने अपने कॉलेज में एक मोटिवेशनल सेशन में सुना कि हमें जो भी करना चाहिए वह अभी करना चाहिए या आज में करना चाहिए, कल का क्या पता, कल का क्या भरोसा, कल क्या या कैसे होगा, कल किसने देखा है, कल के बाद भी तो कल आता है, आप कल को छोड़ आज में जीना सीखों।

यह बात राज के दिल पर लग गई और वह अपने कामों में ईमानदारी दिखाने लगा, वह अब पहले जैसे अपना काम कल पर नहीं छोड़ता है। वह आज अभी का सम्पूर्ण आनंद लेता है, और खुद को बेहतर बनाने के पर्थ पर अग्रसर है। किसी भी काम को कल पर छोड़ना भी आज से कैसे अलग है, आप कल भी वही व्यक्ति है जो आप आज है,कल भी वही सूरज आयेगा जो आज आया, कल भी वही दिन-रात होगी जो आज हुई, कल भी दिन में 24 घंटे की होगे जा कि आज है।

आज जो आप हो वह कल से कैसे अलग हो कल को आप देख नहीं सकते, कल का आप को कुछ नहीं पता मगर आप आज को जी सकते है, महसूस कर सकते हो बहेतर कर सकते हो।

वही दिन, वही रात, वही सूरज, वही चाँद।
वही पल, वही जज्बा, वही कल, वही आज।

देवेश पंत
बी.एस-सी. 3rd सेम

माँ बूंखाँल कालिंका मन्दिर

परिचय - उत्तराखण्ड को देवभूमि कहा जाता है, और इस देवभूमि के हृदय में स्थित है। माँ बूंखाल काली माता का मन्दिर, यह मन्दिर पौड़ी गढ़वाल जनपद के खिर्सू ब्लॉक में स्थित एक छोटे से गांव बूंखाँल के एक ऊँची पहाड़ी पर बना है। जहाँ से दूर-दूर तक के पर्वतों और घाटियों का अद्भुत दृश्य दिखाई देता है।

माँ बूंखाँल काली देवस्थान बनने की धारणा - स्मृति एवं जनश्रुतियों के आधार पर बूंखाल कालिंका देवी भगवती की उत्पत्ति का समय गोरखा शासन व्यवस्था (1814-16 ई0) के पूर्वाद्ध में माना जाता है। गोरखा का जब उत्तराखण्ड में शासन हुआ तो वह स्थानीय लोगों के साथ मार-काट और लूट पाट करते थे। गोरखा के आक्रमण के समय स्थानीय लोग देवी को पुकार कर सुरक्षा की माँग करते थे। देवी ने इस काल में जनश्रुतियों के अनुसार लोगों की मनोभावनाओं की पुकार सुनी और दिव्य रूप से अवतार लिया।

माँ बुंखाँल काली के अवतार की धारणा - पुरानी मान्यताओं तथा पूर्वजों के अनुसार देवी का मायका चोपड़ा एवं ससुराल नलई गांव में बताई जाती है। देवी अपने मायके जंगल में गाय चुगाने गई थी। जैसा की आप जानते हो उस वक्त बहुत छोटी उम्र में बाल विवाह हो जाता था। तो उन ग्वालों ने खेल-खेल में एक गड्ढा खोदा और लड़की (देवी) को गड्ढे में गाढ़ दिया। माना जाता है कि इसी कन्या ने देवी का स्वरूप लिया और माँ बूंखाल नामक स्थान पर प्रकट हुई, और भक्तों को गोरखाओं के आक्रमण के समय सुरक्षा प्रदान की। माता अपनी दिव्य शक्तियों से भक्तों को सचेत कर सुरक्षित स्थानों पर शरण लेने के लिए प्रेरित करती थी। तभी से लोगों की असीम आस्था भगवती पर बढ़ने लगी, साथ ही संकटकाल में माता सुरक्षा हेतु आवाज (धौ) लगाती थी। अर्थात माता अपने भक्तों को आने वाले संकट से सचेत करती थी। समयान्तराल में गोरखाओं का पता चलने पर माता के शरीर को पलटा कर सिर धरती के अन्दर कर दिया, वर्तमान में इस बूंखाल नामक स्थान पर एक गड्ढा है। जिसके अन्दर माता को गोरखा ने दबाया था। इस गड्ढें में वर्तमान में श्रद्धालु नारियल, तेल, पूजा का सामान चढ़ाकर पूजा करते है। लोगों की मनोकामना को माता पूर्ण करती है। पहले माता के इस गड्ढें में पशुबली होती थी।

पूर्व में बलि का कारण- आदिकाल से देवताओं एवं असुरों में संघर्ष होता रहा है। महिषासुर के आंतक से त्रस्त होकर सभी देवतागण त्रिदेवों के पास गए। इन सबके तेज से एक ज्योति पुंज उत्पन्न हुआ। इस ज्योति से एक देवी का प्राकट्य हुआ। सभी देवी देवताओं ने अपने विभिन्न प्रकार के आयुध देवी को दिए महिषासुर एंव देवी के बीच भंयकर युद्ध हुआ। छल द्वारा महिषासुर ने भैंस का रूप धारण कर लिया परन्तु देवी ने अपनी अलौकिक शक्ति से महिषासुर का वध किया। वही से भैंसो को असुर मानकर इसी धारणा के चलते दीर्घकाल में बूंखाँल के कालिंका मंदिर में मौजूद गड्ढे में भैसों की बलि दी जाने लगी। सामाजिक और धार्मिक विचारों के परिर्वतन होने पर तथा शासन-प्रशासन, जन कल्याण संगठनों के अथक प्रयासों एवं स्थानीय जनता के सहयोग से बलि प्रथा बंद हुई।

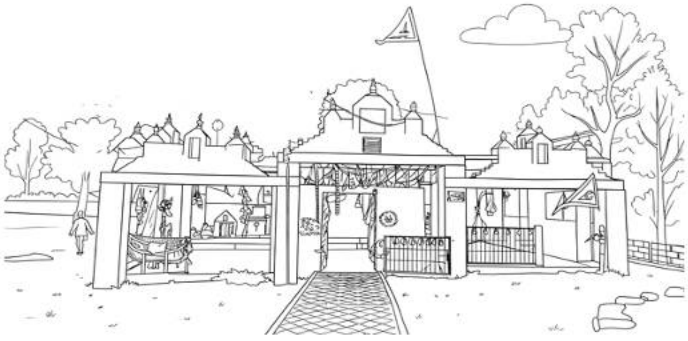

पर्यटन की दृष्टि से माँ बूंखाँल काली में काफी विकास हो रहा है। प्रत्येक शनिवार को दूर-दूर से भक्तगण मंदिर आते है और माता उनकी मनोकामनाओं को पूर्ण करती हैं। माता का एक प्रसिद्ध मेला मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष में हर वर्ष लगता है।

अनूप रावत
बी.एस-सी. 6th सेम

नशा

नशा एक घातक बीमारी है, जो समाज में तेजी से फैल रही है। अधिकतर युवाओं में नशे की आदत देखी जा सकती है। नशा न केवल व्यक्ति के मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान करता है, बल्कि पूरे परिवार, समुदाय और राष्ट्र की प्रगति में बाधा उत्पन्न करता है।

नशा करने के मुख्य कारण-

- चिंता या तनाव।
- दोस्तों या सामाजिक दबाव में आकर।
- जीवन में असफलता या निराशा।
- पारिवारिक या आर्थिक परेशानियाँ।

नशा करने के नुकसान-

- शारीरिक नुकसान- मुँह का कैंसर, फेफड़े की बीमारी, शरीर में कमजोरी।
- मानसिक नुकसान- एकाग्रता की कमी, चिड़चिड़ापन, अवसाद।
- आर्थिक नुकसान।
- पारिवारिक व सामाजिक नुकसान।
- समाज पर दुष्प्रभाव।

नशा मुक्ति के उपाय-

- **मेडिसिन -** नशे के उपचार के लिए नाल्ट्रेक्सोन, डिसुलफिरम दवाओं का इस्तेमाल किया जा सकता है।
- **शिक्षा और जागरूकता -** स्कूलों, कॉलेजो और समाज में नशे के खतरों पर चर्चा, सेमिनार, जागरूकता अभियान।
- **सरकारी प्रयास -** नशा मुक्त भारत अभियान, कानूनी प्रतिबंध, जागरूकता अभियान।
- **परिवार और समाज का सहयोग -** परिवार जनो का निंरतर सहयोग जिससे व्यक्ति का आत्मविश्वास कम न हो। परिवार और दोस्तो का सहयोग नशा मुक्ति में केंद्रीय भूमिका निभाता है। सहायक वातावरण, उपचार और समर्थन व्यक्ति को नशे की लत से बाहर निकलने में सहायता देता है।

देवेश पन्त
बी.एस-सी. 3rd सेम

उत्तराखण्ड की संस्कृति का केन्द्र हैं राठ क्षेत्र

उत्तराखण्ड राज्य का पौड़ी गढ़वाल जनपद अपनी प्राकृतिक सुन्दरता, सांस्कृतिक विविधता और ऐतिहासिक महत्व के लिए प्रसिद्ध है। इस जिले का एक महत्वपूर्ण भाग है जिसे हम राठ क्षेत्र के नाम से जानते है। यह क्षेत्र अपने पारंपरिक ग्रामीण जीवन, ऐतिहासिक, पृष्ठभूमि, लोक संस्कृति और कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था के लिए जाना जाता है।

राठ क्षेत्र मुख्यतः पौड़ी गढ़वाल जनपद के दक्षिण हिस्से में स्थित है, और इसका विस्तार यमुनोत्री तथा गंगा के मध्यवर्ती भू-भाग तक फैला है। राठ क्षेत्र का नाम ऐतिहासिक भौगोलिक परिस्थितियों से जुड़ा माना जाता है, प्राचीन काल में यह क्षेत्र ठाकुरो, राठियों और स्थानीय राजाओं के अधीन था, समय के साथ इस क्षेत्र ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई।

राठ क्षेत्र में ऊँचे-2 पर्वत, घने जंगल, शांत नदियाँ और पारंपरिक गांव इसकी प्राकृतिक सुन्दरता को अद्वितीय बनाते है। यह क्षेत्र धार्मिक और सांस्कृतिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण हैं, यहां कई प्राचीन मंदिर और शक्तिपीठ हैं जो तीर्थ यात्रियों और पर्यटकों को आकर्षित करते हैं, पैठाणी का राहु मंदिर इन्द्रेश्वर मंदिर के नाम से जाना जाता है, जो एक मात्र राहु का मन्दिर है। जिसमें राहु असुर की पूजा की जाती है, इस मंदिर का निर्माण आदि गुरू शंकराचार्य जी ने कराया। इसके अलावा कांलिका मन्दिर जो बूंखाल कांलिका मन्दिर नाम से विख्यात है, बिन्सर मन्दिर/बिन्सर महादेव, ज्वाल्पा देवी मन्दिर, धारी देवी मन्दिर इस क्षेत्र को और अत्यधिक सुन्दर और आकर्षित करते है।

विकास की ओर प्रगतिशील इस क्षेत्र में कई कॉलेज जैसे की राजकीय व्यवासायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी, राठ महाविद्यालय, पैठाणी, राजकीय स्नातक महाविद्यालय, मजरामहादेव, राजकीय स्नातक महाविद्यालय, पाबो, राजकीय

स्नातकोत्तर महाविद्यालय थलीसैंण आदि, इस क्षेत्र को उन्नति की ओर बढ़ा रहे है, और पीढ़ी का उज्ज्वल भविष्य बना रहे हैं।

राठ क्षेत्र का भू-भाग पहाड़ी हैं, जिसमें सीढ़ीनुमा खेत, घने जंगल और अनेक छोटी बड़ी नदियां शामिल हैं। यहां की जलवायु वर्ष की अधिकांश समय ठंडी रहती है। कृषि यहां का मुख्य व्यवसाय है, यहां मुख्यतः धान, गेहूँ, मडुआ, झगोरा, उड़द दाल, तोरी दाल की फसलों की खेती की जाती है, जो इस क्षेत्र की शोभा को और अधिक बढ़ाते है। वन संपदा भी यहां के लोगों की जीवन का आधार रही है, चीड़, बांज-बुरांश, देवदार के जंगल इस क्षेत्र को हरा-भरा बनाएं रखते है। यहां की नदियां और जल स्रोत सिंचाई के साथ-साथ पेयजल की आवश्यकता पूरी करते है।

राठ क्षेत्र की संस्कृति गढ़वाली लोक परंपराओं से प्रभावित है, यहां के पारंपारिक पोशाक पहनते हैं, गले में गुलबंद, नाक में नथ यहां की महिलाओं की सुंदरता को और बढ़ा देती है। बालकों के गले मे हसुली हाथ में धगुली बच्चों के बालपन को और सुयोजित कर देती हैं, यहां की मुख्य बोली गढ़वाली हैं। यहां लोकपर्व होली, हरेला, घी संक्राति और बग्वाल हैं, जिन्हें लोग बढ़े हर्ष और उल्लास से साथ मनाते हैं यहां के मुख्य वाद्य ढोल-दमाऊ, हुड़का है, जो विवाह, पूजा, सामाजिक कार्यो में चार चांद लगा देते हैं। यहां के प्रमुख नृत्य झुमेलो, रस्सी नांच आदि कई नृत्य है जो राठ क्षेत्र में पौराणिक परंम्पराओं को बनाए रखते है।

इस क्षेत्र में कई गाड-गदेरे, नदियां है जो इस क्षेत्र को और अधिक सुन्दर और आकर्षक बनाते हैं, राठ क्षेत्र के पैठाणी क्षेत्र में दूधातोली पर्वत से निकलने वाली दो नदियों जिनका नाम पश्चिम नयार व सियोलीगाढ़ का संगम भी यही पर होता हैं ये नदियां इस क्षेत्र को और अधिक प्रभावशील बनाती हैं।

रितिका
बी.एस-सी. 5th सेम

हिमालय की सुरम्य गोद में बसा एक सुन्दर शहर पौड़ी

''हिमालय की चुप्पी में बसा है, एक नगीना।
पौड़ी गढ़वाल..... वो ख्वाबों का खजाना''।।

पौड़ी गढ़वाल हिमालय की गोद में बसा हुआ उत्तराखण्ड के खूबसूरत जिलों में से एक है। यह अपने मनोरम दृश्यों धार्मिक स्थलों, समृद्ध संस्कृति और शांत वातावरण के लिये देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी प्रसिद्ध है, यहाँ की लोक परम्परायें, कला और इतिहास इसे और भी विशेष बनाते हैं।

पौड़ी जनपद का इतिहास - पौड़ी शहर की खूबसूरती को देखकर ही अंग्रेजों ने 1840 ई0 में ब्रिटिश गढ़वाल की राजधानी श्रीनगर से पौड़ी स्थानान्तरित कर दी थी और तभी से पौड़ी शहर को जनपद मुख्यालय के रूप में जाना जाने लगा, तथा 1969 ई0 में गढ़वाल मण्डल का मुख्यालय भी पौड़ी गढ़वाल ही बना और यहां की शांत वादियों और मनोरम पहाड़ियों को देखते हुये सन् 1992 ई0 में पौड़ी को हिल स्टेशन घोषित किया गया। 5230 वर्ग किलोमीटर में फैला यह क्षेत्र उत्तराखण्ड के 13 जिलों में क्षेत्रफल की दृष्टि से चौथा सबसे बड़ा जिला है।

पौड़ी जनपद अंग्रेजों को इस कदर पसंद आया कि सन् 1887 में पौड़ी जनपद में लैंसडाउन नामक जगह (इस का नाम तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लैंसडाउन के नाम पर पड़ा था। इस जगह का पुराना नाम कालों - डांडा या कालूडांडा था) जो कि समुद्र तल से लगभग 1700- 1780 मी0 की ऊँचाई पर स्थित है। यहां कि असीम सुन्दरता के कारण इस जगह पर अंग्रेजों ने यहां पर सैनिक छावनियों का निर्माण करवाया।

सन् 1992 में इस छावनी को राइफल्स का खिताब मिला एवं स्वतंत्रता के उपरांत इसे गढ़वाल राइफल्स के नाम से जाना जाने लगा। 4 नवम्बर सन् 1887 को कर्नल मैन्वेरिंग के नेतृत्व में लैंसडाउन सैन्य छावनी बसायी गयी थी जो आज ''रॉयल गढ़वाल राइफल्स'' के नाम से जानी जाती है।

पौड़ी गढ़वाल में एशिया महाद्वीप का सबसे ऊँचाई पर स्थित खेल स्टेडियम भी है, जिसे रांसी स्टेडियम के नाम से जाना जाता है।

पौड़ी जिले की सीमा उत्तराखण्ड के 7 जनपदों तथा उत्तर प्रदेश राज्य से लगती है, तथा पौड़ी गढ़वाल की सीमा उत्तर में टिहरी गढ़वाल, रूद्रप्रयाग व चमोली दक्षिण में उधमसिंह नगर, पूर्व में अल्मोड़ा व नैनीताल व पश्चिम में देहरादून व हरिद्वार से लगती है।

मुख्य आर्कषण

1. **खिर्सू बुग्याल-** पौड़ी जनपद में स्थित खिर्सू बुग्याल समुद्ध तल से 3600 मी0 की ऊँचाई पर स्थित एक सुन्दर एवं रमणीय स्थान है, यह स्थान ट्रैकिंग एवं पिकनिक के लिये जानी जाती हैं, अगर मौसम साफ हो तो इस स्थान से नन्दा देवी त्रिशूल व बन्दरपूँछ जैसे हिमालय की चोटियों का अद्धभूत दृश्य दिखाई देता है, कुछ दंतकथाओं की माने तो इस स्थान को देवी देवताओं का निवास स्थान माना जाता है।
2. **''कण्व नगरी'' कोटद्वार -** ''गढ़वाल का द्वार'' नाम से प्रसिद्ध कोटद्वार जिसे कण्व नगरी के नाम से भी जाना जाता हैं, यह स्थान पौड़ी जनपद में ही स्थित है, इसे गढ़वाल का ग्रास्टिंगज के नाम से भी जाना जाता है, कोटद्वार में प्रसिद्ध कण्वाश्रम एवं सिद्धबली नामक धार्मिक स्थान है।
3. **चौबट्टाखाल-** पौड़ी गढ़वाल से 45 कि0मी0 दूर यह स्थान वन्यजीव प्रेमियों के लिये महत्वपूर्ण है, इस जगह पर आपको कई प्रकार के पशु पक्षियाँ देखने को मिल जाते हैं।
4. **कंडोलिया देवी मंदिर-** पौड़ी से 1.5 कि0मी0 दूर यह स्थान जहां माँ दुर्गा का प्राचीन मंदिर हैं, इस स्थान से 360 डिग्री पहाड़ की वादियों का मनोरम दृश्य नजर आता हैं।
5. **ताराकेश्वर (ताड़केश्वर) महादेव -** पौड़ी गढ़वाल के लैंसडाउन से 35 कि0मी0 दूर यह स्थान भगवान शिव को समर्पित है जो चारों ओर से घने जंगलों से घिरा हुआ है।

ऐसे अन्य कई स्थान पौड़ी जनपद में हैं, जो इसकी शोभा में चार चाँद लगा देते हैं, पौड़ी गढ़वाल प्राकृतिक सुन्दरता धार्मिक विरासत और सांस्कृतिक विरासत का अनूठा संगम हैं, यहाँ की शांत वादियों ऐतिहासिक स्थल और हिमालय के दर्शन इसे एक आदर्श पर्यटन का केन्द्र बनाते हैं।

अगर आप भीड़भाड़ से दूर प्रकृति की गोद में समय बिताना चाहते हैं तो पौड़ी गढ़वाल आपके लिये एक उत्तम स्थान हैं।

''किताब-ए-हिंद का यह एक पन्ना है, पौड़ी गढ़वाल....
जहाँ इंसान व फिजा एक हो जाऐं।।''

सागर सिंह
बी.सी.ए. 1st सेम

जिन्दगी: एक अनमोल यात्रा

जिन्दगी एक अनमोल उपहार है, जो हर किसी को समान रूप से मिला है, यह केवल जीने की प्रक्रिया नहीं है बल्कि सीखने, समझने और अनुभव करने की यात्रा भी है। हर इंसान की जिन्दगी में सुख और दुखः दोनों आते हैं, और दोनों का अनुभव करना आवश्यक हैं। कठिनाइयां हमें मजबूत बनाती हैं, और सफलता हमें आत्मविश्वास देती हैं। जीवन एक रहस्यमयी यात्रा है, जहां हर मोड़ हमें कुछ नया सिखाता है। कभी यह हंसी की कलियों से महकता है, तो कभी आंसुओं की बारिश से भीग जाता है। यही जीवन की सुंदरता है यह कभी भी एक जैसा नहीं रहता। जीवन हमें हर दिन एक परीक्षा देता है। यह परीक्षा केवल किताबों की नंही, बल्कि अनुभवों की होती है। हर सुबह हमें एक नया अवसर देती है, और हर शाम हमें एक नई सीख। कई बार हम जीतते हैं, कई बार हारते हैं, लेकिन हर अनुभव हमारे व्यक्तित्व को निखारता है।

समय का महत्व जीवन में बहुत अधिक है। समय कभी किसी का इंतजार नहीं करता, इसलिए हर पल को सही तरीके से जीना चहिए। अतीत की गलतियों से सीख लेकर ही हम भविष्य में सुधार ला सकते हैं। वर्तमान ही असली धन है, क्योंकि यही पल हमारे पास वास्तविक रूप में है। धैर्य रखना और मुश्किल समय में शांत रहना बहुत आवश्यक है। खुशियां छोटे-छोटे पलों में छिपी होती हैं, जिन्हे महसूस करना सीखना चाहिए। सफलता केवल लक्ष्य पाने में नहीं, बल्कि प्रयास करने में भी है। असफलताएं हमें हमारी कमियों से रूबरू कराती हैं, और उन्हे सुधारने का अवसर देती हैं। ईमानदारी और नैतिकता से जीना जीवन को सम्मान और सच्चाई देता है। हर किसी की जिन्दगी अलग होती है, इसलिए दूसरों से तुलना करना व्यर्थ है।

जिन्दगी छोटी है, और इसे पूरी तरह जीना चाहिए। अपने क्षमताओं पर भरोसा रखें, हार न मानें, प्यार और सम्मान बनाएं रखें और हर पल को पूरी तरह जीते रहें। जिन्दगी का असली उद्देश्य खुश रहना और दूसरों को खुशियां बाँटना है। यही जीवन का सार और सच्ची सफलता है। सफलता केवल लक्ष्य पाने में नहीं, बल्कि प्रयास करने में भी है। असफलताएं हमें हमारी कमियों से रूबरू कराती हैं और उन्हे सुधारने का अवसर देती है। उम्मीद कभी नहीं छोड़नी चाहिए, क्योंकि यही हमें अंधकार में भी रोशनी दिखाती है। हर दिन एक नई शुरूआत है, जो हमें बेहतर बनने का अवसर देती है। जिन्दगी एक किताब है, जिसमें हर दिन एक नया पन्ना जुड़ता है। कुछ पन्ने रंगीन होते है, कुछ काले-सफेद, लेकिन हर पन्ने का महत्व होता है।

जिन्दगी की असली खूबसूरती छाटे-छोटे पलों में छिपी है, जैसे सुबह की ठंडी हवा किसी बच्चे की मासूम मुस्कान, माँ और दादी का बनाया खाना या दोस्तों के साथ बिताया गया एक पल, किसी की मदद करना यही वो लम्हें हैं जो जिन्दगी को जीने लायक बनाते हैं। जिन्दगी हमेशा आसान नहीं होती, कभी कठिनाई का अंधेरा छा जाता हैं, कभी असफलता हाथ लगती हैं, ऐसे समय में धैर्य और उम्मीद हमारे सबसे बड़े साथी होते हैं, जैसे रात के बाद सुबह होती हैं, वैसे ही हर दुखः के बाद सुख आता हैं।

जीवन का सबसे बड़ा सत्य यह है कि समय कभी रुकता नहीं, जो बीत गया वह लौटकर नहीं आता, इसलिए हर पल को जीना चाहिए, हर क्षण को महसूस करना चाहिए। दुख हो या सुख दोनों की स्थायी नहीं हैं, अगर रात अंधेरी है, तो सुबह का उजाला भी जरूर आएगा। इसलिए हमें हमेशा अपने मन में विश्वास रखना चाहिए कि चाहे परिस्थिति कैसी भी हो, हम उसे बदल सकते हैं। मनुष्य की सबसे बड़ी ताकत उसका आत्मविश्वास और धैर्य है। यही गुण उसे मुश्किल से मुश्किल हालात में भी आगे बढ़ने की शक्ति देते हैं। जीवन एक संघर्षमयी नदी की तरह है, कभी शांत कभी तूफानी, पर वही नदी सागर तक पहुँचती है, जो बहने से नहीं डरती। इसलिए हार को हार मत मानों, गिरने को अन्त मत समझो, हर गिरावट तुम्हें और ऊँचाई तक ले जाने की तैयारी है। जीवन की असली खूबसूरती इसी में है कि चाहे जितनी बार टूटों, हर बार और मजबूत होकर उठो।

मनीषा नौटियाल
बी.एस-सी. 5th सेम

आदर्श शिक्षक

मिट्टी से होते है विद्यार्थी, उन्हें आकार दे जाते है।
वो शिक्षक ही होते हैं, जो हमें ज्ञान दे जाते हैं।।

शिक्षक विद्यार्थी - साथी (मित्र)-

शिक्षक विद्यार्थी का साथी होता है जो विद्यार्थी के लिए प्रेरणा स्रोत होता हैं। शिक्षक हमें जीवन के महत्व का हर पाठ पढ़ाता है वे विद्यार्थी के जीवन को उसके उज्ज्वल भविष्य की दिशा की ओर अग्रेषित करता हैं।

धैर्य, अनुशासनप्रिय, कुशल मार्गदर्शक, निस्वार्थ भाव सेवा, जिम्मेदारियाँ का निर्वहन, विद्यार्थी के भविष्य के प्रति सकारात्मक नजरिया आदि एक आदर्श शिक्षक के गुण हैं।

योगदान-

मनुष्य के जीवन व व्यवहार में शिष्टाचार कुशलता, योग्यता, सुन्दरता लाने में शिक्षा एक विशिष्ट योगदान देती है और शिक्षा के इस जगत में शिक्षक का गौरवपूर्ण स्थान होता है शिक्षक ज्योति की भांति हमारे अंधकारमय जीवन में प्रकाश भरता हैं। शिक्षा जीवन निर्माण की कला है, जिसका उद्देश्य एक आदर्श जीवन हैं।

विद्या मंदिर - विद्यालय (विद्यालय)-

विद्यालय एक मंदिर के समान है, जिसमें ज्ञान - भगवान, विद्यार्थी - भक्त, शिक्षक - एक पुजारी के समान है। प्राचीन काल की भारतीय परंपरा के अनुसार शिक्षक एक तपस्वी आदर्शनिष्ठ अपरिग्रही होते थे, ठीक उसी प्रकार छात्र सेवाभावी, अनुशासित होते थे।गुरूकुल एक पावन स्थान माना जाता था। वर्तमान में गुरूकुल का स्थान विद्यालय ने ले लिया हैं। शिक्षा प्राप्त करना और अधिक आसान हो गया हैं, शिक्षा व्यवस्था बदल चुकी हैं, परन्तु साथ ही शिक्षा का अर्थ ही मनुष्यों ने बदल दिया हैं। विनोवा जी ने इस सम्बन्ध में कहा आज विद्यालय का अर्थ ही बदल चुका हैं।

पहले विद्यालय - विद्या + आलय (अर्थात् जहां विद्या का आलय हो)...

आज विद्यालय - विद्या + लय (अर्थात् जहां विद्या का लोप हो)...

समयानुसार हमारे समाज को आज आदर्श शिक्षकों की आवश्यकता है, जो पुनः इस परिस्थितियों में सुधार ला सके जो न केवल किताबी ज्ञान में अपितु हर एक क्षेत्र जहां विद्यार्थी के जीवन में सुधार आये प्रत्येक क्षेत्र की ओर अग्रसित करें।

हमारे आस-पास भी ऐसे कई शिक्षक मौजूद है, जो कि आदर्श शिक्षक की परिभाषा को अपने वास्तविक जीवन में भी निर्वहन करते आ रहे, और अपने विद्यार्थी को अपनी जिम्मेदारी मानते हैं।

सुमित नेगी
बी.एस-सी. 3rd सेम

पौष्टिक अनाज: मिलेट्स

आज के बदलते समय में लोग अपनी सेहत और खानपान को लेकर ज्यादा सजग हो रहे हैं। अनाजों की इस सूची में मिलेट्स यानी मोटे अनाजों का नाम सबसे ऊपर आता है। भारत में इन अनाजों को प्राचीन समय से ही उगाया जाता रहा है। यह न केवल सेहत के लिये उत्तम है, बल्कि पर्यावरण और किसानों दोनों के लिये फायदेमंद हैं।

उत्तराखण्ड, विशेषकर पौड़ी गढ़वाल क्षेत्र में पहले मडुवा, जौ और फॉक्सटेल मिलेट जैसी फसलें बड़े पैमाने पर बोई जाती थी। इस फसलों में लगभग 70-75 प्रतिशत तक कार्बोहाइड्रेट पाए जाते हैं। साथ ही यह प्रोटीन, फाइबर, आयरन, कैल्शियम और अन्य खनिजों से भरपूर होते हैं।

मिलेट्स की मुख्य फसले हैं- ज्वार, बाजरा, मंडुवा (रागी), फॉक्सटेल (बाजरा), सांवा, कोदा, झंगोरा और जौ हैं। इनमें से सबसे ज्यादा उत्पादन भारत, नाइजीरिया और चीन में होता है। विश्व स्तर पर भारत को मिलेट्स का सबसे बड़ा उत्पादक और उपभोक्ता देश माना जाता है। मेरी दादी अक्सर पुराने दिनों को याद करती है, वह बताती है कि जब वे लोग घास लेने जंगल जाते थे तो सुबह एक बार खाना खाकर निकलते और सीधा रात को ही घर लौटकर खाना मिलता था। उस समय उनका मुख्य आहार यही मिलेट्स के अनाज होते थे - जैसे झंगोरा, कोदा, जौ और कौनी। उनका कहना है कि उस भोजन में आज के मुकाबले दस गुना ज्यादा ताकत होती थी। इसी कारण उन्हें जल्दी भूख नहीं लगती थी, और वे अधिक मेहनत भी कर पाते थे।

आज हालात उल्टे हैं, देश में बढ़ती जनसंख्या के कारण सरकार क्वांटिटी पर ध्यान दे रही है न कि क्वालिटी पर हर जगह गेहूँ और चावल तो मिल रहा है, लेकिन उनमें पहले जैसा पोषण बिल्कुल नहीं हैं। दूसरी ओर मिलेट्स सच में शरीर को ताकत और रोगों से बचाव दोनों देते हैं।

डॉक्टर भी अलग - अलग बीमारियों में मिलेट्स खाने की सलाह देते हैं, जैसे -

- रागी(मंडुवा)- कैल्शियम से भरपूर, हड्डियों की मजबूती और ऑस्टियोपोरोसिस से बचाव में लाभकारी।
- ज्वार- फाइबर और एंटीऑक्सीडेंट से भरपूर, हार्ट डिज़ीज और कोलेस्ट्रॉल कंट्रोल में मददगार।
- बाजरा- आयरन से समृद्ध, एनीमिया और खून की कमी में उपयोगी।
- कोदा और सांवा-कम ग्लाइसेमिक इंडेक्स वाले, डायबिटीज में बेहद फायदेमंद।
- फॉक्सटेल (बाजरा)-वजन घटाने और डाइजेशन सुधारने में सहायक।

आज विदेशों में मिलेट्स की बहुत अधिक मांग है क्योंकि वहां के लोग अपनी हेल्थ को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हैं। यूरोप और अमेरिका में मिलेट्स से बने हेल्दी फूड, बिस्किट और ब्रेड तक लोकप्रिय हो चुके हैं। लेकिन अफसोस कि भारत जैस देश, जहां इनका उद्गम हुआ, वहीं लोग इनसे दूर होते जा रहे हैं।

मिलेट्स के महत्व को देखते हुए, संयुक्त राष्ट्र ने वर्ष 2023 को ''इंटरनेशनल ईयर ऑफ मिलेट्स'' घोषित किया इसका उदेश्य इन पौष्टिक अनाजों को वैश्विक स्तर पर प्रोत्साहित करना, इनके स्वास्थ्य लाभों और जलवायु अनुकूलन क्षमता के बारे में जागरूकता बढ़ाना तथा किसानों को इनकी खेती के लिए प्रेरित करना था। भारत ने इस अभियान में प्रमुख भूमिका निभाई और इसे अंतराष्ट्रीय मंच पर सफलतापूर्वक प्रस्तुत किया।

दुख की बात है कि पहाड़ों में अब इनकी खेती बहुत कम हो रही है। एक कारण यह भी है कि बंदर, सुअर और भालू जैसी जंगली जानवर फसलों को बर्बाद कर देते हैं, फिर भी यह क्लाइमेट रेजिलिएंट क्रॉप्स हैं, जो कम पानी और कठिन मौसम में भी उग जाती हैं। इसलिये हमें इनका उत्पादन और बढ़ाना चाहिए।

अगर हम फिर से इन फसलों की ओर लौटे और अपने भोजन में शामिल करें, तो न केवल हमारी थाली पौष्टिक होगी बल्कि हमारे किसानों, पर्यावरण और अर्थव्यवस्था को भी लाभ मिलेगा। मिलेट्स केवल भोजन नहीं बल्कि हमारी सांस्कृतिक धरोहर भी है।

तनीषा
बी.एस-सी. 5th सेम

मेरा पहाड़: संघर्ष की धरती और सुकून की वादियाँ

पहाड़ों का जीवन एक साथ संघर्ष और सुकून का अनोखा संगम है। यहाँ की पहाड़ी वादियाँ देखने में जितनी सुंदर लगती हैं, उतनी ही कठिनाइयों से भरी भी होती हैं। एक और प्राकृतिक सौन्दर्य, स्वच्छ हवा और घने जंगल लोगों का मन मोह लेते हैं, तो दूसरी ओर बरसात में आने वाले भूस्खलन, बाढ़ और जंगली जानवरों का डर यहाँ की जिन्दगी को मुश्किल बना देता है।

हाल ही में मेरे गांव में बरसात की वजह से हमारे दो खेत पूरी तरह नष्ट हो गए। हमारे दो खेतों को साल-भर जोतने-बोने में हमें लगभग 5-6 हजार रूपये का खर्च आया था। जो खेत लगभग 200 मी0 लंबा और 10 मी0 चौड़ा था, बाढ़ में पूरी तरह बह गया। हमारे ही नहीं, गांव के कई और लोगों के 15-20 खेत भी बारिश में बह गए। किसी की सालभर का अनाज बरसाती पानी में डूब गया, तो किसी की जिन्दगी भर की मेहनत एक पल में खत्म हो गई। सरकार से थोड़ा-सा मुआवजा तो मिलता हैं, लेकिन वह इस भारी नुकसान के सामने कुछ भी नहीं होता।

बरसात की मार केवल खेतों तक ही सीमित नहीं रहती, कई जगहों पर मकान टूट जाते हैं। पास के गांव में एक परिवार का पूरा घर ढह गया और उनका सारा सामान पानी में बह गया। दुख की बात यह थी कि उस घर में एक महीने बाद बेटी की शादी थी, लेकिन बरसात ने उनके सपनों पर पानी फेर दिया। इस साल तो कई लोग मलबे के नीचे दब गए, कई परिवार उजड़ गए और कईयों की गाय और गौशालाएं भी टूट गई। पहाड़ की कठिन जिन्दगी ऐसी है कि पलभर में लोगों की जमा-पूँजी और मेहनत बर्बाद हो जाती है।

गांवों में स्वास्थ्य और शिक्षा जैसी सुविधाओं की भी भारी कमी है। कई बार ऐसा होता है कि प्रसव पीड़ा वाली महिलाओं को अस्पताल ले जाने में घंटों लग जाते हैं और रास्ते में ही उनकी जान चली जाती है। इसी वजह से गांवों से लोग लगातार पलायन कर रहे हैं, वे बेहतर सुविधाओं की तलाश में देहरादून, दिल्ली, चंडीगढ़ जैसे शहरों में जाकर बस जाते हैं, लेकिन वहां जाकर भी भीड़ का हिस्सा बनकर रह जाते हैं।

शिक्षा के क्षेत्र में भी यही स्थिति हैं, हमारे क्षेत्र पैठाणी में दो कॉलेज हैं, जहां पर बी0ए0, बी0एस-सी0, बी0सी0ए0, बी0एड0, बी0पी0एड0 और बी0बी0ए0 जैसे कोर्स बहुत कम फीस पर मिलते हैं। लेकिन अगर किसी को एम0बी0बी0एस0 या बी0टेक0 या नर्सिंग जैसे कोर्स करने हैं, तो उन्हें अन्य शहर जाना पड़ता है। जो परिवार आर्थिक रूप से सक्षम हैं, वो तो अन्य शहर चले जाते हैं, लेकिन जिनके घर का खर्च ही मुश्किल से चलता है, वे स्थानीय कॉलेजों से ही पढ़ाई पूरी कर आगे बढ़ने की कोशिश करते हैं।

फिर भी, पहाड़ का जीवन केवल संघर्ष ही नहीं है। जब बरसात में बादल पहाड़ों के आगे आकर सज जाते हैं, तो पहाड़ों को और भी सुंदर बना देते हैं यहां की वादियां शांति और सुकून से भरी हैं। घने जंगल, बांज और बुरांस के पेड़ों से ढकी पहाड़ियां और ठंडे-मीठे पानी के पंदेरे गांव का जीवन खुशगवार बना देते हैं। बच्चे पंदेरें से पानी भरने जाते हैं और खाली समय में वहीं खेलते हैं। जब खेत खाली रहते हैं, तो बच्चे उन्हें क्रिकेट के मैदान में बदल देते हैं और सभी दोस्त मिलकर खेलते हैं। गांव के बच्चे 'पिट्ठू' जैसा खेल भी खेलते हैं, जिसमें पत्थरों को एक के ऊपर एक रखकर कपड़े की बाल से गिराना और फिर अपने हाथों से सजाना होता हैं। इन खेलों की खुशी पूरे गांव में गूंज उठती है।

गांव में लोगों के बीच आपसी सहयोग और अपनापन भी देखने के लायक है। शाम को बुजुर्ग एक जगह बैठकर गपशप करते हैं, बच्चे खेलते हैं और औरतें एक-दूसरे का साथ देती हैं। यहां लोग तंगहाली में भी खुश रहते हैं और एक-दूसरे का सहारा बनते हैं। इसके विपरीत, शहरों में लोग दरवाजे बंद करके अकेले रहते हैं, मानो किसी कैद में हो। वहां न तो शांति है और न ही अपनापन का एहसास।

यही वजह है कि पहाड़ का जीवन भले ही संघर्षो से भरा हो, लेकिन यह सुकून, भाईचारे और प्राकृतिक सौदंर्य की ऐसी धरती है जिसे छोड़कर जाना आसान नहीं। गांव का जीवन हमें यह सिखाता है कि असली संपत्ति पैसा या ऊंची सुविधाएं नहीं हैं, बल्कि अपनापन शांति और सादगी है। यही पहाड़ की धरोहर है और यही जीवन की असली दौलत।

तनीषा
बी.एस-सी. 5th सेम

DRUGS AND MEDICINE

In the field of medicinal chemistry, chemists aim to design and synthesize pharmaceutical agents that can benefit human health. These compounds are often referred to as "drugs" although many scientists are reluctant to use this term due to the negative connotations associated with it. Media portrayals such as "Drugs Menace" or "Drug Addiction Sweeps City Streets" certainly contribute to this perception. However, this prompts the question of whether a clear distinction can be made between drugs used for medical purposes and those that are abused. Is it really possible to draw a sharp line between beneficial drugs like penicillin and harmful substances like heroin? If so , how do we define what makes a drug "good" or "bad"? Where would we categorize substances like cannabis, nicotine, or alcohol in this divide? The answer to these questions will likely very depending on who you ask. From a legal standpoint, the boundaries are clearly defined, but from the perspective of a young party–goer, the law may seem irrelevant. The distinction between good and bad drugs becomes less meaningful when considering medicinal chemistry, Attempting to label drugs as simply safe or exactly what it's supposed to , without causing any side effects, be completely safe, and be easy to administer. But how many medicines actually meet all these criteria? The short answer in none. While some come close to being ideal, like penicillin, no drug currently on the market satisfies all these conditions perfectly. Penicillin, for instance, has been one of the most effective and safest antibacterial agents ever discovered. However, it isn't flawless, over time, certain bacteria have developed resistance to it. Additionally, some people experience allergic reactions to penicillin, requiring alternative treatments.

Sumit Negi
B.Sc. 3rd Sem.

Then there are other drugs with more serious risks. Morphine, for example, is an excellent painkiller, but it carries the dangers of tolerance, respiratory depression addiction and can even be fatal in high doses. Barbiturates, once commonly used as general anesthetics, have a dark history as well. During the pearl harbor attack, many patients receiving barbiturates during surgery suffered fatal overdoses due to insufficient understanding of how the drugs were stored in the body. In fact, more casualties were reportedly caused by anesthetic overdoses then by the injuries sustained during the attack. These examples show that even the "good" drugs have their shortcomings. Now, what about the "bad" drugs? Can we defend substances like heroin, which are often considered harmful? Heroin, in fact, is one of the most effective painkillers known to man. It was initially hailed as a "heroic" drug in the late 19th century, believed to be a miracle cure for pain. However, after just a few years, the addictive nature of heroin become apparent, and it was withdrawn from general use. Despite this, heroin, in the form of diamorphine, is still used in medicine today, albeit under strict medical supervision. Diamorphine is particularly useful in treating cancer patients, as it not only relieves pain but also provides a euphoric effect that can help alleviate the emotional distress of terminal illness. Can we really label a drug that serves such a purpose as entirely "bad"? By now, it should be clear that the distinction between "good" and "bad" drugs is not as straight forward as it might seem. All drugs have both beneficial and harmful aspects. Some have more benefits than drawbacks, while others may be the opposite, but like people, drugs have unique characteristics that don't fit neatly into one category. So, how should we define a drug? One possible definition in to describe drugs as compounds that interact with a biological system to produce a biological response.

Dr. Kumar Gaurav Jain
[Asst. Prof. Chemistry]

महाविद्यालय की प्रमुख समितियां

1. NAAC/IQAC समिति

संयोजक - डॉ0 सतवीर

राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यापन परिषद National Assesment and Accreditation Council (NAAC) भारत में उच्चशिक्षण संस्थानों की गुणवत्ता का आंकलन करने हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के तहत एक स्वायत्त निकाय है। इसकी स्थापना 1994 में हुई थी।इसका मुख्यालय बैंगलौर है। NAAC का प्रमुख कार्य उच्चशिक्षण संस्थानों में पठन-पाठन और अनुसंधान की गुणवत्ता को बढ़ावा देने हेतु शैक्षणिक वातावरण को प्रोत्साहित करना है। IQAC & आन्तरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (Internal Quality Assurance Cell) एक संरचना है जिसका प्रमुख कार्य किसी भी उच्चशिक्षा संस्थान की आन्तरिक गुणवत्ता के उच्च मानक स्थाापित करना है। महाविद्यालय स्तर पर NAAC एवं IQAC समिति का गठन किया जाता है। जिसमें प्राध्यापकों के साथ-साथ छात्र-छात्राओं, औद्योगिक क्षेत्र की महान विभूतियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं को सदस्य के रूप में नियुक्त किया जाता है। इस महाविद्यालय में प्रथम बार सत्रः 2025-26 में NAAC/IQAC समिति का गठन किया गया है जिसमें समय-समय पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।

2. ADMISSION COMMITTEE

संयोजक- डॉ0 दिनेश रावत

The Admission Committee plays a vital role in ensuring a smooth and transparent admission process for students. It is responsible for guiding students during the application process, conducting counseling sessions, and organizing the Student Orientation Program for the academic year. Throughout the year, the committee organizes awareness drives, publishes admission-related notices, verifies documents, and coordinates with different departments. By carrying out these activities, the committee upholds the credibility and efficiency of the college's admission system.

3. देवभूमि उद्यमिता समिति

संयोजक- डॉ0 पुनीत चन्द्र वर्मा

उच्च शिक्षा विभाग उत्तराखंड एवं भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान, अहमदाबाद के सहयोग से देवभूमि उद्यमिता योजना के अर्न्तगत महाविद्यालय में अभी तक छात्र-छात्राओं के स्वरोजार हेतु दो बूट कैम्प एवं दो ई0डी0पी0 कार्यक्रमों के साथ-साथ विभिन्न जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये हैं। दिनांक 20 मार्च 2025 को 12 दिवसीय उद्यमिता विकास कार्यक्रम शुरू हो गया है। महाविद्यालय में देवभूमि उद्यमिता केंद्र के फैकल्टी मेंटर डॉ० प्रकाश फोंदणी ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम का सफल संचालन किया। देवभूमि उद्यमिता केंद्र के सयोजक डॉ. पुनीत चंद्र वर्मा ने इस 12 दिवसीय उद्यमिता विकास कार्यक्रम की विस्तृत रूप रेखा सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों के बीच मे रखी तथा कहा कि रोजगार की संभावनाएं स्वरोजगार से ही पैदा होगी उन्होंने यह भी बताया कि स्टार्टअप एवं उद्यमिता के द्वारा हम अन्य लोगों को भी भविष्य में अपने साथ जोड़कर रोजगार दे सकते हैं। प्रभारी प्राचार्य डॉ. दिनेश रावत ने छात्र-छात्राओं को बताया कि आज के समय में सीमित रोजगार को देखते हुए हमे स्वरोजगार की तरफ रुख अपनाना पढ़ेगा। उन्होंने बहुत उदाहरणो से छात्र-छात्राओं को प्रेरित करते हुए कहा कि हमे ईमानदारी से और अपनी क्षमतानुसार उद्यमिता को अपनाना चाहिए जिससे हम दूसरो को भी रोजगार दे सके। मुख्य अतिथि डॉ. संजेश कुमार ने अपने जीवन की शुरुआत से लेकर वर्तमान तक की उद्यमिता यात्रा एवं अनुभव को विस्तार से छात्र-छात्राओं के समक्ष साझा किया तथा भविष्य के लिए शुभकामनाएं भी दी। भारतीय उद्यमिता विकास संस्थान अहमदाबाद से जिला प्रोजेक्ट को ऑर्डिनेटर डॉ० सर्वेंद्र रावत ने छात्र-छात्राओं से वर्तमान समय की मांग क्या है और हम किस-किस क्षेत्र में स्टार्टअप शुरू कर सकते हैं, इस विषय पर अपने विचार साझा किये और उन्हें उद्यमिता की ओर कदम बढ़ाने हेतु प्रोत्साहित किया। फैकल्टी मेंटर डॉ. प्रकाश फोंदणी ने कहा कि उद्यमिता के लिए आईडिया, समस्या का समाधान, बिजनेस वैल्यू, ब्रांडिंग, फंडिंग, शिक्षा, प्रोडक्ट, आईटी आदि महत्वपूर्ण बिंदु जरूरी है जिनका उपयोग कर हमे भाविष्य में अपनी पहचान एक अच्छे उद्यमी के रूप में करनी है।

4. रेडक्रास/रक्तदान समिति

संयोजक- डॉ0 पुनीत चन्द्र वर्मा

दिनांक 28.8.2024 को देवभूमि ब्लड सेंटर, देहरादून के तत्वावधान में राजकीय व्यावसायिक कॉलेज बनास पैठाणी, पौड़ी में एक दिवसीय रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। संस्थान के प्राचार्य डॉ. कुमार गौरव जैन द्वारा समस्त मेडिकल टीम का स्वागत पुष्पगुच्छ प्रदान करते हुए किया गया। रेड क्रास रक्तदान समिति के प्रभारी डॉ. पुनीत चंद्र वर्मा एवं सह-प्रभारी डॉ. खिलाप सिंह जी द्वारा समस्त क्रिया-कलाप का सुचारु रूप से संचालन किया गया। सह-प्रभारी द्वारा रक्तदान के महत्व पर विस्तार से बतलाया ही नहीं गया, अपितु स्वयं से 1 यूनिट रक्त भी दान किया गया। महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. प्रकाश फोंदणी ने कहा कि महाविद्यालय में पहली बार रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय परिवार ने "रक्तदान महादान" के वाक्य को चरितार्थ करते हुए बढ़-चढ़कर प्रतिभाग किया। आज के रक्तदान आयोजन में कुल 21 यूनिट रक्त एकत्रित किया गया। मेडिकल टीम का नेतृत्व डॉ. एम. एस.रावत जी, श्रीमती प्रियंका रावत जी (जिला पंचायत सदस्य), डॉ. संजय रावत (संयोजक, देवभूमि ब्लड सेंटर, देहरादून) तथा उनकी पूरी टीम द्वारा सफलतापूर्वक किया गया। आयोजन में संस्थान से डॉ. सतवीर, डॉ. आलोक कंडारी, श्री पल्लव नैथानी, श्री आशीष कश्यप, श्री अनूप सिंह, श्री राहुल रावत तथा छात्रों में सुश्री अर्पिता, सुश्री शिवानी, सुश्री भूमिका, सुश्री ईशा, अनिवेश, सूरज, अरविंद, शशांक भट्ट, नितिन कुमार आदि ने रक्तदान किया।

5. CAREER COUNSELLING COMMITTEE

संयोजक- डॉ0 कल्पना रावत

The Career Counseling Committee works actively to guide students in shaping their professional goals and preparing for future opportunities. The committee conducts career counselling sessions not only for college students but also for the students of nearby inter-colleges, helping them explore career paths suited to their interests and abilities. It regularly invites industry professionals and academic experts to deliver guest lectures, giving students valuable exposure to real-world insights and trends. To enhance employability skills, the committee organizes preparation classes for competitive examinations and conducts hands-on workshops on MS Office tools such as Word, Excel, and PowerPoint. In addition, it arranges awareness sessions on various government initiatives, schemes, and opportunities available for youth, ensuring that students are well-informed about the resources they can access. Through these diverse activities, the Career Counselling Committee plays a crucial role in empowering students for academic, professional, and personal growth.

6. मतदाता जागरूकता समिति (स्वीप)

संयोजक- डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोन्दणी

मतदाता जागरूकता अभियान के तहत सभी सम्मानित प्राध्यापकों, शिक्षणेतर कर्मचारियों एवं छात्र-छात्राओं ने शत-प्रतिशत मतदान करने की शपथ ली। हम सबको इस मतदान पर्व में शत-प्रतिशत मतदान हेतु बढ़-चढ़कर अपना योगदान सुनिश्चित करना है। हमें अपने मताधिकार का प्रयोग करके देश के लोकतंत्र को मजबूत बनाना होगा। हमारा वोट ही देश का भविष्य निर्धारित करेगा। दिनांक 24 अक्टूबर 2024 को छात्र-छात्राओं के वोटर कार्ड बनाने एवं मतदाता सूची में नाम शामिल कराने के लिए एक दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें 18 वर्ष या उससे अधिक आयु वर्ग के लगभग 50 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में प्राचार्य ने छात्र-छात्राओं को अनिवार्य रूप से वोटर कार्ड बनवाने हेतु दिशा-निर्देश दिए। महाविद्यालय में कार्यक्रम संयोजक एवं स्वीप के नोडल अधिकारी डॉ० प्रकाश चन्द्र फोंदणी ने कार्यक्रम का संचालन करते हुए वोटर कार्ड की उपयोगिता एवं महत्व पर विस्तार से जानकारी दी। राजस्व निरीक्षक कंडारस्यूं, श्री उत्तम सिंह नेगी जी ने छात्र-छात्राओं को फॉर्म-6 वितरित करते हुए बताया कि 18 वर्ष से अधिक या 01/01/2025 तक 18 वर्ष पूर्ण करने वाले छात्र-छात्राओं को अपने निर्वाचन क्षेत्र की मतदाता नामावली में अनिवार्य रूप से नाम सम्मिलित कराना है, जिसके लिए उन्होंने संबंधित बीएलओ से भी संपर्क किया है। बीएलओ श्री विनोद सिंह गुसाई जी ने छात्र-छात्राओं को फॉर्म भरने की विधि एवं इसके साथ संलग्न होने वाले आवश्यक दस्तावेजों के बारे में जानकारी दी तथा बताया कि फॉर्म भरकर संबंधित बीएलओ के पास जमा करना है। इस तरह के मतदाता जागरूकता शिविर महाविद्यालय में हर साल आयोजित किये जाते है।

7. अभिभावक-शिक्षक संघ (पी0टी0ए0)

संयोजक- डॉ0 कुमार गौरव जैन

राजकीय व्यावसायिक कॉलेज बनास पैठाणी, पौड़ी-गढ़वाल में अभिभावक-शिक्षक एसोसिएशन (पी.टी.ए.) का गठन किए जाने हेतु सत्र 2024-25 में महाविद्यालय के प्राचार्य एवं संरक्षक प्रो. विजय कुमार अग्रवाल द्वारा दिनांक 05-02-2025 को महाविद्यालय के वरिष्ठ प्राध्यापक डॉ. कुमार गौरव जैन (असिस्टेंट प्रोफेसर, रसायन विज्ञान) एवं डॉ. कल्पना रावत (असिस्टेंट प्रोफेसर, बी.बी.ए.) को क्रमशः सचिव एवं सह-सचिव पद पर नामित करते हुए महाविद्यालय में पी.टी.ए. का गठन यथाशीघ्र करने एवं समय-समय पर पी.टी.ए. कार्यकारिणी द्वारा बैठक का आयोजन सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। इसी क्रम में दिनांक 13-02-2025 को महाविद्यालय में एक आमसभा का आयोजन किया गया, जिसमें महाविद्यालय में अध्ययनरत समस्त छात्र-छात्राओं एवं उनके अभिभावकों को आमंत्रित किया गया तथा पी.टी.ए. कार्यकारिणी गठन की प्रक्रिया सफलतापूर्वक संपन्न की गई। दिनांक 13 नवंबर 2025 को अभिभावक-शिक्षक संघ की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई, जिसमें प्राचार्य प्रो. (डॉ.) विजय कुमार अग्रवाल के मार्गदर्शन में एवं प्रभारी प्राचार्य डॉ. कुमार गौरव जैन की गरिमामय उपस्थिति में अभिभावक-शिक्षक संघ (पी.टी.ए.) का सफलतापूर्वक पुनर्गठन किया गया। जिसमें अध्यक्ष श्री अमर सिंह नेगी, उपाध्यक्ष श्री सुनील डौंडियाल, कोषाध्यक्ष श्री गणेश चन्द्र, सचिव डॉ० कुमार गौरव जैन, सह सचिव डॉ० कल्पना रावत छात्रा सदस्य तनीषा गोदियाल एवं अंजली भट्ट है।

8. नमामि गंगे समिति

संयोजक- डॉ0 खिलाप सिह

दिनांक 3 मार्च 2025 को राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल में प्राचार्य प्रो. (डॉ.) विजय कुमार अग्रवाल के मार्गदर्शन एवं प्रभारी प्राचार्य डॉ. दिनेश रावत और कार्यक्रम संयोजक डॉ. खिलाप सिंह की उपस्थिति में नमामि गंगे इकाई द्वारा छात्र-छात्राओं के साथ स्लोगन प्रतियोगिताएँ एवं स्वच्छता कार्यक्रम आयोजित किए गए। प्रभारी प्राचार्य डॉ. दिनेश रावत ने छात्र-छात्राओं को इस तरह के महत्वपूर्ण कार्यक्रमों में प्रतिभाग करने के लिए प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. खिलाप सिंह ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों को गंगा स्वच्छता की शपथ दिलाई तथा कार्यक्रम की विस्तृत जानकारी दी। स्लोगन प्रतियोगिता में लगभग 25 छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया, जिसमें अच्छा प्रदर्शन करने वालों को निर्णायक समिति के मूल्यांकन के पश्चात पुरस्कृत किया जाएगा। इसके बाद छात्र-छात्राओं ने महाविद्यालय प्रांगण, प्रशासनिक भवन, एकेडमिक ब्लॉक, लेबोरेटरी ब्लॉक आदि की साफ-सफाई की। कार्यक्रम में महाविद्यालय के सम्मानित प्राध्यापक डॉ. कल्पना रावत, डॉ. पुनीत चंद्र वर्मा, डॉ. सतवीर, डॉ. उर्वशी, डॉ. प्रकाश फोंदणी एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारियों के साथ-साथ छात्र-छात्राओं ने प्रतिभाग किया। दिनांक 5 जून 2025, दिन बृहस्पतिवार को राहु इंद्रेश्वर मंदिर में नयार नदी के संगम पर सायंकालीन समय में गंगा दशहरा पर्व के तहत गंगा आरती का आयोजन किया गया। इस अवसर पर नमामि गंगे के नोडल अधिकारी डॉ. खिलाप सिंह ने सभी का स्वागत करते हुए गंगा दशहरा की हार्दिक शुभकामनाएँ दीं और कहा कि गंगा दशहरा वह पावन दिन है जब माँ गंगा पृथ्वी पर अवतरित हुई।

नमामि गंगे इकाई द्वारा सूचना, शिक्षा एवं संचार कार्यक्रम के तहत 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य पर स्थानीय राहु इंद्रेश्वर मंदिर परिसर में नयार नदी के संगम पर योग शिविर एवं पौराणिक वेद-पुराणों, गंगा की सभ्यता एवं संस्कृति पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। नमामि गंगे के नोडल अधिकारी डॉ. खिलाप सिंह ने सभी को 11वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ देते हुए कहा कि "एक पृथ्वी, एक स्वास्थ्य" की थीम पर इस वर्ष अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जा रहा है।

9. मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा छात्रवृत्ति प्रोत्साहन योजना

संयोजक-डॉ0 खिलाप सिह

इस महाविद्यालय में मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना सत्रः 2023-24 से शुरू की गई है। उक्त योजना के अन्तर्गत महाविद्यालय के विभिन्न संकायों के मेधावी छात्र-छात्राओं को इस योजना के अन्तर्गत चयनित किया गया है जिसमें प्रथम श्रेणी को ₹ 3000 प्रतिमाह, द्वितीय श्रेणी को ₹ 2000 प्रतिमाह तथा तृतीय श्रेणी को ₹ 1,500 प्रतिमाह छात्रवृत्ति दी गई। इस योजना के अन्तर्गत सत्रः 2023-24 में दो छात्र-छात्राओं तथा सत्रः 2024-25 में कुल 09 एवं सत्र 2025-26 में 10 छात्र-छात्राएं लाभान्वित हुए।

10. राष्ट्रीय सेवा योजना समिति

संयोजक- डॉ0 उर्वशी

इस नवस्थापित महाविद्यालय में सत्र : 2025-26 से राष्ट्रीय सेवा योजना के अन्तर्गत 100 छात्र-छात्राओं की एक इकाई तथा 50 छात्र-छात्राओं के विशेष शिविर के लिए स्वीकृति प्राप्त हुई है।वर्तमान में छात्र-छात्राओं से आवेदन मांगे हुए हैं जिसमें प्रवेश एवं विभिन्न क्रिया-कलाप सत्र : 2026-27 से शुरू होंगे।

11. महिला उत्पीडन निवारण समिति

संयोजक- डॉ0 कल्पना रावत

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी में महिला उत्पीडन निवारण समिति द्वारा महिलाओं एवं छात्राओं से संबंधित प्रकरणों के समाधान का प्रयास किया जाता है। समिति द्वारा समय-समय पर बैठक की जाती हैं। यदि महाविद्यालय में छात्राओं/प्राध्याापिकाओं एवं कर्मचारी महिलाओं के साथ कोई अभद्रता, दुर्व्यवहार सामने आता है तो उनके समाधान के अतिशीघ्र प्रयास किये जाते हैं। इस समिति के तहत, सदस्यों एवं संयोजक के द्वारा कक्षाओं में जाकर छात्राओं से विचार विमर्श किया जाता है। यद्यपि आज तक समिति के समक्ष महिला उत्पीडन का कोई मामला संज्ञान में नहीं आया है।

12. क्रीडा समिति

संयोजक- डॉ0 सतवीर

दिनांक 6 मार्च 2025 को नवसृजित महाविद्यालय के द्वितीय वार्षिक क्रीड़ा समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि डॉ. मनवर सिंह रावत, चिकित्सक एवं जनप्रतिनिधि, ने महाविद्यालय की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश का यह पहला व्यावसायिक महाविद्यालय है, जिसमें शैक्षणिक कार्यों के साथ-साथ खेलकूद प्रतियोगिताओं को भी बढ़ावा देने से हमारे छात्र-छात्राओं का सर्वांगीण विकास हो रहा है। विशिष्ट अतिथि श्रीमती शशि अग्रवाल ने सभी प्रतियोगी छात्रों को शुभकामनाएं प्रेषित कीं। प्राचार्य प्रो. (डॉ.) विजय कुमार अग्रवाल ने छात्र-छात्राओं को खेल-कूद प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक संख्या में प्रतिभाग करने का आह्वान किया तथा कहा कि खेल केवल जीत-हार के लिए नहीं, बल्कि खेलों से छात्र-छात्राओं में शारीरिक, मानसिक एवं बौद्धिक क्षमताओं का विकास होता है। कार्यक्रम संयोजक डॉ. सतवीर ने 6 एवं 7 मार्च 2025 को होने वाले दो दिवसीय खेल-कूद कार्यक्रमों की विस्तृत रूपरेखा सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों के मध्य रखी तथा छात्र-छात्राओं को खेलने के लिए प्रोत्साहित किया। छात्र-छात्राओं ने विभिन्न खेल-कूद प्रतियोगिताओं में प्रतिभाग किया, जिनमें 100 मीटर दौड़, गोला फेंक, बैडमिंटन, कैरम एवं शतरंज आदि प्रमुख थे। इस वार्षिक क्रीड़ा महोत्सव के शुभ अवसर पर सभी छात्र-छात्राएं उपस्थित रहे। कार्यक्रम के द्वितीय दिवस, 7 मार्च 2025 को अन्य खेल-कूद प्रतियोगिताएं आयोजित की जाएंगी तथा विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम, द्वितीय, तृतीय एवं चतुर्थ स्थान प्राप्त करने वाले छात्र-छात्राओं को प्रमाणपत्र एवं मोमेंटो प्रदान कर प्राचार्य महोदय द्वारा सम्मानित किया ।

13. मुख्यमंत्री-विद्यार्थी शैक्षिक भ्रमण भारत दर्शन योजना समिति

संयोजक
डॉ0 प्रकाश चन्द्र फोन्दणी

दिनांक 16 मार्च 2025 को राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल से प्राचार्य प्रो. (डॉ.) विजय कुमार अग्रवाल के मार्गदर्शन में पाँच सदस्यीय मेधावी छात्रों का दल नोडल अधिकारी डॉ. प्रकाश फोंदणी के साथ भारत दर्शन कार्यक्रम के लिए देहरादून रवाना हो गया है। विज्ञान वर्ग के चयनित छात्रों में दिव्या रतूड़ी, साक्षी नेगी, ऋषभ भंडारी, अंजली भट्ट एवं रजनीश भट्ट अन्य महाविद्यालयों के छात्र-छात्राओं के साथ 17 से 20 मार्च 2025 तक देहरादून, दिल्ली एवं चंडीगढ़ के प्रमुख संस्थानों का भ्रमण करेंगे, जिनमें से कई छात्र पहली बार इन शहरों को देखेंगे। प्राचार्य महोदय ने इस तरह के कार्यक्रमों को छात्रों के सर्वांगीण विकास के लिए महत्वपूर्ण बताया तथा सभी छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं दीं। उच्च शिक्षा विभाग की स्टेट नोडल अधिकारी प्रो. ममता नैथानी, भ्रमण कार्यक्रम की नोडल अधिकारी डॉ. कविता काला एवं डॉ. दिवाकर बेबनी, तथा महाविद्यालय के नोडल अधिकारी एवं मीडिया प्रभारी डॉ. प्रकाश फोंदणी ने सभी मेधावी छात्रों को शुभकामनाएं देते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। उच्च शिक्षा विभाग की इस पहल के लिए क्षेत्र के लोगों ने स्थानीय विधायक एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत जी का आभार व्यक्त किया।

14. मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा शोध प्रोत्साहन योजना

संयोजक - डॉ0 दिनेश रावत

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल को एक और उपलब्धि हासिल हुई है। यह अत्यंत गर्व का क्षण है कि प्रबंधन विभाग के सहायक प्राध्यापक डॉ. दिनेश रावत की शोध परियोजना को मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा शोध प्रोत्साहन योजना 2024-25 के अंतर्गत स्वीकृति प्रदान की गई है। यह योजना उत्तराखंड शासन एवं उच्च शिक्षा विभाग द्वारा प्रायोजित है। डॉ. रावत की यह परियोजना गढ़वाल क्षेत्र के पर्वतीय क्षेत्रों में उद्यमिता को बढ़ावा देने पर केंद्रित होगी। इस पहल से न केवल स्थानीय समुदाय को लाभ मिलेगा, बल्कि पर्वतीय अंचल में निवास करने वाले ग्रामीणों, किसानों, मजदूरों, उद्यमियों आदि की अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिलेगी। इस परियोजना के अंतर्गत महाविद्यालय में अध्ययनरत मेधावी छात्रों को शोध सहायक के रूप में कार्य करने का सुनहरा अवसर प्राप्त होगा, जिससे उन्हें व्यवहारिक शोध अनुभव, शैक्षणिक एवं पेशेवर कौशल में उल्लेखनीय वृद्धि के साथ-साथ आर्थिक सहायता भी मिलेगी। परियोजना के अंतर्गत तैयार की गई शोध सामग्री महाविद्यालय के दीर्घकालिक एवं सतत विकास में मील का पत्थर साबित होगी, जो भविष्य में शोधकर्ताओं के लिए प्रेरणा स्रोत के साथ-साथ एक मजबूत आधार भी तैयार करेगी। यह शोध परियोजना उत्तराखंड के दूरस्थ अंचल में स्थित प्रदेश के पहले राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास, पैठाणी में बढ़ती शोध संस्कृति एवं शैक्षणिक उत्कृष्टता का ठोस प्रमाण है। इससे न केवल महाविद्यालय को अकादमिक क्षेत्र में नई पहचान मिलेगी, बल्कि भविष्य में नीति निर्माण एवं क्षेत्रीय विकास योजनाओं में भी महत्वपूर्ण योगदान मिलेगा। डॉ. दिनेश रावत की यह उपलब्धि उनके समर्पण, विशेषज्ञता एवं शिक्षा के प्रति प्रतिबद्धता का परिचायक है। महाविद्यालय के मीडिया प्रभारी डॉ. प्रकाश फोंदणी ने बताया कि इस उपलब्धि के लिए स्थानीय विधायक एवं उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत, सचिव डॉ. रंजीत सिन्हा, निदेशक प्रो. अंजू अग्रवाल, संयुक्त निदेशक प्रो. ए. एस. उनियाल, महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. विजय कुमार अग्रवाल, सम्मानित प्राध्यापकों, कर्मचारियों, स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं छात्र-छात्राओं ने हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं दीं।

15. एंटी रैगिंग नोडल अधिकारी का संदेश

संयोजक - डॉ. खिलाप सिंह

प्रिय छात्र-छात्राओं, आदरणीय प्राध्यापकगण एवं अभिभावकगण,

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि हमारे महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की रचनात्मक प्रतिभा का दर्पण है, बल्कि हमारे संस्थान के मूल्यों, संस्कारों और उपलब्धियों का भी परिचायक है। एक शैक्षणिक संस्थान का उद्देश्य केवल ज्ञान प्रदान करना ही नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु सुरक्षित, सम्मानजनक और सकारात्मक वातावरण का निर्माण करना भी है। इसी उद्देश्य से महाविद्यालय में एंटी रैगिंग समिति सक्रिय रूप से कार्यरत है। रैगिंग किसी भी रूप में अस्वीकार्य है यह न केवल कानूनन अपराध है, बल्कि मानवीय संवेदनाओं के विरुद्ध भी है। महाविद्यालय प्रशासन रैगिंग की रोकथाम के लिए प्रतिबद्ध है। किसी भी प्रकार की शिकायत के लिए एंटी रैगिंग हेल्पलाइन-1800-180-5522 एवं शिकायत प्रकोष्ठ सदैव उपलब्ध हैं। सभी विद्यार्थियों से अनुरोध है कि वे निर्भय होकर अपनी बात रखें और रैगिंग मुक्त परिसर के निर्माण में सक्रिय भागीदारी निभाएँ।

16. एंटी ड्रग नोडल अधिकारी का संदेश

संयोजक - डॉ. खिलाप सिंह

प्रिय छात्र-छात्राओं, आदरणीय प्राध्यापकगण एवं अभिभावकगण,

महाविद्यालय की वार्षिक पत्रिका के प्रकाशन के इस शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। यह पत्रिका हमारे विद्यार्थियों की सृजनात्मकता, परिश्रम और उपलब्धियों का सुंदर प्रतिबिंब है। एक शिक्षण संस्थान का दायित्व केवल शैक्षणिक उत्कृष्टता तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों के नैतिक, मानसिक एवं शारीरिक स्वास्थ्य की सुरक्षा भी उतनी ही महत्वपूर्ण है। आज के समय में नशीले पदार्थों का बढ़ता प्रचलन युवाओं के भविष्य के लिए गंभीर चुनौती बनता जा रहा है। नशा न केवल व्यक्ति के स्वास्थ्य को हानि पहुँचाता है, बल्कि उसके परिवार, समाज और राष्ट्र की प्रगति को भी प्रभावित करता है। यदि किसी विद्यार्थी को किसी भी प्रकार की सहायता या परामर्श की आवश्यकता हो. तो वह निःसंकोच एंटी ड्रग प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकता/सकती है। हमारी प्राथमिकता एक सुरक्षित, स्वस्थ और प्रेरणादायक परिसर का निर्माण है। आइए, हम सब मिलकर नशामुक्त महाविद्यालय और सशक्त भविष्य के निर्माण का संकल्प लें। आप सभी के उज्ज्वल एवं स्वस्थ भविष्य की कामना के साथ।

नेशनल हेल्पलाइन नम्बर - 1933

17. छात्रसंघ निर्वाचन समिति

संयोजक - डॉ0 कुमार गौरव जैन

दिनांक 26 सितंबर 2025 को प्राचार्य प्रो.(डॉ० विजय कुमार अग्रवाल) की अध्यक्षता में छात्रसंघ निर्वाचन समिति द्वारा मनोनीत माध्यम से छात्रसंघ परिषद का गठन किया गया है। ज्ञातव्य है कि श्री देवसुमन उत्तराखंड विश्वविद्यालय, बादशाहीथौल से प्राप्त दिशा-निर्देशों के क्रम में महाविद्यालय ने छात्रसंघ चुनाव 2025-26 की अधिसूचना दिनांक 20 सितंबर 2025 को जारी की थी, जिसमें किसी भी छात्र-छात्रा द्वारा तय समय तक रिक्त पदों हेतु कोई भी नामांकन नहीं किया गया। इसके फलस्वरूप महाविद्यालय के छात्रसंघ निर्वाचन अधिकारी डॉ. कुमार गौरव जैन ने समिति के सहयोग से एवं प्राचार्य के मार्गदर्शन में दिनांक 24 सितंबर 2025 को छात्र-छात्राओं के साथ बैठक कर यह निर्णय लिया कि महाविद्यालय के मेधावी छात्र-छात्राएं, जिनके नाम मेरिट सूची में हैं, जो सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं, क्रीड़ा प्रतियोगिताओं तथा विभिन्न कार्यक्रमों में विशेष सहयोग देते हैं एवं जिनका पूर्ववर्ती किसी भी कक्षा में कोई बैकलॉग नहीं है, वही मनोनीत छात्रसंघ परिषद के सदस्य होंगे। इस क्रम में महाविद्यालय की छात्रसंघ निर्वाचन समिति द्वारा दिनांक 26 सितंबर 2025 को रिक्त पदों पर निम्न पदाधिकारियों को मनोनीत किया गया है, जिनमें छात्रसंघ अध्यक्ष सूरज रावत, उपाध्यक्ष अंजली भट्ट, सचिव तनिषा गोदियाल, सह-सचिव संजना कंडारी, कोषाध्यक्ष नैना ममगांई, विश्वविद्यालय प्रतिनिधि देवेंद्र रावत तथा मनोनीत सदस्यों में आरती, सानिया, सागर सिंह, महावीर नेगी, अंकित सिंह एवं सुमित सिंह कंडारी के नाम प्रमुख हैं। इन मनोनीत पदाधिकारियों को प्राचार्य महोदय द्वारा दिनांक 27 सितंबर 2025 को शपथ दिलाई जाएगी।

18. ई-ग्रंथालय

संयोजक - डॉ0 उर्वशी

ई- ग्रंथालय एक डिजिटल प्लेटफॉर्म है और पारंपरिक पुस्तकालयों को ई-पुस्तकालयो में बदलने के लिए बहुत उपयोगी है। महाविद्यालय में यह प्लेटफार्म डिजिटल रूप में ई-पुस्तको और अन्य दस्तावेजों को अपलोड करने की सुविधा भी प्रदान करता है और इस प्रकार विभिन्न संकाय के प्राध्यापकों, शोधकर्ताओं और छात्रों के लिए उपयोगी सामग्री के डिजिटल भंडार के निर्माण में मदद करता है। इस डिजिटल प्लेटफार्म का उपयोग करते हुए, पंजीकृत छात्र-छात्राएं अन्य पुस्तकालयों से भी संसाधनो का उपयोग कर सकते हैं। ई-ग्रंथालय का महाविद्यालय में सुचारू रूप से प्रयोग किया जा रहा है। वर्तमान समय में महाविद्यालय में 3973 पुस्तकें उपलब्ध हैं।

19. Cultural Committee

संयोजक- डॉ0 कल्पना रावत

The Cultural Committee of the college is responsible for promoting the artistic, literary, and cultural talents of students while fostering a sense of community and inclusiveness. Its duties include planning, organizing, and supervising various cultural events and activities within the college. The committee takes the lead in arranging the annual function, which features student performances, competitions, and exhibitions, providing a platform to showcase creativity. It also ensures the observance of important national days and celebrations in India, such as Independence Day and Republic Day, to help students connect with the nation's heritage. Beyond these, the committee organizes workshops, talent contests, debates, music and dance programs, and intercollegiate cultural events, all aimed at encouraging participation, developing leadership skills, and nurturing a vibrant cultural atmosphere on campus.

20. परीक्षा समिति

संयोजक - डॉ0 कुमार गौरव जैन
सह-संयोजक - डॉ० दिनेश रावत

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल में सत्र 2021-22 से विज्ञान संकाय एवं 2024-25 से व्यावसायिक संकाय के पाठ्यक्रम कोर्स संचालित हो रहे हैं। विगत वर्ष लगभग 102 छात्र-छात्राएं श्रीदेव सुमन विश्वविद्यालय द्वारा संचालित परीक्षाओं में सम्मिलित हुऐं हैं। प्रत्येक वर्ष औसतन 40 प्रतिशत छात्र/छात्राएं प्रथम श्रेणी में परीक्षा उत्तीर्ण करते हैं। जबकि प्रतिवर्ष महाविद्यालय का औसतन परीक्षाफल 90 प्रतिशत से अधिक रहता है।

महाविद्यालय में महत्वपूर्ण बैठकें

महाविद्यालय में तहसील दिवस आयोजित किया गया

दिनांक 6 जनवरी 2026 को तहसील दिवस के शुभ अवसर पर राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल की जिलाधिकारी स्वाति एस. भदौरिया ने सभी विभागों, प्रयोगशालाओं, पुस्तकालय, छात्रावास, स्मार्ट क्लास, कार्यालय एवं ऑफिस रिकॉर्ड आदि का गहन निरीक्षण किया। जिलाधिकारी ने स्नातक के विभिन्न विषयों की प्रवेश प्रक्रिया का बारीकी से परीक्षण किया तथा कहा कि प्रवेश से कोई भी छात्र वंचित नहीं होना चाहिए, इसके लिए महाविद्यालय स्तर से हर संभव प्रयास किए जाने चाहिए। महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. (डॉ.) विजय कुमार के मार्गदर्शन में प्रभारी प्राचार्य डॉ. कुमार गौरव जैन ने डीएम महोदया का स्वागत करते हुए महाविद्यालय की विभिन्न समस्याओं से अवगत कराया एवं समाधान में सहयोग की अपील की। डीएम ने महाविद्यालय के कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि प्रदेश के अति दुर्गम क्षेत्र में नव-स्थापित यह महाविद्यालय व्यावसायिक एवं विज्ञान शिक्षा के लिए न्यूक्लियर सेंटर के रूप में स्थापित हो सकता है। इस अवसर पर एसडीएम दीक्षिता जोशी, एसडीओ फॉरेस्ट ईशा बिष्ट, उपस्थित रहे। कार्यक्रम में लगभग 200 स्थानीय जनसमुदाय के लोग एवं जनप्रतिनिधियों में जिला पंचायत सदस्य राधा कृष्ण नोडियाल, मंडल अध्यक्ष विजय रौथाण आदि ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का संचालन महाविद्यालय के प्राध्यापक एवं मीडिया प्रभारी डॉ. प्रकाश फोंदणी ने किया।

महाविद्यालय में उच्च शिक्षा परिषद की 11वीं बैठक आयोजित की गयी

दिनांक 21 नवंबर 2024 को राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल में माननीय उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत जी के मार्गदर्शन में उच्च शिक्षा परिषद की 11वीं बैठक संपन्न हुई। यह उच्च शिक्षा परिषद की पहली बैठक है जो राज्य के दुर्गम क्षेत्र पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल में आयोजित की गई। उक्त बैठक में उच्च शिक्षा से संबंधित लगभग 23 मुख्य बिंदुओं पर गहनता से विचार-विमर्श किया गया, जिनके यथाशीघ्र क्रियान्वयन हेतु मंत्री जी ने आदेशित किया। इस कार्यक्रम में उच्च शिक्षा परिषद समिति के कुल 18 सदस्यों ने प्रतिभाग किया, जिनमें प्रो. सुनील बत्रा, डॉ. डी. एस. बिष्ट, प्रो. सी. एम. एस. रावत, डॉ. बी. के., श्री गिरीश चंद्र, श्री पी. एम. नौटियाल, श्री ब्योमकेश दुबे, डॉ. वी. एन. काला, डॉ. देवेंद्र भसीन, प्रो. ओंकार सिंह, डॉ. के. एस. बिष्ट, प्रो. पी. डोबरियाल आदि के साथ-साथ प्रमुख विभागों के सचिव, उच्च शिक्षा सलाहकार प्रो. एम. एस. रावत, प्रो. के. डी. पुरोहित, निदेशक प्रो. अंजू अग्रवाल, संयुक्त निदेशक प्रो. ए. एस. उनियाल, कई विश्वविद्यालयों के कुलपति, रजिस्ट्रार एवं अन्य महाविद्यालयों के प्राचार्य, जिनमें प्रो. डी. एस. नेगी आदि शामिल थे, उपस्थित रहे। साथ ही स्थानीय जनप्रतिनिधि मंडल अध्यक्ष अमर सिंह नेगी जी, डॉ. मनवर सिंह रावत, मातवर सिंह रावत जी, राकेश नेगी जी आदि भी कार्यक्रम में उपस्थित थे।

छात्र-छात्राओं के लिए महत्वपूर्ण संदेश

विद्यार्थी कल्याण एवं उत्थान हेतु उच्च शिक्षा विभाग-उत्तराखंड सरकार की प्रभावी योजनाएं

उच्च शिक्षा विभाग द्वारा संचालित

विभिन्न अकादमिक, शोध, नवोन्मेषी एवं स्वरोजगारपरक योजनाऐं

1: छात्र - छात्राओं हेतु छात्रवृत्ति योजनायें

1. मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना ।
2. मुख्यमंत्री मेधावी छात्र पुरस्कार योजना । (वि.वि. स्तर पर सर्वोच्च अंक अर्जित करने पर)
3. मुख्यमंत्री मेधावी छात्र पुरस्कार योजना । (एन.आई.आर.एफ. रैंकिंग के शीर्ष 50 वि.वि. /संस्थान)
4. मुख्यमंत्री शेतिनिग उच्च शिक्षा छात्रवृत्तिया - यू.के. टू यू.के. योजना ।
5. मुख्यमंत्री विद्यार्थी शैक्षिक भारत दर्शन योजना।
6. शोध डिग्री हेतु पंजीकृत शोधार्थीयों को छात्रवृत्ति योजना ।

2: छात्र-छात्राओं हेतु प्रतियोगी परीक्षा तैयारी योजनायें

1. राज्य के मेधावी छात्रों को प्रतियोगी परीक्षाओं की मुख्य परीक्षा की कोचिंग हेतु विशेष आर्थिक सहायता योजना।
2. एन.डी.ए./ आई.एम.ए./ ओ.टी.ए./ आई.एन.ए./आई.ए.एफ. में चयनित अभ्यर्थियों को पुरस्कार योजना।
3. अनुसूचित जाति उपयोजना अन्तर्गत प्रतियोगिता परीक्षाओं के लिए प्रशिक्षण योजना।

3: छात्र - छात्राओं हेतु स्वरोजगार स्वालम्बन योजनायें

1. देवभूमि उद्यमिता योजना (ई0डी0आई0आई0 अहमदाबाद से एम.ओ.यू.)
2. प्रोजेक्ट गौरव (नेशनल स्टॉक एक्सचेन्ज मुम्बई से एम.ओ.यू.)

4: उच्च शिक्षा मे डिजिटल पहल

1. डिजिटल इनिशिएटिव एवं सुधारात्मक प्रयास - समर्थ पोर्टल से एम.ओ.यू.)
2. ई0 ग्रंथालय
3. एस0 आई0 आर0 एफ0 (ISRF)
4. प्रोजेक्ट मैनेजमेंट यूनिट (PMU)
5. सी0 एम0 डैशबोर्ड यूनिट (CMDU)
6. उत्तराखण्ड आई0सी0टी0 सैल (UICTC)

डॉ. रंजीत कुमार सिन्हा
सचिव - उच्च शिक्षा/तकनीकी शिक्षा

डॉ. कमल. के. पांडे
निदेशक - उच्च शिक्षा उत्तराखंड

5: उच्च शिक्षा मे प्रशिक्षण एवं जागरूकता योजनायें

1. डिजिटल स्किल प्रशिक्षण योजना (इन्फोसिस स्प्रिंगबोर्ड बैंगलोर से एम.ओ.यू.)
2. विज्ञान वर्ग प्रशिक्षण योजना (आई0आई0एस0सी0 बैंगलोर से एम.ओ.यू.)
3. साथी केंद्र योजना (आई0आई0टी0 कानपुर से एम.ओ.यू.)
4. कल्पना शी फॉर स्टेम योजना (विज्ञानशाला रोहणी, नई दिल्ली से एम.ओ.यू.)
5. कला, भारतीय संस्कृति की शिक्षा का अवसर रूटस टू रूटस (रूटस टू रूटस गौतमबुद्धनगर नौएडा सेएम.ओ.यू.)
6. नशा मुक्ति जागरूकता योजना (प्रजापिता ब्रह्म कुमारीज ईश्वरीय विश्वविद्यालय माउंट आबू से एम.ओ.यू.)
7. वर्चुअल लैब (अमृता विश्व विद्यापीठम केरल से एम.ओ.यू.)
8. कौशल विकास पाठ्यक्रमों का संचालन (एडूनेट फाउंडेशन बैंगलोर से (एम.ओ.यू.)
9. सॉफ्ट स्किल पाठ्यक्रमों का प्रशिक्षण (महिंद्रा प्राइड/नान्दी फाउंडेशन हैदराबाद से एम.ओ.यू.)
10. डिजिटल एवं फ्यूचर स्किल प्रशिक्षण (नैसकोम, सैक्टर-126 नौएडा के त्रिपक्षीय से एम.ओ.यू.)
11. लाइफ स्किल कोर्स प्रशिक्षण (वाधवानी ग्रुप स्किल डेवलपमेंट नेटवर्क बैंगलोर के त्रिपक्षीय एम.ओ.यू.)
12. स्किल डेवलपमेंट एवं रोजगार (टाटा ग्रुप मुम्बई के त्रिपक्षीय से एम.ओ.यू.)

6: वि.वि. तथा महाविद्यालय प्राध्यापकों के अकादमिक उन्नयन हेतु

1. मुख्यमंत्री उत्कृष्ट शोध पत्र प्रकाशन प्रोत्साहन योजना।
2. मुख्यमंत्री उच्च शिक्षा शोध प्रोत्साहन योजना।
3. उच्च शिक्षा गुणवत्ता उन्नयन एवं ज्ञान वर्धन प्रशिक्षण योजना।
4. भक्त दर्शन उच्च शिक्षा गौरव पुरस्कार योजना।

7: वि. वि. तथा महाविद्यालय मे आधारभूत संरचना

1. नैक ग्रेडिंग के आधार पर प्रोत्साहन योजना।
2. प्रयोगशाला, छात्रावासो, परीक्षा भवनो, आई.टी. लैब निर्माण योजना।
3. प्रधानमंत्री उच्चतर शिक्षा अभियान (पी.एम. उषा) योजना।
4. प्रधनमंत्री जनविकास योजना।
5. मुख्यमंत्री नवाचार योजना।

योजनाओं की पूर्ण जानकारी हेतु नोडल अधिकारी (कॉलेज प्रशासन)से संपर्क करें !

CALL US @ 05946298846

www.he.uk.gov.in | उच्चशिक्षा निदेशालय, नवाड़ खेड़ा गोलापार, हल्द्वानी (नैनीताल)उत्तराखंड- 263139

उत्तराखण्ड शासन

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास (पैठाणी) पौडी गढ़वाल, उत्तराखंड

ADMISSION 2026-2027

Professional Courses

Courses	Seats	Eligibility (योग्यता)
• B.B.A.	40 seats	12वीं उत्तीर्ण (किसी भी विषय से)
• B.C.A.	40 seats	12वीं उत्तीर्ण (किसी भी विषय से)
• B.Sc. Computer Science	40 seats	12वीं उत्तीर्ण (विज्ञान विषय से)
• B.Sc. Food Technology	40 seats	12वीं उत्तीर्ण (विज्ञान विषय से)
• B.Sc. Non-Conventional Energy	40 seats	12वीं उत्तीर्ण (विज्ञान विषय से)

Registration Portal Link
ukadmission.samarth.ac.in

College Highlights

- Affordable Fee & Scholarships
- Modern Computer Lab
- Full Faculties & Smart Classrooms
- Dedicated Incubation Cell for Startups
- Fully Equipped Conference Hall
- Well Established Library & Labs.

Traditional Courses – B.Sc.

- Z.B.C. Group – Zoology, Botany, Chemistry 60 seats
- P.C.M. Group – Physics, Chemistry, Mathematics 60 seats

Principal
Prof. (Dr.) Vijay Kumar Agarwal
9634055113

Contact Us for Admission or any Enquiry

- Dr. Dinesh Rawat – 8791609676
- Dr. Puneet Chandra Verma – 9412306530
- Dr. Prakash Phondani - 9411351120

महाविद्यालय की विशेष उपलब्धियां

Faculty Name	Department	Educational Qualification	Total Publications	Seminar/ Meeting attended/ Organized	Events Conducted	Students Supervised PhD/Dissertation /Project	Committees Handled	Projects as PI	Remark
Dr. Kumar Gaurav Jain	Chemistry	M.Sc., Ph.D.	20	05	05	05	12	NIL	NIL
Dr. Dinesh Rawat	BBA	MBA, NET, Ph.D.	30	08	10	03	08	01	मुख्यमंत्री उच्चशिक्षा शोध प्रोत्साहन योजना के तहत ₹ 2,60,000 स्वीकृत
Kalpana Rawat	BBA	MBA, NET	06	05	05	NIL	07	NIL	NIL
Dr. Puneet Chandra Verma	BCA	MCA, Ph.D.	25	05	10	NIL	09	NIL	NIL
Dr. Khilap Singh	Mathematics	M.Sc., B.Ed., NET, JRF, GATE, Ph.D.	27	05	02	02	10	NIL	मुख्यमंत्री उच्चशिक्षा शोधपत्र प्रोत्साहन योजना के तहत पुरस्कार राशि ₹4,200 स्वीकृत
Dr. Satveer	BCA	MCA, Ph.D.	26	05	05	NIL	06	NIL	NIL
Dr. Urvashi	Zoology	M.Sc., Ph.D.	04	03	01	27	07	NIL	NIL
Dr. Alok Singh Kandari	Physics	M.Sc., Ph.D.	05	06	04	05	08	NIL	NIL
Dr. Prakash Chandra Phondani	Botany	M.Sc., B.Ed., Ph.D., JRF, SRF, RA, DST Young Scientist, Qatar PDF	83	25	15	21	10	01	भारत सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग से (DST-SERB) ₹ 27,94,000 स्वीकृत / पूर्ण

महाविद्यालय द्वारा मनोनीत प्रथम छात्र परिषद

(सत्र 2025-26)

सूरज रावत
अध्यक्ष

अंजली भट्ट
उपाध्यक्ष

कु0 तनीषा
सचिव

संजना कण्डारी
सह-सचिव

कु0 नैना
कोषाध्यक्ष

देवेन्द्र
वि0वि0 प्रतिनिधि

कु0 आरती
मनोनीत सदस्य

कु0 सानिया
मनोनीत सदस्य

सागर सिंह
मनोनीत सदस्य

महावीर नेगी
मनोनीत सदस्य

अंकित नेगी
मनोनीत सदस्य

सुमित सिंह कण्डारी
मनोनीत सदस्य

महाविद्यालय परिसर का परिदृश्य

महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न गतिविधियाँ

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय

देवभूमि उद्यमिता योजना
उद्यमिता विकास कार्यक्रम

YOUTH RED CROSS (YRC) UNIT
Principles of Red Cross
1- Humanity
2- Impartiality
3- Neutrality
4- Independence
5- Voluntary Service
6- Unity
7- Universality
Nodal Officer

MY FUTURE IS A BIG
?

।। जय तिरूपति बालाजी।।

अमन गर्ग
केशव गर्ग

श्री सिद्धबली स्वीट्स

पता : नजीबाबाद रोड़ चौराहा, कोटद्वार (गढ़वाल), उत्तराखण्ड

राकेश गर्ग
पूर्व अध्यक्ष, उद्योग व्यापार मण्डल
संरक्षक, श्री वैश्य अग्रवाल सभा, कोटद्वार (उत्तराखण्ड),
मो० 9837070444

प्रो० विनय

सीताराम अग्रवाल

पत्तल, दोने, प्लेट, लकड़ी चम्मच,
गिलास, थैली, थैला, रस्सी,
बान व सभी प्रकार की झाड़ुओं
के थोक विक्रेता।

मो० : 9837345186, 7906949178

पता : माल गोदाम रोड़, कोटद्वार, गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

Buy Pure, Be Sure .....

P.L. Jewellers

GEETANJALI

A Jewellery House

Shine with us

916 Hallmarked Jewellery

Rakesh Aeran
+91-9412112423

Rishi Aeran
+91-9756604150

Rachit Aeran
+91-9728452787

Patel Marg, Kotdwar

M. : 7060445923

Subodh Garg :
+91-9927779444

गर्ग किराना स्टोर

नजीबाबाद रोड़, कोटद्वार (गढ़वाल), उत्तराखण्ड

शुभम गर्ग
+91-9012356662

डिगरोतिया इन्डस्ट्रीज

नजीबाबाद रोड़, कोटद्वार (गढ़वाल), उत्तराखण्ड

Rinkal Garg
+91-9999455770

ANAISHA ELECTRONICS

Haier
VOLTAS
KENT Mineral RO Water Purifiers
SUJATA
IFB www.ifbappliances.com

Deals in : All type of Electronics and Electrical Goods

Near St. Joseph's Convent School,
Shibbu Nagar, Devi Road, Kotdwar-246149
(Pauri Garhwal) Uttarakhnad

LG
DAIKIN
BAJAJ Bajaj Electricals Ltd. Inspiring Trust
Sunflame

Prop. Rajendra Singh Rauthan

Raj Hotel & Restaurant

9927745301
7617646563

Paithani, Pauri Garhwal, Uttarakhand

प्रो० दीपक नेगी

आनन्द फर्नीचर हाऊस

पता : मेन मार्केट पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल (उत्तराखण्ड)

सम्पर्क : 8057049829

हमारे यहाँ सभी प्रकार के माड्यूलर किचन, बैड, सोफा, चौखट, विंडो, दरवाजे, शोकेस, डाइनिंग सेट आदि उचित रेट पर तैयार किये जाते है।

रेड चिली रेस्टोरेंट

मेन मार्केट पैठाणी,
पौड़ी गढ़वाल

Narendra Singh Negi

Negi Bakers

Paithani

7248890800, 9639196989

Naveen Kumar

MAHADEV

printing press & stationers

Near Deepak Nursing Home, Kashirampur, Kotdwar Garhwal

- Shadi Cards
- Visiting Cards
- Posters
- Digital Print
- Designing
- Letterpads
- Flex Printing

Cont. : 7060799236, 9411741464 | Email : mahadevpress1996@gmail.com

अनमोल किचन हाऊस

फर्म – गेंदालाल एंड संस (दुगड्डा वाले)

9412441023, 8979782580

सभी क्राकरी सामान व गिफ्ट आइटम, बर्तन, घरेलू सामान आदि के विक्रेता।

पंजाब नेशनल बैंक के सामने, जिला सहकारी बैंक, बद्रीनाथ मार्ग, कोटद्वार (गढ़वाल), उत्तराखण्ड

Prop.

Satish & Co.

Deals in :
Upasna Mustard Oil, Madhusudan Desi Ghee,
Rice (P.L.A. Foods) Full Range of Rice, Fortune Tin,
Rishta Sharbati Atta Sugar,
Rath Dalda & Broker of Anchal Fresh Atta

9548728334

कच्ची आड़त, नजीबाबाद, कोटद्वार,
पौड़ी गढ़वाल

उत्तराखण्ड सरकार
नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय
MINISTRY OF NEW AND RENEWABLE ENERGY
सौर ऊर्जा लाई,
बिजली के साथ कमाई
पुष्कर सिंह धामी
मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड
नरेन्द्र मोदी
प्रधानमंत्री
पीएम सूर्यघर मुफ्त बिजली योजना के अंतर्गत सब्सिडी में सोलर प्लांट लगवाएं।
योजना की विशेषताएँ
भारत सरकार द्वारा अनुदान -
रु0 85,800/-नियत (3 कि0वा0)
प्रतिमाह 300 यूनिट तक की बिजली मुफ्त
रु0 85,600 तक की सब्सिडी
7% ब्याज पर बैंक लोन की सुविधा
सेवा का लाभ उठाने हेतु सम्पर्क करें-
9837727777, 9758666577, 9837095902
CHETANI TRADERS
ADD.: PATEL MARG, KOTDWAR, PAURI GARHWAL (UTTARAKHAND) 246149
Enjoy Cozy Winters with
HALOGEN ROOM HEATER
LAZER
Monsoon Ka Asli Maza
Enjoy the Pleasure of Smart Cooking
With Imperial Induction Cooktop
V-GUARD
Efficient Pumps, Powerful Motors. The perfect combination.
V GUARD PUMPS & MOTORS
WATER HEATERS
Storage | Gas | Instant
Powerful Performance
AMAZE
Life is Amazing
signature
AIR COOLERS
Auth. Dealer & Distributor
AMAZE POWER
LAZER
V-GUARD
signature
Fans · Lights · Appliances
LUMINOUS
Inverter · UPS · Battery
EXIDE

BATHSENSE asianpaints

Dealer

Shree Jee Bath Arcade

Deals in
Sanitary, Hardware

Vinod Garg
Manu Garg

Near Shree Jee Automobiles
Devi Road, Kotdwar

shreejeebatharcade@gmail.com

7300874092

संस्था का रजि० नं० : 331/Date 28.02.2018

ठाकुर सुन्दर सिंह चौहान

वृद्ध आश्रम

ग्राम-मलेठी, पट्टी-मौन्दाडस्यूं, तहसील-सतपुली, जिला-पौड़ी गढ़वाल

Cont. : 7906982608, 9412971273, 7906982608 | Email : sschauhantrust2018@gmail.com

श्री जितेन्द्र सिंह चौहान (अध्यक्ष नगर पंचायत, सतपुली), मो० - 9528330742

जिन्दगी का आखरी पड़ाव
भौतिक, आन्तरिक एवं
प्राकृतिक सुखों
के साथ गुजारें।

Prop. Satendra Rawat

Chandra Hardware & General Store

7351264256, 9719528884

Paithani, Pauri Garhwal, Uttarakhand -246123

Prop. Kuldeep Agarwal **Prop. Ayush Agarwal**

Kedar Construction

Govind Nagar, Kotdwar - 246149

Govt. Contractor,
Tiles Manufacturer
and
General Order Supplier

7300969373, 8445881456

अतुल मेडिकोज

एलोपेथिक, आयुर्वेदिक, सर्जिकल दवाईयां उपलब्ध है।

सभी प्रकार के ब्लड टेस्ट उपलब्ध है ।
घर से ब्लड सैम्पल लेने के लिए सम्पर्क करें।

Umanand Bartwal Marg, Kotdwar

Neeraj Gupta

सिद्धबली कम्प्यूटर्स एंड एडवरटाईजिंग

- Flex Printing
- Visiting Card
- Marriage Card
- All Multimedia Work

9412110255, 8410261313

Nagar Palika Complex, Opp. PNB Badrinath Marg, Kotdwar (UK)

sidhbali.computer@gmail.com

SIDHBALI TRADERS

DEALER : SEL TIGER TMT BARS, HIMGIRI TANKS

Suppliers of

BRICKS, CEMENT, STEEL, SANITARY, PAINTS, GABION BOX ETC.

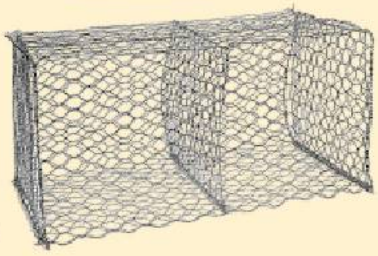

Mob. : 8433077840 | EMAIL : sidhbali.traders@gmail.com

GIWAI SROAT, BADRINATH MARG, KOTDWAR U.K. (246149)

Vijay Kumar Garg

PRABHUDAYAL RAMCHANDRA

DEALER : ULTRATECH CEMENT, INDOSTAR STEEL, ASIAN PAINTS

Deals in

Cement, Bricks, Sand, Grit, MS TMT Bars, GI Wire, Barbed Wire, Wire Crates and Gabion Box

Mob. : 9927991535

Transport Contractors for Govt. Dept. and Trucks also available

GIWAI SROAT, BADRINATH MARG, KOTDWAR U.K. (246149)

BHADULA SCIENTIFIC CENTRE

Authorised Dealer

9897204906,6398439384

bhadula.scientific@gmail.com

Lower Kalabarh Marg, Kotdwar - 246149 (Garhwal) Uttarakhand

Mob. : 8077865388

घनश्याम बुक डिपो

GHANSHYAM BOOK DEPOT

Wholesale & Retail
Stationery Supplier

ghanshyambookdepot123@gmail.com

**Naithani Complex, Opp. Tehsil,
Badrinath Marg, Kotdwar U.K. (246149)**

GSTIN : 05AGGPA4521Q1ZG ESTD : 1983

Prop. Sanjay Kumar Agarwal

HARI RAM

SANJAY TYRE

Cinema Road, Kotdwar, Pauri Garhwal, Uttarakhand

Branch : Devi Road Near Jal Nigam Store Kotdwar

नोट : हमारे यहाँ सभी प्रकार की
गाड़ियों के टायर उचित दर पर उपलब्ध है।

Mob. : 9456303845, 8923386711

apollo TYRES
go the distance™

SADARAM & SONS

SHIV KUMAR GARG
9412081638

SAJAN GARG
9412081398

Najibabad Road,
Kotdwar (Garhwal) UK

मै0 हरिराम एण्ड कम्पनी

TATA TEA

टाटा चाय

चर्च रोड़, कोटद्वार (गढ़वाल), उत्तराखण्ड, मो. 9897740412

आभार

महाविद्यालय में छात्र-छात्राओं के सर्वांगीण विकास हेतु समय-समय पर विधायक निधि, सांसद निधि,जिला प्रशासन के साथ-साथ केन्द्रीय एवं राज्य सरकार द्वारा अवस्थापना विकास हेतु वित्तीय सहायता प्रदान की जा रही है।

विगत वर्ष 2025 में केन्द्र सरकार की योजना पी.एम.उषा फेज-3 के अर्न्तगत 10 करोड़ रू0 की धनराशि महाविद्यालय को स्वीकृत की गयी थी जिसके अन्तर्गत महाविद्यालय में बहुउद्देशीय हॉल, महिला छात्रावास एवं प्राचार्य आवास/अतिथि गृह निर्माण के साथ-साथ स्थायी पेयजल की व्यवस्था, प्रयोगशाला उपकरण एवं किताबों की पूर्ति की गयी है।

माननीय विधायक, सांसद एवं औद्योगिक इकाईयों द्वारा समय-समय पर महाविद्यालय में विभिन्न सुविधाओं के विकास जैसे-पेयजल हेतु वॉटर कूलर, कम्प्यूटर, विभिन्न विषयों की पाठ्य-पुस्तकें, फर्नीचर, स्मार्ट बोर्ड इत्यादि हेतु सहायता प्रदान की जाती रही है।

महाविद्यालय प्रशासन आप सभी के सहयोग हेतु अपना आभार प्रकट करता है।

महाविद्यालय परिवार

प्रकाशकीय वक्तव्य

1. प्रकाशन स्थल	:	श्रीनगर गढ़वाल
2. प्रकाशन आवृत्ति	:	वार्षिक
3. मुद्रक का नाम	:	अत्रिज ऑफसेट प्रेस, श्रीनगर गढ़वाल
4. राष्ट्रीयता	:	भारतीय
5. प्रकाशक का नाम	:	प्रो0 (डॉ0) विजय कुमार अग्रवाल
राष्ट्रीयता	:	भारतीय
पता	:	राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय, बनास पैठाणी, पौड़ी गढ़वाल, उत्तराखण्ड-246123
6. उन व्यक्तियों के नाम व पते जिनका इस पत्रिका पर स्वामित्व है	:	इससे कोई सम्बन्ध नहीं है।
7. उन साझीदारों के नाम और पते जो इसकी सारी पूंजी के एक प्रतिशत से अधिक के हिस्सेदार हैं।	:	इससे कोई सम्बन्ध नहीं है।

मैं प्रो0 (डॉ0) विजय कुमार अग्रवाल घोषणा करता हूँ कि उपर्युक्त विवरण मेरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सत्य है।

प्रो0 (डॉ0) विजय कुमार अग्रवाल
प्राचार्य

मीडिया की नजर में महाविद्यालय

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय पैठाणी में प्राचार्य ने किया डॉ. कुमार गौरव जैन की पुस्तक का विमोचन

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय पैठाणी में उच्च शिक्षा परिषद की 11 वी बैठक आयोजित की गई

शैक्षणिक भ्रमण पर आए स्कूली छात्र-छात्राओं को कैरियर काउंसलिंग की दी जानकारी

भूमि उद्यमिता योजना के अंतर्गत स्वरोजगार में बैंकिंग संस्थाओं की भूमिका विषय पर एक दिवसीय जागरूकता कार्यशाला आयोजित

व्यावसायिक कालेज बनास पैठाणी में पहली छात्र परिषद के पदाधिकारियों को शपथ दिलाते प्राचार्य डा. वीके अग्रवाल • महाविद्यालय प्रशासन

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय में गठित हुई पहली छात्र परिषद

जागरण संवाददाता, पौड़ी: उत्तराखंड के पहले राजकीय व्यावसायिक ... नामांकन के दिन बीते 23 सितंबर को किसी भी छात्र ने नामांकन दाखिल नहीं किया। इसके बाद महाविद्यालय प्रशासन ने छात्र परिषद के गठन का निर्णय लिया। प्रभारी चुनाव अधिकारी डा. कुमार गौरव जैन ने बताया कि महाविद्यालय के पहले छात्र परिषद का गठन कर लिया है। परिषद में अध्यक्ष पद

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय पैठाणी के दो दिवसीय वार्षिक क्रीड़ा समारोह का शुभारंभ

कॉलेज ग्वालखुडा में छात्र-छात्राओं के ... कैरियर काउंसलिंग कार्यक्रम आयोजित

अमर उजाला — कोटद्वार-पौड़ी

इको-टूरिज्म से बेहतर स्वरोजगार के दिए टिप्स

थलीसैंण के राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास पैठाणी में कार्यशाला हुई

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय पैठाणी में नवनिर्मित अभिभावक शिक्षक संघ का गठन

उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत द्वारा बहुउद्देशीय हॉल, सॉफ्ट कम्पोनेन्ट कार्य का भूमि-पूजन एवं रोजगारपरक कार्यक्रमों हेतु किया गया संवाद आयोजित

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय पैठाणी में हुआ "दीक्षारम्भ" कार्यक्रम का आयोजन।

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय पैठाणी को मिला सेंटर ऑफ एक्सीलेंस अवार्ड

... महाविद्यालय पैठाणी के छात्र-छात्राओं का ... विश्वविद्यालय का शैक्षिक भ्रमण

भारत दर्शन को रवाना हुए पैठाणी के पांच छात्र

मुख्यमंत्री-विद्यार्थी शैक्षिक भ्रमण भारत दर्शन योजना के तहत हुआ चयन

नमामि गंगे इकाई द्वारा मांटेसरी स्कूल में विभिन्न प्रतियोगिताएं की गई आयोजित

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय पैठाणी में गुणवत्तायुक्त शोध विषय पर एक दिवसीय कार्यशाला का हुआ आयोजन

डॉ. प्रकाश फोंदणी बने फैकल्टी मेंटर, युवाओं के उद्यमिता विकास को देंगे बढ़ावा

छात्र-छात्राओं ने व्यावसायिक महाविद्यालय पैठाणी का शैक्षणिक भ्रमण किया

पौड़ी-कोटद्वार जागरण

छात्रों ने वनस्पति प्रजातियों के बारे में प्राप्त की जानकारी

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय बनास पैठाणी के वनस्पति विज्ञान के छात्रों ने वन विभाग की नर्सरी का किया भ्रमण

उत्तराखण्ड के प्रसिद्ध चार धाम

केदारनाथ

बद्रीनाथ

गंगोत्री

यमुनोत्री

राजकीय व्यावसायिक महाविद्यालय, बनास, पैठाणी (पौड़ी गढ़वाल), उत्तराखण्ड-246123

www.gpcpaithani.in gpcollege.paithani2021@gmail.com

Photo By Suman

Design & Printed by : Atrij Offset Press, Srinagar Garhwal, M. 9412079049